गदेया

हल्बी की कहावतें, मुहावरे और पहेलियाँ

रूद्र नारायण पाणिग्राही

BVP - 2105
7/6/18

6/6

गदेया

(हल्बी की कहावतें, मुहावरे और पहेलियाँ)

गदेया

हल्बी की कहावतें, मुहावरे
और
पहेलियाँ

रूद्र नारायण पाणिग्राही

यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स
दिल्ली-110032

गदेया...

ISBN : 978-93-84633-91-2

प्रथम संस्करण : 2018

© रूद्र नारायण पाणिग्राही

मूल्य : ₹ 450/-

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक या लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

प्रकाशक : यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स
1/10753 सुभाष पार्क, नवीन शाहदरा
दिल्ली-110032 (भारत)

संपर्क : **+91-9599483885,86,87,88**
ई मेल : **yashpublishersprivatelimited@gmail.com**
बेबसाइट : **www.yashpublications.com**
Avilable at : *amazon.com, flipkart.com*

मुद्रक : नागरी प्रिंटर्स, दिल्ली

तेरा तुझको अर्पण

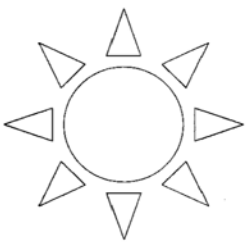

पूज्यनीय पिता
स्व. श्री गणेश प्रसाद पाणिग्राही
को
सादर समर्पित

भूमिका

हल्बी बस्तर अंचल की एक समृद्ध और प्रमुख जनभाषा है। यह बस्तर की संपर्क भाषा है। बस्तर की अन्य बोलियों की तुलना में हल्बी में साहित्य लेखन और इसके व्याकरण इत्यादि का अध्ययन अधिक हुआ है तथा यह कार्य निरंतर किया जा रहा है। तथापि जितना कार्य अब तक किया गया है, वह अत्यल्प है। संक्षिप्त है। हल्बी के विस्तृत अध्ययन–विश्लेषण की आवश्यकता है। इस आवश्यकता की पूर्ति में श्री रूद्र नारायण पाणिग्राही जी की यह पुस्तक एक महत्वपूर्ण कड़ी होगी।

श्री पाणिग्राही जी बस्तर अंचल के सुपरिचित रंगकर्मी, अन्वेषक एवं साहित्यकार हैं। उनका लेखन अनुसंधानपूर्ण होता है। बस्तर की भाषा, कला, संस्कृति एवं इतिहास पर विभिन्न माध्यमों में उनके लेखन से हम पाठक भली–भांति परिचित हैं। प्रस्तुत पुस्तक का विषय हल्बी की लोकोक्तियाँ, मुहावरे एंवं पहेलियाँ है। अब तक हल्बी की लोकोक्तियों, मुहावरों एवं पहेलियों का कोई अच्छा संग्रह प्रकाशित हुआ नहीं था। श्री पाणिग्राही जी का यह संग्रह इस कमी को पूरा करेगा। श्री पाणिग्राही जी ने लोकोक्तियों, मुहावरों एवं पहेलियों का सुंदर–सटिक परिचय देते हुए, प्रत्येक का हिन्दी भावानुवाद किया है। साथ ही वाक्यों के उदाहरण हैं, जो पाठक की ज्ञान–वृद्धि के साथ मनोरंजन भी करते हैं। यह पुस्तक बहुत पहले प्रकाशित होनी चाहिए थी, किन्तु विलंब से ही सही आज हल्बी के अध्ययन–अन्वेषण की गतिविधियों को देखते हुए उचित समय पर प्रकाशित हो रही है। यह प्रसन्नता की बात है। यह पुस्तक जनभाषा के अध्येताओं के साथ ही जनसाधारण के लिए भी उपयोगी होगी। यह लोकोक्तियाँ, मुहावरों एवं पहेलियों का समग्र संकलन नहीं है। इसके आगामी संस्करणों में विस्तार किया जाएगा, ऐसा पाणिग्राही जी का कहना है। निश्चित ही ऐसा होगा, क्योंकि किसी भाषा–बोली की समग्र सामग्री का संकलन समय, श्रम एवं व्यय साध्य कार्य है। श्री पाणिग्राही जी ने इस पुस्तक

के माध्यम से हल्बी जनभाषा के अध्ययन–अन्वेषण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान किया है। मैं इस कार्य के लिए उनका साधुवाद करता हूँ।

–विक्रम कुमार सोनी,
जगदलपुर

स्वकथन

भाषा–बोलियों के संदर्भ में बस्तर की स्थिति एक संगम के समान है, जहाँ आर्य, द्रविड़ और मुंडा भाषा परिवार का संगम होता है। हल्बी बस्तर के मध्य भाग में बोली जाने के फलस्वरूप बस्तर की 'संपर्क–भाषा' की भूमिका निभाती है। हल्बी बस्तर संभाग के अतिरिक्त मध्यप्रदेश (बालाघाट ज़िला), महाराष्ट्र, उड़ीसा (कोरापुट, नवरंगपुर एवं मल्कानगिरि ज़िले) तथा आंधप्रदेश में भी बोली जाती है। हल्बी भाषा–परिवार को लेकर भाषा विज्ञानियों में मतभेद रहे हैं। इन मतभेदों को विस्तार से बताना इस पुस्तक का विषय नहीं है, तथापि हल्बी का थोड़ा परिचय देना उचित होगा।

हल्बी मूलतः महाराष्ट्र के विदर्भ अंचल की हल्बा जनजाति की बोली थी। हल्बा जनजाति के बस्तर आव्रजन के फलस्वरूप, बस्तर में पूर्व से प्रचलित क्षेत्रीय उड़िया–भतरी या देसिया और छत्तीसगढ़ (छत्तीसगढ़ का मैदानी क्षेत्र) से बस्तर आकर बसने वाले छत्तीसगढ़ी भाषियों के कारण छत्तीसगढ़ी से इसका अंतःसंबंध हुआ और वर्तमान स्वरूप विकसित हुआ। हल्बी में भूतकालिक रूप मराठी तथा पूर्वी हिन्दी से एवं वर्तमान कालिक रूप क्षेत्रीय उड़िया के प्रभाव से विकसित हुए हैं, अतः हल्बी को आज के संदर्भ में मराठी, हिन्दी या उड़िया भाषा की बोली समझना उचित नहीं होगा। इसकी रूप–रचना इसे पृथक् वर्ग में रखे जाने की मांग करती है। भाषाविदों ने इसकी अंदकुरी, भुंजिया, चंडारी, गाचीकोलो, कवाड़ी, मेहारी, सुंडी–भुंजिया आदि उपबोलियाँ गिनायी हैं।

हल्बी इस प्रकार मराठी, हिन्दी और उड़िया की बोलियों से बनी 'क्रियोल' है, क्योंकि यह हल्बा, राजा मुरिया, हल्बी क्षेत्र के गोण्ड, धुरवा तथा सुण्डी, धाकड़, पनारा (मरार), सुनार, राउत, कलार, कुम्हार, माहरा, धोबी, नाई आदि जातियों की मातृभाषा है। कुछ भाषा–विद् हल्बी को बोली नहीं, वरन् विभाषा की श्रेणी में रखते है, जो 'भाषा' के निकट हैं। रियासत काल में हल्बी

को राजभाषा का सम्मान प्राप्त था तथा हल्बी में राज–आज्ञा, विभिन्न आदेश, आमंत्रण, सूचनाएं आदि प्रकाशित हुआ करती थी। राजा अपनी प्रजा को भी हल्बी में संबोधन करते थे। आज के इस लोकतंत्र में भी हल्बी को, लोक–भाषा का सम्मान प्राप्त है। हल्बी में न केवल साहित्य लिखा जा रहा है, बल्कि इसमें आकाशवाणी और दूरदर्शन से कार्यक्रम भी प्रसारित होते आ रहे हैं। शासकीय योजनाओं की जानकारी हल्बी में प्रसारित की जाती है। मध्यप्रदेश राज्य तथा वर्तमान छत्तीसगढ़ राज्य में भी हल्बी को प्राथमिक शिक्षा का माध्यम बनाया गया है। हल्बी में समाचार पत्र प्रकाशित हो रहे हैं। बस्तर की अन्य बोलियों के विपरीत कहना उचित होगा कि भतरी के अतिरिक्त हल्बी ही एक ऐसी बोली है, जो किसी जाति विशेष की बोली नहीं है। यह अनेक जाति के लोगों की 'मातृ–भाषा' है। यह बस्तर संभाग के सीमावर्ती क्षेत्रों को छोड़कर पूरे संभाग में बोली जाती है और अन्य बोलियों की अपेक्षा समृद्ध होने के फलस्वरूप अंचल की 'संपर्क–भाषा' के रूप में व्यवहृत होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में व्यवसाय की भाषा हल्बी है। शहरी व्यापारी भी व्यवसाय के लिए हल्बी पर निर्भर हैं, अर्थात् कारोबार की भाषा भी हल्बी ही है। हल्बी बस्तर की वह जन–भाषा है जो सम्पूर्ण बस्तर अंचल में भिन्न भाषा–भाषी समुदायों के मध्य वैचारिक आदान–प्रदान के माध्यम के रूप में प्रयुक्त होती है।

'गदेया' का हल्बी लोक–भाषा में अर्थ होता है, भंडार। गदेया, सामान्यतः किसी न किसी रूप में ढेर अथवा खजाने को सूचित करने वाला शब्द है। प्रस्तुत गदेया भी शब्द भंडार अर्थात् हल्बी की कहावतें, मुहावरे तथा पहेलियों का भंडार अथवा खजाने के रूप में है। इस पुस्तक में अंचल के लगभग 500 से भी अधिक कहावतें, मुहावरे तथा पहेलियाँ संकलित हैं। प्रस्तुत कहावतों, मुहावरों तथा पहेलियों का हिंदी में अर्थ और बोल–चाल की भाषा में किस तरह प्रयोग किया जाता है, उदाहरण के तौर पर उल्लेख किया गया है। इस पुस्तक में शब्दों–वाक्यों के अर्थ को परखने या समझाने के लिए अंचल के जन–जीवन में प्रयुक्त कहावतें, मुहावरे तथा पहेलियों को मूल रूप में संकलित किया गया है। कुछ कहावतें, मुहावरे तथा पहेलियों में अपशब्दों का भी प्रयोग होता आया है जो कि मूल रूप से प्रचलन में है और ग्रामीण उन शब्दों का बुरा नहीं मानते। अपशब्द प्रायः सांकेतिक रूप में अथवा वाक्यांश के रूप में होती है जिसे आम व्यक्ति सहज रूप से अर्थ को समझ लेता है।

बस्तर की कहावतों में लोक जीवन की झाँकी दिखाई पड़ती है। इनसे बस्तरिया मानुष की वाक्पटुता और बुद्धि–चातुर्य का प्रकटीकरण तो होता ही है, साथ ही ये लोक के स्तरीय हास्यबोध का भी परिचय देते हैं।

बस्तर में लोक–साहित्य की समृद्ध वाचिक परम्परा है। लोक–साहित्य की इस वैविध्यपूर्ण विरासत में लोकगीत, लोकगाथाएं, लोककथाएं लोकोक्ति या कहावतें, मुहावरे तथा पहेलियाँ सम्मिलित हैं। बस्तर की कहावतें, मुहावरे तथा पहेलियों के क्षेत्र में कार्य करते हुए मुझे यह सुखद आश्चर्य हुआ कि यह वाचिक परम्परा उन महिलाओं के कंठों में ज्यादा सुरक्षित हैं, जिन्होंने न तो अक्षर ज्ञान पाया और ना ही किसी स्कूली शिक्षा का ज्ञान, किन्तु उनमें स्मरण शक्ति गजब की है। जो कुछ भी इस पुस्तक में संकलित किया गया है, ये उन्हीं महिलाओं के द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित वाचिक परम्परा है, जिन्होंने इस परम्परा को सुनकर ग्रहण किया तथा अपनी मातृ–भाषा तथा दैनिक जीवन के बोल–चाल में सतत प्रयोग किया और यही नहीं परम्परा के अनुसार आने वाली पीढ़ियों को सौंपने के लिए भी तैयार हैं किन्तु, आज के कथित शिक्षाधारी ग्रामीण, युवक–युवतियाँ इस सांस्कृतिक विरासत को ग्रहण करने से कतरा रहे हैं। आज के इस युग में या कहें कि इस इलेक्ट्रानिक्स और संचार क्रांति के युग में नगरों का प्रभाव, फैशन की प्रवृति, शिक्षा का विकास दिनो–दिन बढ़ता जा रहा है। गाँव को छोड़कर युवक–युवतियाँ शहर की ओर आकर्षित हो रहे हैं। ऐसे में शिक्षित नवयुवकों की दिलचस्पी कमोबेश कम होती जा रही है। 'बोली–भाषा' के ह्रास के इस युग में रचनात्मक दस्तावेज के रूप में ही सही– हमारी अंचल की धरोहर, वाचिक परम्परा किसी भी रूप में हो संरक्षित हो। इस विलुप्तोन्मुखी विरासत को शीघ्रता से लिपिबद्ध किया जा सके वह लोक संस्कृति के हित में है, और इस दिशा में मेरे द्वारा किया गया कार्य एक प्रयास मात्र है।

हम उन सभी सज्जनों के आभारी हैं, जिन्होंने बस्तर की स्थानीय हल्बी जन–भाषा के इस संकलन 'गदेया' को प्रकाशित करने में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग किया है। पुस्तक आप सुधि पाठकों के हाथ में है, यह हमारे उद्यम का प्रथम चरण नहीं है, अपितु गद्य के क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण कार्य को और अंचल की वाचिक परम्पराओं को लिखित रूप में प्रकाशित करते हुए संरक्षण और संवर्धन के क्षेत्र में कार्य करना है। आगे भी हल्बी के क्षेत्र में महती कार्य करने के लिए वचनबद्ध हैं। संकलित कहावतें, मुहावरे तथा पहेलियों को

पढ़ने के बाद पाठकों को ऐसा प्रतीत होता है कि बस्तर अंचल अपने विविध रूप में इस संकलन में स्पंदित हुआ है, तो हम समझेंगे कि हमारा प्रयास सफल हुआ। आप पाठकों की समीक्षा से हमें और आगे बढ़कर कार्य करने हेतु मार्गदर्शन एवं संबल प्राप्त होगा, यही अपेक्षा है।

जगदलपुर
15 जुलाई 2017

—रूद्र नारायण पाणिग्राही
जगदलपुर

अनुक्रम

कहावतें / लोकोक्तियाँ (कहका)	17
मुहावरा (ठेचा–रेचा ठसा)	59
पहेलियाँ (धंदा)	133
कथा–पहेली (कहनी धंदा)	164

कहावतें/
लोकोक्तियाँ
"कहका"

कहावतें / लोकोक्तियाँ

"कहका"

बस्तर में लोकोक्तियों या कहावतों का अक्षय भंडार है। आकार की दृष्टि से ये कहीं छोटी तो कहीं बड़ी होती है। इनमें अनुभव, ज्ञान, कर्तव्य, हास–परिहास, स्वभाव और चरित्र को प्रकाशित करने की अद्‌भुत क्षमता होती है।

बस्तर की लोकोक्तियों में लोक जीवन की झाँकी दिखाई पड़ती है। इनसे बस्तरिया मानुष की वाक्‌पटुता और बुद्धि–चातुर्य का प्रकटीकरण तो होता ही है, साथ ही ये लोक के स्तरीय हास्यबोध का भी परिचय देते हैं। इस अंचल की हल्बी–भतरी जनभाषाओं में लोकोक्ति को "कहका" कहा जाता है ।

बहुत अधिक प्रचलित और लोगों के मुँह चढ़े वाक्य लोकोक्ति के तौर पर जाने जाते हैं। इन वाक्यों में जनता के अनुभव का निचोड़ या सार होता है। लोकोक्तियाँ आम जनमानस द्वारा स्थानीय जन–भाषाओं में हर दिन की परिस्थितियों एवं संदर्भों से उपजे ऐसे पद या वाक्य होते हैं जो किसी खास समूह, उम्र, वर्ग या क्षेत्रीय दायरे में प्रयोग किए जाते हैं। इसमें स्थान विशेष के भूगोल, संस्कृति, भाषाओं का मिश्रण इत्यादि की झलक मिलती है। जब कोई भाषा अन्य भाषाओं के सम्पर्क में आती है तब उनके अनेक मुहावरों और लोकोक्तियों को वह उनके मूल या अनुदित रूप में ग्रहण कर लेती है। संस्कृत अनेक भाषाओं की जननी है और उसमें लोकोक्तियों का अपार भंडार है।

अनेक लोकोक्तियाँ पौराणिक तथा ऐतिहासिक कथाओं पर आधारित होती हैं, अनेक लोगों के क्रियाकलापों के निष्कर्ष के रूप में होती है। कुछ व्यंग्य प्रधान होती है कुछ आदर्शों के लिए प्रेरणा स्वरूप होती है। कुछ सीख देने वाली कुछ दिशा–निर्देश करने वाली होती है, कुछ तत्वों का खंडन या मंडन भी करती हैं आदि–आदि। लोकोक्ति के लिए कहावत या सूक्ति शब्द

का प्रयोग भी होता है। कथा की संकेतक लोकोक्ति को हम कहावत कह सकते हैं। सभी लोकोक्तियों को कहावत नहीं कहा जा सकता। सूक्ति, सुंदर उक्ति या आदर्श उक्ति को कहते हैं। 'सुभाषित' आदर्श सूक्ति का पर्याय है।

बस्तर का जन–जीवन कृषि आधारित है। खेती के पुराने औजार फार, जुआँड़ी, बेसन, कासरा, बरही, रापा, कुदाली, हल वही है। धान, कोदो, कुटकी, मंडेया, अलसी, तिल, उड़द, कांदुल, गटका, गन्ना, मक्का, थोड़ी बहुत मात्रा में गेंहूँ आदि उगाए जाते हैं। महुआ, सलफी यहाँ का जीवनाधार है। मूली, विभिन्न प्रकार के भाजी, कुमडा, लाउ, सेमी, डोड़का, भेंडी, झुडंगा, छाती–बोड़ा, बैंगन, गोंदरी, विभिन्न प्रकार के कांदा, विभिन्न प्रकार के खाने योग्य जंगली फल यथा कुरलू, टेमरू, चार, अमड़ी, आँवला और न जाने कितने प्रकार के उपयोगी फल, फूलों में कुंद, मंदार, कुड़ई, हजारी, कनेर, पुड़न, पाड़जात, चम्पा इत्यादि । पालतू पशुओं में गाय–बैल, भैंस, बकरा–बकरी, सूकर, मुर्गे–मुर्गियाँ। अन्य जीव–जन्तुओं में ढेकुन, मेंडका, टेंडका, हड़ेर, लावा, छेचान, मछरी। वन्य जीवों में लमाहा, बाग, बेंदरा, मंगर, कोलेया, भालू, गंवर, डुरका के नाम बार–बार आते हैं। प्रायः सभी घरों में कसेला, थाली, जता, ढेकी, कोटनी, चूल्हा, कपाट, फड़की आदि हैं। भोजन में पेज, मंडेया–पेज, कनकी –पेज, भात, साग, आमट, पुड़गा, चापड़ा, नोन, भाजी मुख्य हैं। यहाँ जंगल, पहाड़, झरने, तालाब, नदी, पेड़–फूल, चाँद–तारे सारे के सारे महत्वपूर्ण हैं। तात्पर्य यह कि बस्तर की कहावतों, पहेलियों और लोकोक्तियों में यहाँ का जन–जीवन, सामाजिक रचना और सांस्कृतिक स्वरूप चित्रित है। लोक साहित्य एवं लोक जीवन की मुख्य आधार भूमि को वे प्रकट करती है।

हल्बी भाषी लोक जीवन में बहुप्रचलित लोकोक्तियाँ एवं उनके उदाहरण के साथ नीचे प्रस्तुत हैं–

♠ **अबुजा के कुकड़ा पूजा ।**

♣ नासमझ के आगे सारे प्रयास बेकार।

उदा0– समंजलो ने तो काईं बले करूक होती, अबूजा के काय कुकड़ा पुजा देयेन्दे।

♠ **अरकस देव के, बरकस पूजा।**

♣ जितने ताकतवर देवी–देवता, उनके अनुसार पूजन सामग्री।

उदा0– कसने बले मोचो बूता तो निमड़ो, अरकस देव के बरकस पूजा देयेन्दे।

♠ **अपढ़ के दुय थापड़ ।**

अनपढ़ को दो थप्पड़।

♣ अपमानित होना ।

अनपढ़ व्यक्ति को कदम–कदम पर ठोकर खाना होता है।

उदा0– दुय लिखड़ी पढुन रले, कोनी नी बलता अपढ़ के दुय थापड़।

♠ **आमा चो झड़नी, भोभड़ा डोकरा चो मरनी ।**

आम का झड़ना और बूढ़े का मरना।

♣ कुछ लोगों को किस्मत का भरपूर साथ मिलता है, जीवन में सब कुछ अनुकुल होता रहता है। ऐसे ही लोगों के लिए कहा गया है कि 'आमा चो झड़नी आउर डोकरा भोभड़ा चो मरनी'। अर्थ यह कि इधर आम पककर टपकना बंद हुआ और उधर भोभड़ा जिसके सारे दाँत गिर चुके हैं, की मृत्यु हुई। इसे इस तरह भी कह सकते हैं कि जब तक आम पककर गिरता रहा, बूढ़ा उन्हें खाकर प्रसन्न होता रहा, लेकिन जैसे ही आम खत्म हुआ, बूढ़ा चल बसा।

उदा0– 'डोकरा रोजे आमा रहोत ले राखा–जागा करे, एबाटे आमा झडुन सरली आउर हुन बाटे बोपड़ा बेचारा सरगपुर गेलो, आमा चो झड़नी आउर भोभड़ा डोकरा चो मरनी असन होली।'

♠ **आपलो बेटा, छाती के पेटा,**
पर बेटा, कुड़ार ढेटा ।

♣ अपना बेटा, अपना ही होता है, वह भले ही छाती पर मूँग दले, किन्तु पराया बेटा टँगेया ढेटा अर्थात् कुल्हाड़ी के मूँठ की तरह होता है, महत्वपूर्ण होते हुए भी उपेक्षित होता है। कहावत में अपना–पराया का व्यंग्य निहित है।

उदा0– आपलो बेटा आय बलुन ओगाय होवलो, पर बेटा होती जाले कुड़ार ढेटा बनातो।

♠ **आपलो कमाउन, आपलो खातोर ।**

स्वयं कमाकर स्वयं ही खाना।

♣ किसी के साथ साझा न करना ।

उदा0– एकलो मुँडेया आय ना, आपलो कमाउन आपलो चे खायेसे, पिला–झिला चो लेख नी करे।

♠ **उतलो गोरोस, चुली के लाभ ।**

उदण्डता, उफनता दूध, चूल्हे को लाभ।

♣ चूल्हे की तेज आँच में जब दूध उफनकर गिरता है तो वह निश्चित रूप से बरबाद हो जाता है। अर्थात् क्षणिक आवेश में आकर निरंकुश होकर व्यक्ति भी जब अपनी सीमा लाँघता है तो उपर उठने की गलतफहमी के कारण उसमें भी इतनी गिराट आ जाती है कि वह एकाएक चूल्हे में चला जाता है।

उदा0– 'आया बले केंव गेली जाले, जमाय गोरोस उतुन चुला ने गेली, एकेय बलुआत उतलो गोरोस चुली के लाभ।'

♠ **एक हात चो काकड़ी, नंव हात बीचा ।**

एक हाथ लम्बाई की ककड़ी और उसके नौ हाथ लंबे बीज।

♣ बढ़ा–चढ़ा कर कहना। बात का बतंगड़ बनाना।
बड़बोले लोग एक हाथ खीरा का नौ हाथ लंबा बीज बताने से भी नहीं चूकते।

उदा0– 'ठाबतो लोक एक हात चो बीचा के नव हात सांगुआत।'

♠ **ओछना चो पानी मंगरी ने केबय नी चेगे ।**

खपरैल का गिरता पानी पुनः उपर नहीं चढ़ता।

♣ अयोग्य व्यक्ति का कोई भी कार्य सफल नहीं होना।

उदा0 – आमचो भाग नाहलो काहाँ मिरेदे, ओछना चो पानी केबय मंगरी ने चेगली से ?

♠ **ओखनी चो डर ने खतड़ी के पकातोर नुहांय ।**

जूँ के डर से गुदड़ी नहीं फेंकी जाती।

♣ साधारण कष्ट या हानि के डर से कोई व्यक्ति काम नहीं छोड़ता।

उदा0– 'गोदी खोडुक जातोर आय, उरगा दुखा देयदे बलुन नाईं नी बल, ओखनी चो डर ने खतड़ी के पकातोर नौहांय।'

♠ **अंधार राज, बयहा राजा, आनायक भाजी, आनायक खाजा ।**

अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।

♣ जहाँ मुखिया मूर्ख हो और न्याय अन्याय का ख्याल न रखता हो। वहाँ अन्याय होता ही है।

उदा0– जोन राज चो नाव अंधार राज, आउर राजा चो नाव बयहा राजा आय आउर जोन लगे आनायक ने भाजी आउर आनायक ने खाजा मिरेसे, हुसन लगे नाहले असन राज ने डंडीक थेबतोर नौहांय।

♠ **कतरनी टोण्ड।**

कैंची की तरह जबान चलाना।

♣ बिना अवसर–अनवसर देखे अथवा बिना छोटे–बड़े का लिहाज किए उल्टा–सीधा बकना।

उदा0– कतरनी असन चलते रये चयतु चो गोठ आउर ए बाटे उठ्ठान फरसी चमकालो रयनू गोंड।

♠ **कलार चो घरे पानी खादलो ने बले, मंद खादलो असन आय ।**

शराब के भट्टी में खड़े होने पर शराबी होने का शक।

♣ दोषारोपण। काजल के कोठरी में हाथ काला। बुरी संगत होने पर कलंक लगता ही है।

उदा0– मँय तो कतवाल पारा चो बाट के धरले, मके भाटीसार बाटे जाउन रये बलुन लटा देसत। कलार घरो पानी खावलो ने बले मंद खावलो से बलुन लटा देसत।

♠ **कवड़ी चो मोल ।**

कौड़ी के दाम।

♣ सस्ते कीमत या कम दाम पर बिकना।

उदा0– एसु चो कमालो धान हाट ने कवड़ी चो मोल गेली।

♠ **करम रले करमंगा, नाहले भंगभंगा ।**

किस्मत अच्छा हो तो ठीक अन्यथा बुरा ही बुरा।

♣ किस्मत साथ न देना।

भाग्य अच्छा हो तो सभी कार्य सफल होते हैं अन्यथा कर्म करने के बावजूद काम किसी न किसी कारण से खराब होता है।

उदा0– भाग ने लिखु रले मिरती, करम रले करमंगा, नाहले भंगभंगा।

♠ **कावा चो कडरले मनुख नी मरे ।**

कौए के श्राप से मनुष्य की मौत नहीं होती।

♣ व्यर्थ का श्राप।

फल दुःसाध्य नहीं होता।

उदा0– अंडखी फुटाउन कावरा चो सरापलो असन कितरय बलो, कावा चो कडरलो ने मनुख नी मरे।

♠ **काना हाण्डी ने पानी बोउन, करम के दोस ।**

छिद्रयुक्त हंडी में पानी लेकर आना और भाग्य को दोष देना।

♣ अकारण भाग्य कोसना।

कुपात्र का आश्रय लेकर भाग्य को कोसना अच्छा नहीं होता।

उदा0– दूसर चो दखा–दखी मंय बले काना हांडी ने पानी बोउन दिले, सोन आय बलुन पीतल के देउन ठगलो।

♠ **काना चो बड़गी ।**

अंधे की लाठी।

♣ एकमात्र सहारा।

सर्तक होना।

उदा0– 'काना चो बड़गी हारक हाजुआय, दूसर हार गोड़ खाले चेपाउन बसुआय।'

♠ **काना के नेवता ।**

अंधे को निमंत्रण ।

♣ मुसीबत मोल लेना।

गलत आदमी को निमंत्रण, एक के बदले दो का आना।
उदा0– सकत नी रलो बेरा, काना–खोड़ेया के हाक नी देतोर आय ।

♠ **काल चो हात समान, काय डोकरा काय जुआन ।**
काल के हाथ समान, क्या बूढ़ा क्या जवान।
♣ मृत्यु एक शाश्वत् सत्य है, वह सभी को ग्रसती है।
उदा0– मरनी इलो बेरा काल के दोस दिलो ने काय लाभ। काल चो हात समान, काय डोकरा काय जुआन ।

♠ **काकड़ी चोर के फांसी चेगातोर नोहांय ।**
ककड़ी के 0चोर को फांसी नहीं दी जाती।
♣ अपराध के अनुसार दण्ड दिया जाना चाहिए।
उदा0– 'काकड़ी चोरलो काजे बले फांसी चेगातोर, मँय पहिल खेप सुनले।

♠ **काना पादे, भयंरा हुकारे ।**
अंधा कहे , बधिर हामी भरे।
♣ कहे खेत की सुने खलिहान की।
कहा कुछ गया और कुछ समझा गया।
उदा0– धरून आन बल्ले मारून आनलो, नी होय एमन संगे, काना पादे भंयरा हुंकारे।

♠ **कावरा कोल्हार होतोर ।**
कौए का कोलाहल।
♣ बस्तर के लोक जीवन में 'कावरा कोल्हार' का अर्थ कौए के द्वारा वातावरण में कोलाहल करना होता है। प्रायः यह देखने में आता है कि किसी पशु के मृत देह के आस–पास, शरीर के मांस नोचने के दौरान अथवा जब किसी कौए की मृत देह के समीप कौओं की भीड़ उमड़ पडती है, इस दौरान कौओं की कोलाहल, समवेत स्वर गूँजता है। किसी सामाजिक कार्य के दौरान भी किसी विषय पर जब बहस छिड़ जाती है और एक कोलाहल का स्वर गूँजने लगता है तब भी 'कावरा कोल्हार' होयसे, कहा जाता है।

उदा0– 'धनसिंग चो बाप बीता मातुन इलोसे कायनूँ, घरे कावरा कोल्हार होयसे।

♠ **कानी आईंख उपर ले कजर ।**

फूटी आँख अर्थात् कानी आँख के उपर काजल का लेप।

♣ किसी में कोई कमी हो, और वह अपनी करतुतों से उस कमी को और बढ़ाए, तो उसे कानी आँख उपर से काजल कहेगें।

उदा0– हुनचो कहनी के नी सांगा, गोटोक आईंख कानी उपर ले कजर।

♠ **काना खोजे जोनी उजर, साहेब मोटर गाड़ा,**
पाइक खोजे बोकड़ा–कुकड़ा, कुकुर खोजे हाड़ा ।

अंधे को क्या चाहिए, चाँदनी रात का उजाला ही काफी है। अधिकारी को गाड़ी, बंगला, लालबत्ती, और कर्मचारी जब किसी गाँव में जाता है तो मूल कार्य को छोड़ पहले ही मुर्गा, बकरा, शराब ढूंढने लग जाता है। कुत्ते को क्या चाहिए, उसे एक हड्डी का टुकड़ा मिल जाए वही काफी है।

♣ आवश्यक या अभीष्ट वस्तु अचानक या अनायास मिलना। अपनी–अपनी जरूरत की तलाश, मनचाही वस्तु प्राप्त करना।

उदा0– 'बाप बल्लो बेटी के – जुआंय संगे एथा एउन राहा, सतरा–सतरी चो ताना कितरो दिन सुनासे, काना काय खोजे, दुय ठान आईंख।
बेटी– जुआंय गोठ के मानला।

♠ **किरकी कुड़ेया मंजुर झाल, दख समदी मोचो चाल ।**

टूटा–फूटा घर, बावजूद मेरी चाल, रहन–सहन देखो।

♣ शेख चिल्ली, दिखावापन।

उदा0– रतो काजे ठान निहांय, बड़े–बड़े ठाब। किरकी कुड़ेया मंजुर झाल, दख समदी मोचो चाल।

♠ **कुकड़ा नी बासलोर काय बेर नी उदे ।**

मुर्गे के बांग के बिना क्या सूर्योदय नहीं होता।

♣ किसी के बिना किसी का काम नहीं रूकता।

उदा0– तुचय बल्लो ने गाँव चो लोक मानदे, कुकड़ा नी बासलो ने बले बेर उदेसे, जानीस कसन जाले।

♠ कुकुर चो लेंगड़ी, सोन चो नरा ने भरलो ने बले सोज नी होय, बाकटा चो बाकटा रयेदे ।

कुत्ते की पूँछ, सोने की नली में भरकर रखें तब भी वह सीधी नहीं हो सकती, टेढ़ी की टेढ़ी ही रहेगी।

♣ लाख प्रयत्न के बावजूद, कुटिल व्यक्ति अपनी कुटिलता नहीं छोड़ता।

उदा0– 'मानसाय लेका भारी उबागरी आय हो, हुन कुकुर चो लेंगड़ी आय सोन चो नरा ने बारा बरख भरू रले बले हुनचो लेंगड़ी सोज नी होय।'

♠ कुकुर बले बसतो पूरे ठान के लेंगड़ी ले सफा करून बसुआय ।

कुत्ता भी बैठने के पूर्व, पूँछ से जगह साफ कर ही बैठता है।

♣ लाख कोशिशों के बावजूद दुष्ट अपनी दुष्टता नहीं त्यागता।

उदा0– खावतो पूरे हात के अच्छाय सफा पानी ने धोउन पेज खाउक बसतोर आय बलुन गाँव–पारा चो मास्टर रोजे दिना सांगेसे, मान्तर समंजलो ने तो ? बसतो पूरे कुकुर बले बसतो पूरे ठान के लेंगड़ी ले सफा करून बसुआय। समजान थाकले।

♠ केबे आमा, तो केबे लबेदा ।

कब आम फले तो उसे तोड़ने के लिए डंडा मारने की प्रतीक्षा करें।

♣ प्रतीक्षा करना।

उदा0– 'बरख दुएक जाउक देस, पयसा होली जाले तुचो काजे फटफटी घेनुन देयेन्दे बलेसे बाबा, केबे आमा धरेदे जाले तेबे मँय लबेदा पकायेन्दे।'

♠ कोयकी गुड़ा ने कावरा गार पाड़े ।

कोयली के घोसले में कौआ अण्डा दे।

♣ संगत का प्रभाव।

अच्छी संगति पर भी जातीय स्वभाव के कारण अपमानित होना।

उदा0– आमि काय जानूं कोयकी गुड़ा ने कावरा गार पाड़ेसे, काचो पिला के आनू पोसेसे जाले ?

♠ **कोन्दा चो गुर भेली ।**

गूंगे का गुड़।

♣ वह आनंद की अनुभूति, सुख का अनुभव जिसका वर्णन नहीं किया जा सके, भक्त को भगवान के चिंतन में जो आनंद मिलता है, वह कहा नहीं जा सकता, वह तो गूँगे का गुड़ ही रहेगा।

उदा0– जुगे लड़बड़ नी होव, कोंदा चो गुर भेली असन।

♠ **कोदो आउर लाहेर चो संग ।**

कोदो और अरहर का साथ।

♣ दो विपरीत स्वभाव वालों में कोई तालमेल कभी नहीं बैठता। जिस तरह शेर और बकरी एक घाट में पानी नहीं पी सकते, शीशे और पत्थर में दोस्ती नहीं हो सकती, उसी तरह 'कोदो आउर लाहेर का संग' नहीं हो सकता।

उदा0– तुय बले नी समजुन हुनचो संग के धरलीस, कोदो आउर लाहेर चो संग होउक सके?

♠ **कोचई उछलाते–उछलाते, मुंड के खजाये ।**

घुईयाँ या अरबी छिलते–छिलते सर खुजाना।

♣ उहापोह की स्थिति, तत्काल फैसला लेने में कठिनाई महसूस करना। विपरीत परिस्थितियों में किंकर्तव्यविमूढ़ होना अलग बात है, लेकिन जब एक साथ बहुत से काम करने पड़ जाएँ, तो आदमी क्या करे और क्या छोड़े।

उदा0– भार खोजरी कोचई उछलातो बेरा फेर मुंड बले खजातोर।

♠ **खड़ जोय आउर नीच चो संग ।**

पैरावट की आग और नीच की दोस्ती।

♣ जिस तरह पैरावट में लगी आग क्षण भर में जलकर राख हो जाती है, उसी तरह गिरे हुए व्यक्ति की दोस्ती भी अधिक समय तक कायम नहीं

रहता।

उदा0– तुचो बले संग धरतोर जे, कोनी नी मिरला ? सबे दिन सांगलोर आसे कि खड़ जोय आउर नीच मनुख चो संग डंडिक होउआय।

♠ **खाओत ले संग, बांधोत ले मीत ।**

खाते तक साथ और मीत बंधते तक साथ।

♣ स्वार्थी, मतलबी ।

जब तक लोगों को अपना उल्लू सीधा करना रहता है, बहुत मीठा–मीठा बोलते हैं, लेकिन जैसे ही मतलब निकला वो असली रंग दिखाने लगते हैं। हल्बी के इस लोकोक्ति "रहोत ले भाटो नाहले चेटा चाटो" से भी अर्थ सिद्ध होता है।

उदा0– धन रहोत ले मामा–भाचा दुय दिन संगे रला एबे खाओत ले संग बांधोत ले मीत असन होवला।

♠ **खिलंवा ना पंयड़ी, जुगे उधले भंयरी ।**

कर्ण आभूषण ना, और ना पावों की पंयड़ी (पैरों का आभूषण) बहरी महिला का अधिक उतावलापन।

♣ उतावलापन।

व्यर्थ का उतावलापन।

उदा0– काने हाते काईं निहांय आउर भंयरी चो उधल–छटक के दखा।

♠ **खेलाए–कुदाए नाव नाइ, गिराए–पड़ाए नाव ।**

खेलाया–कुदाया नाम नहीं, गिर पड़ा तो बदनाम हो जाना।

♣ उपकार के स्थान पर बदनामी।

उदा0– आजिकालि जस करले बले, खेलाए–कुदाए नाव नाइ, गिराए–पड़ाए नाव होउ आय।

♠ **खोजी खाउ के, चोण्डी ने घाव ।**

साधन का छिन जाना अथवा साधन विहीन होना।

♣ प्रतिदन मेहनत करके जो व्यक्ति अपना पेट पालता है, वह साधन यदि छिन जाए तो उसकी स्थिति दयनीय हो जाती है, यह कहावत श्रमिक

की विवशता को रेखांकित करती है। यहाँ कहावत में प्रयुक्त 'चोंडी' का आशय मुख से है।

उदा0– 'रोजे खोजुन खावतो लोक चो चोंडी ने घाव होली, दुनों पाँय टुटली, कसन करेदे जाले।'

♠ **खोरलही कुतरी के गादी ने ठान ।**

खुजली वाले कुत्ते को सिंहासन में स्थान।

♣ जब कोई कुरूप व्यक्ति श्रृंगार करता है, सुन्दर वेशभूषा धारण करता है तब इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

उदा0– 'दखा खोरलही कुतरी के गादी ने ठान मिरली, थोतना करेया भिंग–भिंगा, मान्तर फटई चो उजर के तो दखा।

♠ **गंगा गेलो कुकुर, पतरी चाटेदे कोन ।**

कुत्ता गंगा गया, पत्तल कौन चाटेगा ?

♣ निठल्ला, कामचोर, आदत से लाचार ।

उदा0– जमाय बुता के करते करले तो होयेदे, कुकुर चो गंगा गेले पतरी कोन चाटेदे ।

♠ **गाय आड़े, कोकोड़ा जिए ।**

गाय की आड़ में बगुले का जीवन–यापन।

♣ दूसरों पर आश्रित होना।

उदा0– दूसर चो बुद ने रले कितरो दिन गाय आड़े कोकोड़ा जियेदे ?

♠ **गाय रले दियारी आय, बेटा रले बुआरी आय ।**

जिस घर में गाय है वहाँ दियारी, बेटा हो तो बहु ।

♣ सम्पन्नता।

उदा0– मांगा खाया घरे फेर काय मिरेदे ता, गाय रले दियारी आय आउर बेटा रले बुआरी आय।

♠ **गार देये कोयकी, कावा सेउक बसे ।**

अंडे दे कोयल, कौआ सेने बैठे।

♣ परिश्रम कोई करे, लाभ कोई दूसरा ले।

उदा0– 'हुन सदा दिने मसागत करते रलो, लाभ मिरतो बेरा दूसर के मिरली। ये तो हुनी गोठ होली गार देये कोयकी, कावा सेउक बसे।'

♠ **गुलाय राज बुलुन नाचे, घर चो फड़की मेला ।**

सारा जग घूम–घूम कर नाचने वाले का उसके घर का दरवाजा खुला।

♣ पर उपदेश कुशल बहुतेरे।

उदा0– 'बड़े–बड़े गोठेयायेसे, गुलाय राज नाचतो बीता चो घर चो फड़की मेला आसे।

♠ **गोबर गनेस ।**

गोबर गणेश।

♣ बिल्कुल बुद्धु होना।

उदा0– एसु बले पास नी होलो गुरजी, इनम गोबर गनेस होवलो।

♠ **गोरोस बीती गाय चो लात बले खाउक पड़ुआय ।**

दुधारू गाय के लात भी खाने पड़ते हैं।

♣ जिससे लाभ होता है, उसके नखरे भी सहने पड़ते हैं।

उदा0– कमानी ना धमानी गारी खाउन बले भाई–भाउज संगे रहुक पड़ेदे, गोरोस बीती गाय चो लात खाउक चे पड़ेसे।

♠ **गोटोकी लगे भंडवा रले ठेटा–ठेटी होउआत ।**

एक जगह बर्तन हो तो आवाज़ आती है, अर्थात् जहाँ चार बर्तन होगें वहाँ खटकेगें भी।

♣ सभी का मत एक जैसा नहीं होता।

उदा0– बेटा काजे बोहारी आनलास, अलगाउन दियास, कमाउन खाओत, गोटकी लगे रले भंडवा ठेटा–ठेटी होते रहेदे।

♠ **गोरोस चो गोरोस आउर पानी चो पानी ।**

दूध का दूध और पानी का पानी।

♣ सच और झूठ का सही फैसला।

उदा0– मँय दखायेन्दे चीना, गारोस चो गोरोस आउर पानी चो पानी होउन जायेदे ।

♠ **गोरोस खाया टोण्ड ।**

दूध पीने वाला मुंह।

♣ दूध पीता अर्थात् नन्हा बच्चा। छोटी मुंह बड़ी बात।

उदा0– बड़े–बड़े गोठेयायेसे, गोरोस खाया टोंड ने।

♠ **गोटोक हाते धर, दूसर हाते देस ।**

एक हाथ ले, दूसरे हाथ दे।

♣ स्पष्टवादिता।

उदा0– गोटोक हाते पयसा धर आउर दूसर हाते भंयसा के आनुन बांदुन देस।

♠ **गोटोक आवा चो भंडवा ।**

एक आवे का बर्तन।

♣ सबका एक जैसा होना, जैसे कुम्हार के आवे में सभी बर्तन एक से पकते हैं।

उदा0– भिने–भिने दखा दिलों ने बले गोटकी आवा चो भंडवा आय ।

♠ **गोटोक कोलेया हुआ–हुआ, जमाय कोलेया हुआ ।**

एक सियार का हुआ–हुआ, सभी सियारों का हुआ।

♣ अंधानुकरण।

उदा0– कोनी एक दूसर चो गोठ के नी सुनोत, गोटोक कोलेया हुआ–हुआ, जमाय कोलेया हुआ।

♠ **गोहड़ा घरो सोहड़ा रांदा ।**

अधिक व्यक्तियों के लिए पकने वाले व्यजंन साफ–सुथरे नहीं पकते।

♣ सफाई का न होना।

उदा0– इतरो झोप चो रांदा के सफा बरन चो रांदा–बाड़ा कर बल्ले काहाँ ले होयदे, गोहड़ा घर सो सोहड़ा रांदा सबे दिन चलेसे।

♠ **गोटोक हिरला, गाँव भर के खोखली ।**

औषधि युक्त फल हर्रा एक और सारा गाँव खाँसी से परेशान।

♣ एक अनार सौ बीमार।

चीज का कम होना, चाहने वाले ज्यादा होना।

उदा0– बाटी लावा चो साग, सबके पुराव बल्ले काहाँ होयेदे? गोटोक हिरला, गाँव भर के खोखली ।

♠ **गोटोक निस, बारा दोस ।**

♣ एक बहाना, बारह दोश

लांछन लगाने वाले को सिर्फ एक बहाना चाहिए।

उदा0 – आले हाट गेले जाले काय होली ? लड़तो लोक के गोटोक निस मिरली कि बारा दोस डगराते रदे।

♠ **गोठ–गोठ ने गोठ बाढ़ुआय, पानी ने बाढ़ु आय धान, तेल–फूल ने पिला बाढ़ुआय, खिलवां ने बाढ़ुआय कान ।**

♣ बातों–बातों में बातें बढ़ना।

कहा जाता है कि बातों–बातों में बात बढ़ती चली जाती है। खेत में पानी हो तो फसल की पैदावार अच्छी होती है। उसी तरह लोक जीवन में मान्यता है कि नवजात बच्चों की हाथ–पैर की मालिश और सेकाई आवश्यक है जिससे बच्चे की बाढ़ में सहायक सिद्ध हो और उसी तरह खिलवाँ नामक आभूषण कान में पहन लिया जाय तो कान की लंबाई बढ़ जाती है।

उदा0– गोठ–गोठ ने गोठ निकरतो के जमाय भुरलुन गेलु, हुत्ताय सांज होली ।

♠ **घर चो धन के कुकुर खाय, दूसर घरे मांगुक जाय ।**

घर का धन कुत्ता खाए, और स्वंय दूसरों के घर मांग कर खाय।

♣ सामर्थ्यवान, बावजूद दूसरों से अपेक्षा।

उदा0– रलो धन के कुकुर बाटा, दूसर घरे मांगुक जातो अच्छा निहांय।

♠ **घर चो ना घाट चो ।**

घर का ना घाट का।

♣ दुविधा में पड़ना।

उदा0– हाट जातो काजे टाकुन–टाकुन थाकले, बेरा फिटली पाछे, अदांय घर चो होले ना घाट चो।

♠ घर चो बुड़गा के बिक आउर निआव करूक सीख।

घर की पशुओं को बेचकर बात करना सीखना ।

♣ घर की दौलत उड़ाकर मौज करना। घर फूँक तमाशा देख।

उदा0– घरे खावतो काजे निहांय जे, रलो गाय–बयला के बले बिकलास आउर ठाब बड़े–बड़े ।

♠ घरे निहाँय रांदा, दुआरे भंयसा बांदा ।

घर में खाने को अन्न नहीं, किन्तु आंगन में भैंस बांधना।

♣ झूठा दिखावा करना, न होने पर ढोंग करना।

उदा0– 'खावतो काजे रोजे झिकाटाना, मान्तर नावा फटफटी घेनुन लोक के दखातो लोभ के दखा। घरे निहाँय राँदा, दुआरे भंयसा बाँदा।'

♠ चामड़ी जाओ, फेर दामड़ी नी जाओ ।

चमड़ी जाए, पर दमड़ी न जाए।

♣ बहुत अधिक कंजूसी करना।

उदा0– 'पिला मन काजे केबय लाई–चना बले नी घेनून देये, काय सूम, काय सूम। चामड़ी जाओ मान्तर दामड़ी नी जाओ।

♠ रहे जोगी मंदे–मास, नी रहे जोगी पड़े उपास ।

जब तक मांस–मदिरा मिले खाया, और जब न रहा तो उपवास ।

♣ भविष्य के प्रति लापरवाह होना।

उदा0– रहोत ले पेट भर संग साथी संगे मास भात खादलो, सरतो के उपास करसे।

♠ चइत महेना चो पानी, आउर दसराहा बोकड़ा ।

चैत्र माह का पानी, और दशहरा बकरा।

शांत रहने से अधिक कोई सुख नहीं।

♣ बुरा–भला न कहना, शांत रहना।

जो मनुष्य चुप रहता है उससे हजार बोलने वाले हार मान लेते हैं।

उदा0– 'लड़ई झगड़ा ने रतोर नुहाय, बला–बली होतोर पलटा ओगाय रतोर अच्छा आय, चुप ले आगर सुख नाई।

♠ चोरलो धन के, दांदर नापा ।

चोरी की हुई वस्तु को दांदर से नापना।

♣ चोरी या हराम की कमाई का गलत मूल्याकंन।

दांदर मछली पकड़ने का बाँस से बना हुआ एक साधन होता है। चोरी किया हुआ सामग्री के विभाजन के लिए कोई साधन या परिमाण उपलब्ध न हो तो समीप पड़ा दांदर से ही विभाजन करने में क्या बुराई।

उदा0– निकराउन–निकराउन घर ले देउन देसीस जे, ये चोरलो धन के दांदर नापा असन करलो ने भलई आय।

♠ जसन देस, हुसन भेस ।

जैसा देश, वैसा वेश।

♣ जहॉ रहना हो वहीं के रीतियों के अनुसार आचरण करना चाहिए।

उदा0– 'जसन देस चो हुसन भेस, धोती पिंदलो ने काय होली।'

♠ जसन बांवस चो हुसन बास्ता ।

जैसा बांस, वैसा ही करील अथवा बास्ता ।

♣ जस बाप का तस पूत।

उदा0– पढुन–लिखुन नवकरी पावलो, जसन बांवस चो हुसन बास्ता होयेदे।

♠ जितरो बड़े ढोल, हुतरय पोल ।

जितना बड़ा ढोल, उतना ही पोलापन ।

♣ दिखावापन।

अपनी कमी प्रकट नहीं होने देना।

उदा0 – चुच्छाय फुकलो ने नी होय, जितरो बड़े ढोल चो हुतरय बड़े पोल।

♠ **जुगे चतुर के दुआरे ठान ।**

अधिक चालाक व्यक्ति को आँगन में स्थान।

♣ चालाकी काम न आना।

उदा0– जुगे चतुर के दुआरे ठान, मड़कही रूख ने चेगुन झपके टुटायेन्दे बलते रूख ले पडुन गेलो।

♠ **जोड़ा आईख बीता काना ।**

दो आँखों रहते हुए भी अंधा।

♣ लापरवाह।

उदा0– तुचो जोड़ा आँईख फुटली, नी दखा देयेसे कायनूं ? मनुक के खुंदुन नाहकेसे।

♠ **टिरटिरी, उपरे पुरानी ।**

टिरटिरी अर्थात् चोट लगने पर जांघ में होने वाली गुठली या गोही। गुठली के उपर एक और गुठली।

♣ मुसीबत आ बनना।

मुसीबत पड़ना, अचानक विपत्ति आ पड़ना।

उदा0– गाड़ा फांदलो बेरा असगुड़ चो फुसकतोर उपर ले जुआंड़ी चो दुय गोंदा होवतोर टिरटिरी उपरे पुरानी होली।

♠ **टींग–टाँग लोहरा, बासी भात खावरा ।**

शोर भरे दिन में परिश्रम करना और बासी खाना।

♣ परिश्रम का फल न मिलना।

उदा0– डोंगरी के उलटाले मान्तर टींग–टांग लोहरा, बासी भात खावरा असन होली, केंव गेली जाले मुसा

♠ **टुई ने निहांय लेंगटी, मुंडे मोंगरा फूल ।**

तन में कपड़ा नहीं किन्तु सर में मोंगरे का फूल।

दिखावापन।

♣ निर्धन व्यक्ति का धनी–मानी व्यक्तियों के साथ मित्रता करने का प्रयास।

उदा0– 'घरे खावतो काजे निहांय मान्तर संग दखा बड़े–बड़े चो एकय बलुआत टुईं ने निहांय लेंगटी, मुँडे मोंगरा फूल।'

♠ **टोण्डकहीन बायले चो लागुन,**
कावरा बले छानी ने नी बसे ।

झगड़ालू महिला के कारण कौआ भी छत में नहीं बैठता।

उदा0– ए टोण्डकहीन बायले चो झगड़ा के नी सांगा, हुनचो लागुन कावरा बले छानी ने नी बसे।

♠ **टोण्ड दखुन बीड़ा,**
पिंडा दखुन पीढ़ा ।

♣ पक्षपात करना। सामर्थ्य के अनुसार मुंह देखकर बीड़ा अर्थात् पान और पिंडा अर्थात् पिछवाड़ा देखकर आसन देना।

उदा0– मंय जानलें आपलो बेटा काजे बेटी देयेदे बलुन हुनचो जुगे चे मानदान करेसे, मुंह के दखुन बीड़ा आउर पिंडा के दखुन पीढ़ा ।

♠ **ठग जाने ठग चो भासा ।**

ठग की भाषा ठग ही जानें।

♣ जो व्यक्ति जिस स्थान या समाज में रहता है, उस स्थान या समाज की भाषा समझ में आती है।

उदा0– आमि काय जानूं ठग चो भासा, ठग जाने ठग चो भासा ।

♠ **ठाबरी चो नंव नांगर, दखलो नें गोटोक नांई ।**

झूठे का नौ हल, देखने में एक भी नहीं।

♣ गाँव में जब लोग काम नहीं करते, वे बैठ कर ताश, चौपड़ या खिड़खिड़ी खेलते रहते हैं, गप्प मारते हैं या फिर अराजकता फैलाते हैं, अपनी कमजोरियों को छिपाते हैं। बढ़ा–चढ़ा कर अपना बखान करते हैं। इसी शेखचिल्ली को उजागर करने वाली यह कहावत है।

उदा0– टाबरी बरन चो आय ना, भोरसा करतोर नुहाय, ठाबरी चो नंव नांगर, दखले गोटोक नाई।

♠ **ठेलाहा बनेया, हलाए कन्हेया ।**

बेकार बैठा बनिया, कमर हिलाता है।

♣ व्यर्थ कार्य में उलझे रहना।

उदा0– गदेया भरलो धन ने बनेया काय करदे ? कन्हेया चे हलाएदे ?

♠ **ठेलाहा बनेया काय करे,**
गदेया चो धान के गदेया ने भरे ।

बेकार बैठा बनिया क्या करे ? इस कोठी का धान उस कोठी में भरे।

♣ व्यर्थ कार्य में समय व्यतीत करना।

उदा0– ठेलाहा चो बुता तो, ए गदेया नाहले हुन गदेया ।

♠ **डांडे मारलो पानी, चांडे नी अदरे ।**

रास्ते में गिरा हुआ पानी की निकासी जल्दी नहीं होती।

♣ समय देख कर धैर्य से कार्य करना।

उदा0– झपके कर बल्लो ने काहाँ ले होयदे, डांडे मारलो पानी झटके नी अदरे।

♠ **डेंगा चो मुंडे दुय ठेंगा ।**

उँचे व्यक्ति को पहले ही डंडा पड़ता है, अर्थात किसी कार्य का दोष उस व्यक्ति पर मढ़ा जाता है, जो कार्य बिगाड़ने वालों में पहले दिखाई पड़े या जो आगे रहे ।

♣ दोष मढ़ना। चालाकी दिखाना।

उदा0– पुरे पुरे होतोर नोहांय बूता नसलो ने बदी करूआत, जोन मनुख डेंगा हुनचो मुंडे ठेंगा।

♠ **डोकरा रूपु, नावा पाठ पड़े ।**

बूढ़ा तोता नया पाठ पढ़े।

♣ बूढ़ा तोता भी कहीं पढ़ता हैं ? बुढ़ापे में कुछ सीखना मुश्किल होता है। मान्यता के अनुसार, तोता एक बार जो सीख लेता है जीवन भर उसे रटता रहता है, चाहे कितना भी बूढ़ा हो जाय किन्तु, बुढ़ापे में वह नया सीखने के योग्य नहीं होता। लोक जीवन में लोकोक्ति के रूप में इसे प्रयोग के तौर पर कहते है कि डोकरा रूपु अर्थात् बूढ़ा तोता बूढापे में

नया पाठ पढ़ता है।

जैसेः– 'डोकरा पढ़ई बाटे जाते रले मान्तर डोकरा रूपु बले नावा पाठ पढ़ुआय?'

♠ **तरई ने पानी नाईं, मंगरी पोसेया चो हरबर ।**

तालाब में पानी नहीं, मछली पालक का उतावलापन।

♣ दिवास्वप्न ।

उदा0– धन कमातो काजे बले धन लागुआय, तरई ने पानी नाईं मंगरी पोसतो काजे हलवाल होले नोकसान चे होएदे ।

♠ **तेली चो तेल के दख आउर तेल चो धार के दख ।**

तेली का तेल देखो और तेल की धार देखो।

♣ धैर्य से काम लेना।

उदा0– धर सकल नी होव ना, तेल के दख आउर तेल चो धार के दखुन बुता कर।

♠ **दान दिलो गाय चो दांत दखतोर नुहाँय ।**

दान के गाय के दाँत नहीं देखे जाते ।

♣ मुफ़्त में मिली वस्तु के गुण–अवगुण नहीं देखे जाते।

उदा0– काय के दखसीस गुनुक? काचोय दान दिलो गाय चो दाँत के दखतोर नुहाय।

♠ **दईब चो दिलो जीव के, चाउर नी पुरलोर हानुक तो नी सकें ?**

ईश्वर का दिया हुआ जीवन, समय से पहले कोई ले नहीं सकता।

♣ इंतजार करना।

उदा0– दुय–चार बरख जाउक दियास ता, दईब चो दिलो जीव के, चाउर नी पुरलोर हानुक तो नीहोय।

♠ **दुय दिन चो हाट, आजि मरले काली दुय दिन ।**

दो दिन की दुनियाँ, आज मृत्यु हो तो कल दो दिन।

♣ कर्म करते रहना, अग्रसर रहना।

जीवन में शरीर के साथ कष्ट लगा रहता है, बुद्धिमान व्यक्ति युक्ति से और बेवकूफ रो–रोकर जीवन जीता है। जो मन में इच्छा हो उसे तत्काल कर लेना चाहिए।

उदा0– आजि कालि करले नी होय सरलगा सारलो ने होयदे। दुय दिन चो हाट के फेर लमाउन नी बसतोर आय।

♠ **दुला के सुखलो पतरी, बजनेया के थारी ।**

दुल्हा को सूखा पत्तल, वादक को थाली।

♣ बेतरतीब काम करना।

उदा0– कसन दुला के पतरी ने आउर बजनेया के थारी ने दिलो असन बनालीस, तुके धरून आन बलतो के मारून आनसिस।

♠ **दुनों हात ने लाड्डू, बोबो ।**

दोनों हाथों में लड्डू ।

♣ दोनों ओर लाभ।

उदा0– काहांय हांडा के भेटलो कायनू, मांगुन खावतो बीता आजि दुनों हाते लाडू–बोबो।

♠ **देव इले टांगरा मुंडे बले एउआय ।**

दैवीय शक्ति के आरूढ़ होने के लिए सिर में बाल होना अनिवार्य नहीं, बिना बाल अर्थात् टकले सिर वाले के उपर भी आरूढ़ होती है।

♣ भाग्यशाली होना।

उदा0– पड़ेया भुंय ने एसु अच्छाय धान होली, मसागत करलो ने टांगरा मुंडे बले देव एउआय।

♠ **धीर रले खीर आय ।**

धैर्य रहने से खीर है।

♣ धैर्य का फल मीठा होता है।

उदा0 – आजि चे खाउन आजि चे मरेदे असन धिरजा निहांय, धीर रले सबे दिन खीर आय।

♠ **धुका चो माल फूका ने गेली ।**

धौंकनी का माल फूकने में गई।

♣ मुफ्त का माल मुफ्त में जाना।

उदा0– फोकाहा चो माल कितरो दिन चलती, धुका चो माल फूका ने गेली।

♠ **नंदी ने मछरी, टिकरा ने मोल ।**

जल में मछली, मैदान में मूल्याकंन।

♣ बिना देखे मोलभाव। जल्दबाजी।

उदा0– मोल करतो पूरे जिनीस के दखुन मोल करलो ने तो अच्छा आय नी दखलो ने तो नंदी ने मछरी आउर टिकरा ने मोल असन होयदे।

♠ **नाक चो सिंगान ।**

नाक का रेमट।

♣ निक्रिष्ट ।

उदा0– तुचो ले बड़े–बड़े मोचो लगे एउन पाँय पड़सत तुय काहाँ नाक चो सिंगान ?

♠ **नावा बयला चो चिकन सींग,**
हिंड रे बयला, टिंग –टिंग ।

नये बैल का चिकना सींग और चाल दोनों चितेरे होते हैं।

♣ प्रारंभ में देख–रेख, बनाव–श्रृंगार का अधिक ख्याल रखा जाता है, चाहे वह लंगड़ा के भी चले तो अच्छा ही लगता है।

उदा0– नावा–नावा दुय दिन, पाछे तो बुड़गा के कितरय खेदले बले हुतरो जोड़ काहां ले पाएदे।

♠ **नानी मीरी, खुब्बे झार ।**

छोटी सी मिर्ची, तीखापन अत्यधिक।

♣ देखन में छोटन लगे, घाव करे गंभीर।

उदा0– नी लाग बाबू हुनके दखतो ने नानी दखा देयेसे मान्तर नानी मिरी जुगे चे झार आय।

♠ **नाई मामा ले काना मामा आगर ।**

मामा न हो तो काना मामा ही सही।

♣ काम निकालना।

उदा0– आले बूता के सारतोर चे आय, नाई मामा ले काना मामा आगर।

♠ **नानी असन कहनी, गुलाय रात उसनींदा ।**

छोटी सी कहानी, पूरी रात जागरण।

♣ छोटा कार्य किन्तु अधिक कष्टप्रद।

उदा0– नानी असन बूता काजे दिन बूड़ली, नानी असन कहनी काजे गुलाय रात उसनींदा।

♠ **नांगर डांडी चो कडरी ढेटा ।**

अनुभवहीन व्यक्ति की दोषपूर्ण कार्रवाई।

♣ किसी जुगाड़ु लालची का निरर्थक श्रम, काम ऐसा किया कि नांगर की डंडी, छुरे की एक छोटी सी मूँठ बन कर रह गई है। यहाँ हल की लकड़ी रचनात्मक दृष्टिकोण को उजागर करती है और छुरे की मूँठ, हिंसा को व्यक्त करती है।

उदा0– 'फोकाहा होली, नांगर चो डांडी बनायेन्दे बलते–बलते कडरी ढेटा बनली।'

♠ **नांगर जितली बूटा फिटली ।**

हल आगे बढ़ गया, पौधा चूक गया।

♣ हाथ से अवसर निकल जाना।

उदा0– दिन भर ने गोटोक मोटोर, हुन बले जितुन गेली, नांगर जितली बूटा फिटली।

♠ **नी खांय–नी खांय, तीन टाठी,**
गोसेया दखुन दतुन काड़ी ।

♣ दिखावा पन। यह कहावत किसी स्त्री की चरित्रहीनता को प्रदर्शित करता है।

उदा0– लुकाउन खावतोर टकर पड़ली से, एबाटे नी खांय–नी खांय तीन टाठी, गोसेया दखुन दतुनकाड़ी।

♠ **नुआ नुआ नव दिन, जुना सव दिन ।**

नया नौ दिन, पुराना सौ दिन ।

♣ नई वस्तुओं का विश्वास नहीं होता, पुरानी वस्तु टिकाउ होती है।

उदा0– आले दखवां नुआ–नुआ नव दिन जुना सव दिन चो होउ आय।

♠ **नुआ हांडी, झिझरी कानी, संगे जावाँ तरई पानी ।**

नया हंडी, बारीक रिसना, साथ चलो तालाब की पानी लेने।

♣ एक युवती अपनी सहेली को छेड़ती है कि, तू नईं हंडी है, लेकिन किस काम की। जिस तरह नईं हंडी में पानी ठहरता नहीं है रिसता चला जाता है वैसे ही तुझमें कई छेद (दोष) हैं, पानी तुझमें ठहर नहीं पायेगा, फिर भी यदि साथ चल सको तो चलो।

उदा0– जों री तरई घाटे पानी काजे एउआस, मान्तर सुन दखलो लोक बलदे, नुआ हांडी झिझरी कानी, संगे जायेसे तरई पानी।

♠ **नोखे नाहलो चोचो, कन्हेया ने खोचो ।**

♣ अपरिहार्य वस्तु का प्राप्त होना।

उदा0– केबय नी दखलो धन के दखाते बुलेसे, नोखे नाहलो चोचो– कन्हेया ने खोचो।

♠ **पर भरोसा, नांगर खोसा, हात भर–भर मेंछा ।**

♣ दूसरों पर निर्भर रह कर कार्य करना।

अपना कार्य दूसरों के उपर छोड़कर आश्रित रहना कभी–कभी नुकसानदेय होता है। बड़ी–बड़ी लच्छेदार और बनावटी बातों में भी नहीं आना चाहिए।

उदा0 – पचास एकड़ रलो थाने बले, पर भरोसा नागर खोसा।

♠ **पानी ने रहुन, मंगर संगे बयेर ।**

पानी में रहकर मगर से बैर।

♣ आश्रय देने वाले से शत्रुता नहीं करनी चाहिए।

उदा0– 'सावकार रतो काजे घर कुड़ेया दिलो, एबे हुनके झगड़ा लागसीस, पानी ने रहुन मगर संगे बयेर करतो नोहाँय।'

♠ **पिला मन के लागा नाई,**
तिल मरान्ह ने हागा नाई ।

बच्चों की उम्र, चँचलता भरी होती है। कई बार उनसे लगना मुसीबत मोल लेना होता है। उनकी हाजिर–जवाबी देखते बनता है। कई बार कुछ मामलों में व्यक्ति निरूत्तर हो जाता है। उसी तरह ग्रामीण अंचल में कहावत के माध्यम से कहा गया है कि जिस तरह तिल के खेत में शौच जाना मुसीबत भरा होता है। शौच के दौरान तिल के पौधों का अंश चुभने का भय होता है, उसी तरह बच्चों से बिना सोचे–समझे लगना मुसीबत भरा हुआ होता है।

♣ मुसीबत मोल लेना।

उदा0 – पिला मन के नी जानुन लागतो नुहाँय, नाहले तिल बाड़ी ने हागलो माहा होयेदे।

♠ **पिला बाय, बुय–बाय ।**

बच्चों की उम्र, चँचलता भरी होती है।

♣ विवेकहीनता।

उदा0 – पिला मन के भुति तिहारलो ने कसन होयदे, पिला बाय, बुय–बाय।

♠ **पिला बाय, बुय–बाय,**
पिंडा बाटले जीव जाय ।

बच्चों का स्वभाव जी का जंजाल, शैतानी करना।

♣ चँचलता। कभी–कभी छोटे बच्चे इतने शैतान होते हैं कि उन्हें समझाना भी बड़ा कठिन होता है। बालहठ के सामने किसी का वश नहीं चलता। ऐसे में उन बच्चों के लिए यह कहावत ही प्रचलित हो गया कि इनके प्राण भी सीधे न निकल कर पिछवाड़े से निकलता है।

उदा0 – ओगाय किंदलदांय नी रए, डंडिक तो ओगाय रतो, तेबे तो बलुआत पिला बाय, बुय–बाय, पिंडा बाटले जीव जाय।

♠ **पिला बाय बुय–बाय, खंगार संग जेहेल जाय ।**

विवेकहीन बालक का चोरों का साथ हो तो जेल जाना तय है।

♣ विवेकहीनता। कुसंगत से प्राण जाने का भय रहता है।

उदा0 – दुय दिन खंगार मन संगे मजा मारलो, अदांय खंगार चो संग जेहल गेलो ।

♠ **पूरे–पूरे मलमलतोर ।**

सामने–सामने होना।

♣ अयोग्यता के बावजूद आगे होना।

उदा0– नी जानून बले पूरे–पूरे होतोर अच्छा नोहांय।

♠ **पूरन पान टल–मल,**
रांडी चो बेटी मल–मल ।

चंचलता, उच्छश्रृखंल होना।

♣ जिस तरह पूरन नामक पौधे का पत्ता चंचलता लिए हुए होता है, हल्के वायु के झौंके में भी चलायमान, कंपित होता रहता है, उसी तरह रांडी अर्थात् बेवा स्त्री की बेटी की तुलना चंचलता से की गई है।

उदा0– डंडिक गोटोक लगे तो बसतो, कोनी लगे दखा मल–मलते रहेदे ।

♠ **पेट चो नाव जगले जीता,**
सांज बेरा भरलो ने बिहाने चुछा ।

पेट का नाम सबसे जुदा, शाम को भरा तो प्रातः फिर खाली।

♣ उदर के लिए सदैव प्रयासरत रहना, किन्तु फिर भी पेट भरता नहीं ।

उदा0– कितरय कमालो ने बले सांज बेरा भरलो ने बिहाने चुछा।

♠ **पेटे नाहलो पिला, राम–लयखन नाव ।**

पेट में बच्चा नही, राम–लक्ष्मण नाम।

♣ समय से पूर्व काम करना, उतावलापन।

उदा0– खावतो काजे भंडवा नीहाय मुंडा माहाल चो सपना, पेटे नाहलो पिला, राम–लयखन नाव।

♠ **फुलसुँदरी बेरा ।**

फूल सा सुंदर और प्यारा समय ।

♣ समयमान।

एक ऐसा अवसर जब संध्या होने को हो, और हल्की बारिस भी हो रही हो, अचानक धूप की रौशनी धरती पर बिखर जाये। इस रौशनी में धरती की सारी चीजें खूबसूरत लगने लगती है। इस बेला को हल्बी लोक भाषा में "फूलसुंदरी बेरा" अर्थात् फूल सा सुंदर समय कहा जाता है।

उदा0– केबय फूलसुंदरी बेरा तुके दखुक एयेन्दे।

♠ **फोकाहा मिरले माटीतेल बले सुआद ।**

मुफ्त में अगर मिले तो मिट्टीतेल भी मीठा लगता है।

♣ मुफ्तखोरी।

कुछ लोगों को मुफ्त का माल उड़ाने में काफी आनंद आता है। हर वक्त मुफ्त के माल की तलाश होती है। इसलिए कहा जाता है कि फोकट मिलने पर मिट्टीतेल भी पी जाउंगा।

उदा0– 'आजी बीजापुरिया घरो बिहा आय मने ना ? काईं–जाईं चेपटी चो बले हिसाप होउक सके। असन आय? जाले मँय तियार आसें फोकाहा मिरले तो मँय माटीतेल बले पियेन्दे।

♠ **फोकाहा खाउ, दसराहा जाउ ।**

मुफ्त का खाना, दशहरा जाना।

♣ मुफ्त की माल खाने वाला।

उदा0– ए मनुख संगे नी होय, कांई के बले होओ, फोकाहा होतोर आय, सबे दिने फोकाहा खाउ–दसराहा जाउ, आय।

♠ **बड़ी सुख, सुख–टाकरा सुख ।**

बड़ी सूखाते–सूखाते, टोकना का सूख जाना।

♣ लापरवाह होना।

उदा0– काली सारून देस बलतो के बूता के लमाउन दिलो, बड़ी सुख–सुख टाकरा बले सुखली।

♠ **बामन नाता सिका पेंदी ।**

ब्राह्मण का पारिवारिक संबंध सीका के पेंदी के समान।

♣ संबंधों में उलझना ।

कभी–कभी सामाजिक व्यवस्था और विवशता भी कहावत या लोकोक्ति के रूप में सामने आ जाते हैं। जब कभी किसी समुदाय के लोग एक स्थान से दूसरे स्थान में जाकर बस जाते हैं या विस्थापित हो जाते हैं और उनका मूल स्थान से कोई लेना–देना नहीं होता। कालान्तर में उस समुदाय के लोग आपस में रोटी–बेटी का संबंध भी अपने उस समुदाय से स्थापित करने लगते हैं जो कभी उनके साथ ही आकर बस गये थे। ऐसे में उनका पारिवारिक संबंध आपस में और भी घनिष्ठ हो जाता है। ऐसी स्थिति में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का कई मायनों में एक से अधिक पारिवारिक संबंधी होता है। एक व्यक्ति पितृकुल की ओर से चाचा भी होता है तो मातृकुल की ओर से दादा होता है, वहीं अन्य संबंधों के आधार पर भतीजा होता है। इसलिए कहा जाता है कि बामन नाता सिका पेंदी, अर्थात् 'सिका' जिसका 'पेंदी' नहीं होता, उस तरह का होता है।

उदा0– तुमचो लग नाता बले बामन नाता सिका पेंदी असन आय।

♠ **बापा ना पूता चोंगा–चोंगा मूता ।**

डींग हांकना।

♣ घी खाया बाप ने सूंघो मेरा हाथ।

दूसरों की कीर्ति पर डींग मारने वालों पर उक्ति।

उदा0– धन नाहलो मुंडा माहाल बाधेन्दे बलतो बीती गोठ बापा ना पूता, चोंगा–चोंगा मूता बलुक होयसे।

♠ **बाहरे सोभा, भीतरे रोब–रोबा ।**

बाहर शोभायमान, अंदर से बेढंगा।

♣ दिखावापन।

उदा0– रूप–रंग तो अच्छाय आसे मान्तर गोठ–बात ने तो बड़गा मारलो असन। बाहरे सोभा मान्तर भीतरे रोब–रोबा।

♠ **बाप पुरखा न खाये पान, दांत गिजड्डन निकरे परान ।**

पिता, परदादा ने कभी पान नहीं खाया, दांत निपोरा छूटे प्राण।

♣ सामर्थ्य से अधिक दिखावा।

उदा0– बाप –दादा केबय मोटर नी चेगला आजि भुईं के बिकुन मोटर घेनलो से। पाछे बलदे बाप पुरखा न खाये पान, दांत गिजडुन निकरे परान।

♠ **बारा घाट चो पुजारी ।**

बारह घाट का पुजारी।

♣ अधिक व्यस्त होना, समय पर काम पूरा न करना।

उदा0– 'झटके इया मामा बल्ले, बिहाने एतो लोक सांझ होली बारा घाट चो पुजारी होले असने आय।'

♠ **बांजिन काय जाने पेटेहारिन चो दुखा ।**

बांझ औरत प्रसव पीड़ा क्या जाने।

♣ वो क्या जाने पीर पराई, जाके पैर न फटे बेवाई।
पीड़ा को सहकर ही समझा जा सकता है।

उदा0– 'बांजिन के दखा कसन पुरे–पुरे होयसे, हुन काय जाने ता पेटेहारिन चो दुखा।

♠ **बिहान पहार चो उमंडलो झगड़ा,**
आउर सांज बेरा चो मुरियालो बरसा,
झटके गुचु नोहांय ।

सुबह का झगड़ा और शाम की झड़ी जल्दी नहीं हटता।

♣ मुसीबत गले पड़ना।

उदा0– रोजे–रोजे पानी बरसा बले अच्छा नुहाय, आजि फेर सांज बेरा पानी मुराली से, बिहान पहार चो झगड़ा आउर सांज बेरा चो झड़ी झटके गुचु बले नोहांय।

♠ **बिहाने बेड़ा, सांज के गाय,**
लेख नी करले, माटी के खाय ।

सुबह खेती और शाम को अपने पालतू पशुओं को भली–भांति न देखने वाला व्यक्ति बाद में पछताता है।

♣ असंपन्नता।

उदा0– घर चो जमक के दखा–राखा नी करलो ने, पाछे माटी के खावलो

असन होएदे।

♠ **बिन गोसेया चो गाय, रन–भन जाय ।**

बिन मालिक की गाय, इधर–उधर जाय।

♣ आवारापन, नियंत्रण नहीं होना।

बिना स्त्री के पुरूष का कोई ठिकाना नहीं, उसी तरह सही देखभाल के अभाव में संतान बिगड़ जाता है, और बिन मालिक के गाय भी इधर–उधर भटकती रहती है। यहाँ घर गोसेया का अर्थ, घर का मालिक और घर गोसाईन का अर्थ घर की मालकिन से है।

उदा0– घरे सियान मनुख रलो ने तो, बिन गोसेया चो गाय रन–भन जाय।

♠ **बिलई चो टोडरा ने, सुकसी माला ।**

बिल्ली के गले में सूखी मछली की माला।

♣ भक्षक, रक्षक नहीं हो सकता।

उदा0– चोरनी गाय चो पूरे कांदी बाचुन रओ बल्ले होयदे, बिलई चो टोडरा ने सुकसी ओरालो असन होली ?

♠ **बिलई खोजे दांव, माछी खोजे घाव ।**

बिल्ली को मौके की तलाश और मक्खी को घाव की तलाश ।

♣ अवसर की प्रतीक्षा।

उदा0– चोरनी बाछी मवका दखुन फेर तो बाड़ी ने भिड़ली, बिलई के दांव आउर माछी के घाव दखा देओ ।

♠ **बुलुन–बुलुन पाहना, नकटी पिंदे गाहना ।**

घूम–घूम कर मेहमान बनना, नाक कटी हो फिर भी गहना।

♣ दृढ़ इच्छाशक्ति का होना।

उदा0– गाहना रलो लोक के काय, बुलुन–बुलुन पाहना, नकटी पिंदे गाहना।

♠ **बुड़गा बेंदरा खुट ने बसे, आपने पादे, आपने हाँसे ।**

वयस्क बंदर ठूंठ में बैठे, स्वयं कहे स्वयं हंसे।

♣ मति मारा जाना।

उदा0— बयहा होवलो कायनू ! आपने पादुन आपने हांसेसे।

♠ **बोकड़ा चो गेली जीव, खावतो लोक के मंज़ा नाई ।**

बकरे की गई जान, खाने वालों को मजा नहीं आया।

♣ भारी या कठिन काम करने पर भी सराहना न मिलना।

उदा0— सरलो पाछे कमानी के दोस दिलो ने काय होयदे, बोड़ा चो जीव गेली सुआद नी लागली बल्लों ने कसन होयदे ?

♠ **भार बिहा बेरा कुमडा रोपा ।**

विवाह की व्यस्तता में कद्दू के बीज लगाना।

♣ आवश्यकता से अधिक व्यस्त।

उदा0— एब्बे चे फेर फाबली तुके, काली आव एबे नोहांय ता भार बिहा बेरा कुमडा रोपा।

♠ **भिजलो मुंड ने, छुरा चो काय डर ।**

भिगे हुए सिर पर उस्तरे का डर नहीं।

♣ कार्य करने का मन बना लिया फिर, कष्ट सहने को डर कैसा।

उदा0— बरसा होवो कि घाम होवो, बूता के चांडे सारून देतोर आय। भिजलो मुँड ने छुरा के डरतोर नुहाँय।

♠ **मरलो बाछी, बामन चो मुंडे ।**

मरी हुई बछिया, ब्राह्मण के सिर।

♣ व्यर्थ दान।

उदा0— बाछी मरतो बरन दखा देतो के मरतो पूरे बामन के हाक देउन दान देउन दिला। काय पुन मिरेदे हुन मन के ?

♠ **मसागत नाहलो मूसा मास खाउक नी मिरे ।**

मेहनत के बिना चूहे का मांस खाने को नहीं मिलता।

♣ कठिन परिश्रम।

उदा0— काँवड़क तेतर के पाडुन हाटे बिकुन आन, मंडई काजे फटई घेनवाँ, मसागत नी करलो ने मूसा मास काहाँ खाउक मिरेदे।

♠ **मया टूटली कि बूटा फिटली ।**

प्यार टूटते ही संबंधों में अंतर आना।

♣ संबंध टूट जाना।

उदा0– दुय दिन चो संग, मया टूटली कि बूटा फिटली।

♠ **मछरी सुख–सुख, टाकरा सुख ।**

मछली को सुखाते हुए, टोकना भी सुख जाता है।

♣ संगत को दोष।

उदा0 – नीच संग धरलो ने मछरी संगे–संगे टाकरा बले सुखुआय।

♠ **मतवार चो टोंड के कुकर चाटे ।**

शराबी का मुँह कुत्ता चाटे।

♣ शराब खोरी, इज्जत गंवाना।

जब व्यक्ति अत्यधिक शराब का सेवन करने लगता है और गिरने–पड़ने की अवस्था में कभी–कभी सड़क के किनारे गिरा–पड़ा मिलता है। ऐसी अवस्था में देखने को मिलता है कि कुत्ता शराबी का मुँह चाट रहा होता है या उसके उपर पेशाब करके चला जाता है।

उदा0– 'असन बले मतवारी करतोर आय, टोंडे कुकुर मुतुन गेलो, सोर निहाँय।'

♠ **मानले देव नाहले पखना ।**

मानो तो देवता नहीं तो पत्थर।

♣ मानों तो आदर अन्यथा उपेक्षा। सम्मान करने पर सम्मान की अपेक्षा करना।

उदा0– 'दख ना सियान देव के मानसेसा देउक लागेदे, मानले देव आय नाहले चुच्छाय पखना।'

♠ **मांय गुन चो बेटी,**
तेल गुन चो रोटी (बोबो) ।

♣ जैसा फल वैसा गुण। ग्रामीण परिवेश में कहा जाता है कि जिस तरह मां होगी, उसकी बेटी भी वैसी ही होगी। गुणी व्यक्ति का पुत्र गुणी ही

होता है। उसी तरह कड़ाही में, जिस तरह का उत्तम तेल होगा उस तरह पककर पकवान गुणवान और स्वादिष्ट होगा।

उदा0– लंग–लंगा बाढ़ते जायेसे, काचो बेटी आय नूं ? मांय गुन चो बेटी असन आउर तेल गुन चो रोटी।

♠ **मांय चो पेट के जान कि कुम्हार चो आवा के जान ।**

माता के गर्भ को जानो या कुम्हार के आवा को जानों।

♣ संतान सभी एक सी नहीं होती।

उदा0– 'अबगो लेका–लेका बल्लो ने नी होय। कुम्हार चो आवा के जान कि माँय चो पेट के, गोटकी बरन चो भंडवा आवा नी पाके।

♠ **मास खावले मास नी बाड़े ।**

मांस खाने से, मांस नहीं बढ़ता ।

♣ दूसरों को दुख देकर स्वंय सुखी नहीं रह सकते ।

उदा0– आले बुड़ली जाले बुड़ली, मास खावले मास नी बाड़े, जीव बाचली। जीव रलो ने फेर कमाउन खावसे ।

♠ **मुंड चो नाव कपार ।**

सिर का नाम ही कपार या माथा।

♣ अनावश्यक बहस करना। जब कोई अनावश्यक बहस करता है तो कहा जाता है कि मुंड अर्थात् सिर कहो चाहे कपाल अंग तो सिर ही है ।

उदा0– होय ना होय मुंड चो नाव चे कपार आय, बिरबिरा करून, जीव के खादलो।

♠ **मुंडरी कसेला ।**

बिन पेंदे का लोटा।

♣ अस्थिर विचारों वाला, ढुलमुल कोशिशें।

उदा0– ए बले मुंडरी कसेला आय। जोन बाटे खाउक मिरली हुनी बाटे भिड़ुन दिलो।

♠ **राजा बले, दाड़ी हाले ।**

'राजा बोले और दाढ़ी हिले।

♣ हुक्म की तामील।

राजा के हुक्म से एक बूढ़ा आदमी भी सक्रिय हो जाता है। इससे यह जाहिर होता है उन दिनों बूढ़ों को भी नहीं बख्शा जाता था, राजा के आदेश पर कार्य करना होता था।

उदा0– 'राजा बले दाड़ी हाले बल्लो असन हुन बरमसेया चो असन तुय बले करते गेलीस।

♠ रीस खाए आपन के, बुध खाए बीरान के ।

क्रोध शरीर को और बुद्धि समाज को नष्ट करती है।

♣ क्रोध करना।

उदा0– रीस खाए आपन के, बुध खाए बीरान के। जुगे रीस करलो ने देहें चो नास होयेदे। रीस ले लाफी रलो ने देहें चो सुख आय।

♠ लड़ानी गोठ, पेसानी देव ।

लड़ाई कराने वाली बातें।

♣ चुगली करना।

उदा0– डंडिक दखुन नी सहे, दखते खन लड़ानी गोठ के निकराउन देयेसे।

♠ लिखड़ी ने संवसार ।

छोटी–छोटी वस्तु से संसार।

♣ बूंद–बूंद से सागर।

सबसे थोड़ा–थोड़ा मिले तो काम पूरा होता है।

उदा0– गोटोक–गोटोक आना जुहाउन संगाउन रले गुनुक तो आजि लिखड़ी ने संवसार बनाले, कसन ?

♠ लोहरा सार के जान कि, कचहरी के जान ।

अधिक व्यस्तता।

♣ जिस तरह कचहरी में किसी न किसी कार्य से लोगों का आना जाना लगा रहता है, वैसे ही ग्राम्य जीवन में खेतीहर किसानों को बारहों महिने किसी न किसी कृषि–जन्य औजारों की आवश्यकता पड़ती रहती है

और उसे बनाने के लिए लोहार के यहाँ जाना होता है। इसलिए कहा गया है कि 'कचहरी के जान कि लोहरा सार के जान' दोनों ही स्थान में लोगों का आवागमन बना हुआ है।

उदा0– काय झोप, इलो लोक काईं ना काईं बूता धरून अमरते रला, कचहरी के जान कि लोहरा सार के जान ।

♠ **सरग ने थुकलों ने, आपलो टोण्डे उफड्डुआय ।**

आकाश में थूकने से अपने मुंह में ही गिरता है।

♣ निंदा का फल, स्वंय को भोगना पड़ता है।

उदा0– समदी–जोंआय के बाखनलो ने काय होयेदे, एबे सरग उपरे थुकले काचो उपरे उफड़ेदे ?

♠ **सरगी, सिवना, भतरा जीवना, बामन जीवना सुख ने, चिमटा, मुटला हाजुन गेले, लोहरा मरे भुके ।**

साल, सिवना जैसे वनोपज से जिस तरह आदिवासी का जीवन, ब्राम्हण का जीवन सुखमय किन्तु चिमटा और हथौड़ी गुम हो जाने पर लोहार भूखों मर जायेगा क्योंकि ये औजार ही उसके जीवन में साथ हो तो ही कमाकर जीवनयापन कर सकता है।

♣ जीवन के प्रति सर्तक रहना, सतत् कर्म करना।

उदा0– कोड़की रापा के जतन करूंन संगाव, नाहले सरगी, सिवना, भतरा जीवना, बामन जीवना सुख ने, चिमटा, मुटला हाजले, लोहरा मरेदे भुके, असन होयेदे।

♠ **सव सोनार चो गोटोक लोहरा चो ।**

सौ सुनार की एक लुहार की ।

♣ निर्बल की सैकड़ों चोटों से सबल एक ही चोट से मुकाबला कर लेते हैं।

उदा0– रोजे दिना चो टकर पड़ली, आजि एओ ता रोजे दिना सोनार चो पलटा आजि लोहरा चो मार के दखेदे ।

♠ **सहरालो बोहारी, सुसरा के जाए ।**

अधिक प्रशंसा पाने वाली बहु, जेठ को जाये ।

♣ समझदार व्यक्ति के द्वारा बुरा कार्य करना ।
कभी–कभी अधिक प्रशंसा भी घातक सिद्ध होता है ।

उदा0– 'आनलो दिन ले खुबे सहराला, दखते राहा सहरालो बोहारी सुसरा काजे नी गेली जाले बलासे ।'

♠ **सलसला के गोंद, बाकटा के छांड ।**
सीधे वृक्ष को काट, टेढ़े–मेढ़े को छोड़ ।

♣ सीधेपन का फायदा उठाना। सीधे मनुष्य पर सभी अपना प्रभाव जमाते हैं, टेढ़े मनुष्य को छोड़ देते हैं।

उदा0– आमचो घरो पीला आय गुनुक लागला, दूसर घर चो पीला के लागुन दखोत मने।

♠ **संड–संड चो लड़ई ने उसरी बूटा चो मरनी ।**
दो सांडों की लड़ाई में उशिर पौधे का नुकसान ।

♣ बड़ों की लड़ाई में गरीबों का नुकसान।
जोगी–जोगी लड़ पड़े, खप्पड़ का नुकसान। यहाँ उसरी का अर्थ खस के पौधा से है।

उदा0– 'दुय झान चो लड़ई ने सियान होतोर नोहांय, नाहले संड–संड चो लड़ई ने उसरी बूटा चो मरनी होउआय।

♠ **सासा रहोत ले आसा।**
जब तक साँस रहेगी, तब तक आशा।

♣ अंतिम साँस तक प्रयास करना।

उदा0– 'जीव रहोत ले मया करेन्दे, मँय सासा रहोत ले आसा करतो लोक आंय।

♠ **सावन घोड़ी, भादंव गाय,**
मांघ महेना, भईंस पकाए ।
श्रावण मास में घोड़ी, भादों मास में गाय और माघ के महिने में भैंसी का प्रसव अच्छा नहीं माना जाता।

♣ समय के विपरीत कार्य करने से हानि का भय बना रहता है।

उदा0– मंय तो आघे सांगुन रले, भांदो महेना चो गाय पकातो बीती अच्छा नुहांय बलुन।

♠ **सोन चो दोस होले सोनार के दोस देतोर नुहाँय ।**

जब अपने ही सामान में खोट हो तो दूसरों पर आरोप नहीं मढ़ना चाहिए।

♣ आरोप मढ़ना, दोष देना।

उदा0– 'काय करवाँ आमचो बेटा पिला मन संगे रहुन मतवारी सिकलो, एबे अडरा चाल काजे काके दोस देवां, आपन चो सोन ने खोट होले, दूसर के काय दोस देवां।

♠ **हरदी चो रंग आउर परदेसी चो संग ।**

हल्दी का रंग और बाहरी व्यक्ति का साथ नुकसानदेय होता है।

♣ थोड़ा साथ, प्रभावहीन ।

उदा0– गाँव पारा चो पीला संगे मिसलो ने होती, बाहरेया मन चो संग करले अच्छा नुहांय।

♠ **हाती हिंगसा बिलई करे, दाँत गिजडुन मरे ।**

हाथी की बराबरी बिल्ली करे और दाँत निपोर कर मरे।

♣ देखा–देखी, बराबरी करना।

उदा0– दखा दखी मुंडा माहाल बादेन्दे बल्लो ने नी होय, हाती हिंगसा करले दाँत गिजडुन मरसे।

♠ **हाट जा पटन जा, टाकरा–टाकरा मार खा ।**

हाट–बाजार जाकर, मार खाना।

♣ अनावश्यक विवाद में उलझना।

उदा0 – सोजे हिंडुन घरे एतो पलटा टाकरा–टाकरा मार खावतोर मन होली कायनूं।

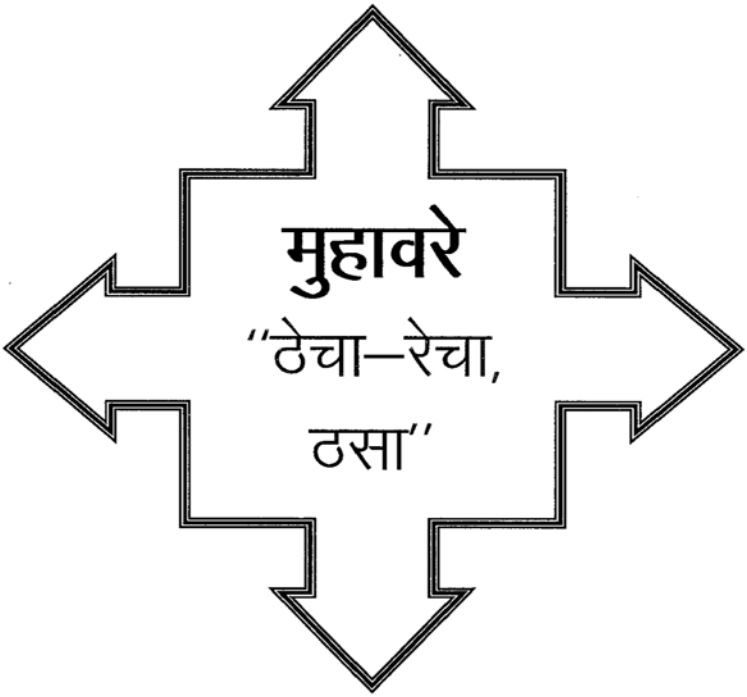
मुहावरे
''ठेचा–रेचा,
ठसा''

मुहावरा
(ठेचा–रेचा, ठसा)

अर्थ विशेष को प्रकट करने वाले वाक्याशं को मुहावरा कहते हैं। मुहावरा पूर्ण वाक्य नहीं होता, इसलिए इसे स्वतंत्र रूप में प्रयोग नहीं किया जा सकता। मुहावरे का प्रयोग करना और ठीक–ठीक अर्थ समझना बड़ा कठिन है, यह अभ्यास से ही सीखा जा सकता है।

मोटे तौर पर कह सकते हैं कि जिस सुगठित शब्द समूह से लक्षणाजन्य और कभी–कभी व्यंजनाजन्य कुछ विशिष्ट अर्थ निकलता है, उसे **'मुहावरा'** कहते हैं। हल्बी में इसे ही **'ठसा'** या **'ठेचा–रेचा'** कहते हैं। मुहावरे किसी न किसी व्यक्ति के अनुभव पर आधारित होते हैं, उनमें इस्तेमाल शब्दों के स्थान पर दूसरे शब्दों का प्रयोग किया जाय तो उनका अर्थ ही बदल जाता है।

मुहावरा अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है बातचीत करना या उत्तर देना। मुहावरा किसी वाक्य का अंग होता है अर्थात् किसी कथन, वक्तव्य या किसी वाक्य को पूर्ण बनाता या उसमें चार चांद लगाता है। दूसरी पहचान यह कि मुहावरा लक्षणा प्रधान होता है।

कोई भी वाक्याशं जो अपने साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को व्यक्त करे, उसे मुहावरा कहते हैं। लोकोक्ति लोक अनुभव से बनती है। किसी समाज ने जो कुछ अपने लंबे अनुभव से सीखा है, उसे एक वाक्य में बाँध दिया है। ऐसे वाक्यों को लोकोक्ति कहते हैं। मुहावरे और लोकोक्ति में अंतर सिर्फ इतना है कि मुहावरा वाक्याशं है और इसका स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं किया जा सकता। लोकोक्ति संपूर्ण वाक्य है और इसका प्रयोग स्वतंत्र रूप से किया जा सकता है।

मुहावरा वाक्यांश होता है, हल्बी लोक भाषा के अनुसार वाक्याशं के अंत में होतोर, जातोर, देतोर, करतोर, पड़तोर, धरतोर, मंडातोर आदि–आदि

संज्ञार्थक क्रियाएँ होती हैं, वाक्यों में प्रयोग करते समय इन क्रियाओं का लिंग, वचन, काल, कारक आदि के अनुसार रूप बदल जाता है।

♠ **अंडखी फुटातोर ।**

अँगुलियाँ फोड़ना।

♣ श्राप देना।

उदा0– आमचो पारा चो झगड़हीन बायले अँडखी फुटाउन–फुटाउन सरापते रली।

♠ **अंडखी दखातोर ।**

अँगुली दिखाना, इशारा करना।

उदा0– लाफी ठिया रहुन अंडखी दखायेसे।

♠ **अंडखा चुहरतोर ।**

अँगूठा चूसना।

♣ खुशामद करना।

उदा0– दुय खंडी धान चो पलटा देउ आस जाले देस नाहले तुचो अँडखा नी चुहरें।

♠ **अंधान मंडाउन चाउर डगर जातोर ।**

चाँवल पकाने के लिए पानी चढ़ा कर चाँवल के लिए जाना।

♣ निर्धनता।

उदा0– मुंडा माहाल बांदतो काजे पयसा काहाँ ले पाउंदे, एथा रोजे अंधान चेगाउन चाउर डगर जाउंसे।

♠ **अंडखी ने नचातोर ।**

अँगुली के इशारे पर नचाना।

♣ वश में करना, इच्छानुसार काम कराना।

उदा0– बड़े बाप चो बेटी आय, घर गोसेया के अंडखी ने नचायेदे।

♠ **अंडखा दखातोर ।**

अँगूठा दिखाना।

♣ मुकरना, देने से साफ इंकार करना।

उदा0– कालि बल्लो गभार के बिकेन्दे बलुन आजि फेर अंडखा दखालो।

♠ आड़की चाबुन नेतोर ।

तिरछा दबाकर ले जाना।

♣ उपकार करना।

उदा0– मरले गाँव चो लोक नेउन पकाउन देदे, तुचो नी रले कोनी आड़की चाबुन नी नेदे ? गुलाय गाँव चो लोक मके जानोत।

♠ आका–बाका दखतोर ।

इधर–उधर देखना।

♣ घबरा जाना।

उदा0– हाते धरा पड़तो के आका–बाका दखुक मुरालो।

♠ आपलो पांय ने ठिया होतोर ।

अपने पैरों में खड़ा होना।

♣ स्वावलंबी होना।

उदा0– खिंडिक आदक पडुन रले तो आपन गोड़े ठिया होवतो ?

♠ आंठ गनुन, नंव सांगतोर ।

आठ गिनकर नौ बताना ।

♣ बढ़ा–चढ़ा कर बताना ।

उदा0– कित खंडी होली बलतोके, आंठ गनलो पाछे नंव सांगलो । एकय तो बलुआत आंठ गनुन नंव सांगतोर ।

♠ आंटा ने लुकातोर ।

अंटी में छिपाना।

♣ छिपाकर रखना।

उदा0– आंटा ने लुकान रले होउ आय, घर चो लोक के बले तो सांगतोर रली।

♠ **आईग ने पानी रिकातोर ।**

आग में पानी डालना।

♣ उत्तेजित व्यक्ति को शान्त करना।

उदा0– हुनचो रीस के दखले, डंडिक रहुन आईग ने पानी रिकातो के सीतरली।

♠ **आईग ने मुततोर ।**

आग में पेशाब करना।

♣ ऐसा दुस्साहस पूर्ण आचरण करना जिसका परिणाम स्वंय के लिए भयावह हो। शरारत करना, उदण्ड होना।

उदा0– चावड़ी ने नेउन दुड़दुड़ा पेटला, जुगे आईग ने मुतले असने पेटुन जहेल पठान देउआत।

काचो घरो लेका आय जाले, जुगे आईग ने मूतेसे ।

♠ **आईग धरतोर ।**

आग लगना।

♣ मंहगाई बढ़ना। कुछ समय किसी वस्तु का दाम अत्यधिक बढ़ने से दुष्प्राय अथवा दुर्लभ होना।

उदा0– आमचो सरकार मांहाग घटेदे बलुन पांच बरख ले बलेसे, दखु–दखु जमाय बानी आईग धरली।

♠ **आजि–काली करतोर ।**

आज–कल करना।

♣ झूठा वादा करना, टालना।

उदा0– आजि–कालि बलते–बलते दुय बरख होली।

♠ **आँईख दखातोर ।**

आँख दिखाना।

♣ गुस्से में देखना।

उदा0– जोन आमके आईंख दखायेदे, हुनचों आईंख के फुटाउन देउन्दे।

♠ **आँईख फुटतोर ।**

आँख फूटना।

♣ दिखाई न देना, परिलक्षित न होना। यहाँ आँख से दिखाई देने के बावजूद अनदेखा करते हुए भी जानबूझ कर कृत्य करना अर्थात् देखते हुए भी अनदेखा करने का आशय है।

उदा0– दखुन हिंडुक नी होय, तुचो आँईख फुटली से कायनूं ।

♠ **आँईख लुकातोर ।**

आँख छिपाना।

♣ छुपना।

उदा0– आजिकाली हुन मोचो ले आईंख लुकाउन हिंडेसे।

♠ **आँईख मारतोर ।**

आँख मारना।

♣ इशारा करना।

उदा0– बाड़ी पाटकुती ले आईंख मारून जाते गेली।

♠ **आँईख उठातोर ।**

आँख उठाना।

♣ देखने का साहस करना।

उदा0– अदांय हुन मोचो पूरे केबय आईंख उठाउक नी सके।

♠ **आँईख उघाड़तोर ।**

आँख खोलना।

♣ होश आना।

उदा0– जिदलदांय जमाय पयसा के कुकड़ा गाली ने हारलो तेबे हुनचो आईंख उघड़ली।

♠ **आँईख ने धुरला पकातोर ।**

आँख में धूल झोंकना।

♣ धोखा देना।

उदा0– काली एयेन्दे बलुन हेंवय गेलो, गोसेया आईंख ने धुरला पकालो।

♠ **आँईंख ने जाला पड़तोर ।**

आँख में परदा पड़ना।

♣ लालच के कारण सच्चाई न दिखना।

उदा0– दूसर के ठगतो लोक, हुनमन नी जानोत कि हुनचों आईंख ने जाला पड़लीसे, कोनी दिने हुन बले भुगतेदे।

♠ **आँईंख नी सहतोर ।**

आँखों न सहना।

♣ अप्रिय व्यक्ति।

उदा0– लहलट मतवारी धंदा चो लागुन बाप चो आईंख नी सहे।

♠ **आँईंख लिमटतोर ।**

आँख मूंदना।

♣ आँखें बंद होना, मृत्यु हो जाना।

उदा0– काली बले सुरता करलू ता, बोपड़ा बसलो लगे आईंख लिमटलो।

♠ **आँईंख लागतोर ।**

आँख लगना।

♣ नींद आना

उदा0– सुगसुगा बसलो लगे आईंख लागली।

♠ **ओछना चो पानी के मंगरी ने चेगातोर ।**

अयोग्य व्यक्ति को उँचा पद मिलना।

♣ उल्टी गँगा का बहना, नियम विरूद्ध कार्य।

उदा0– उल्टा गोठेयाले नी होय आजा, आमचो पंचायत चो बनालो नियम आय, ओछना चो पानी के मंगरी ने चेगाले नी होय।

♠ **ओरई होवतोर ।**

टंग जाना।

♣ लाड़ जताना, गले में झूलना।
उदा0– गोटोक बूता के कर बल्लो ने नी सुने, ओरई होउन बुलेसे।

♠ **उल्टा पाठ पड़ातोर ।**
उल्टी पाठ पढ़ाना।
♣ उल्टी–सीधी बातें समझाकर किसी को बहका देना।
उदा0– सोज बाट के धर बल्लो ने उल्टा पाठ पढायेसे मके ।

♠ **करजा फाटतोर ।**
कलेजा फटना।
♣ दुर्व्यवहार, दुर्व्यवचन, दुर्घटना आदि के कारण अत्यन्त दुखी होना।
उदा0– बोडू चो मरनी खबर सुनुन मोचो करजा फाटली।

♠ **कन्हेया सलकातोर ।**
कमर सीधी करना।
♣ सबक सिखाना।
उदा0– रोजे बुलतो टकर पड़ली, कनेया सलकाउक लागेदे।

♠ **करजा धक करतोर ।**
कलेजा धक करना।
♣ डर जाना।
उदा0– खबर सुनते मोचो करजा धक करली।

♠ **करजा पोड़तोर ।**
कलेजा जलना।
♣ तीव्र असंतोष होना।
उदा0– हुनचो गोठ के सुनुन मोचो करजा धुमधुमा पोड़ली।

♠ **करजा उपरे पखना मंडातोर ।**
कलेजे के उपर पत्थर रखना।
♣ दुख में धीरज रखना।

उदा0– गोसेया मरतो के हुन बोपड़ी बेचारी काय करेदे, हुन तो आपलो करजा उपरे पखना मंडाउन बसली से ।

♠ **करम फूटतोर ।**

करम फूटना।

♣ अभागा होना, भाग्य बिगड़ना।

उदा0– भाग ने रलो ने बेटा–बेटी चो सुख आय, नाहले करम फुटले काहाँ ले पायेदे।

♠ **कहनी सांगतोर ।**

कहानी बताना।

♣ दुखड़ा रोना।

उदा0– झपके उसकते मान्तर, हुनचो कहनी सांगतोर सरलो ने तो ।

♠ **कहनी सरतोर ।**

कहानी समाप्त होना।

♣ मृत्यु हो जाना।

उदा0– गुलाय राज चो लागा खाउन–खाउन बुलेसे, कहनी सरलो पाछे पयसा बोहड़ायेदे?

♠ **कन्हेया बसतोर।**

कमर टूटना अथवा बैठ जाना। बेदम, बलहीन।

♣ पूर्व की तरह शक्ति, बल, साहस का न रह जाना।

उदा0– 'चार बरख होली बयला जोड़ी आनलोर, अदांय कन्हेया टूटली।

♠ **काचा खाउन, काचा उगलतोर ।**

कच्चा खाकर कच्चा उगलना।

♣ उच्चारण करना।

कच्चा खाकर, कच्चा उगलना। चूंकि उगली हुई कोई भी वस्तु जिस तरह घृणा के योग्य होती है, उसी प्रकार अपशब्दों का उच्चारण करना या गाली देना भी घृणा को जन्म देती है। इसलिए जो व्यक्ति ऐसा आचरण करता है

उसके लिए यह मुहावरा का प्रयोग करते हैं।

उदा0– 'ए मनुख बले अटपट काचा खाउन काचा उगलते रलो।'
अर्थात् अपशब्दों का प्रयोग करते हुए एक सभ्य मानव के लिए वर्जित कार्य करता है।

♠ **कावरा कोल्हार करतोर ।**

काक कोलाहल।

♣ शोरगुल, हल्ला मचाना।

उदा0– कोनी लोक इलो बेरा, डंडिक ओगाय रलो ने काय होती, कावरा कोल्हार उलटाला से।

♠ **काना होतोर ।**

अँधा बनना।

♣ लापरवाह होना, किसी बात पर ध्यान न देना।

उदा0– दखुन बले सिरजी लात मारेसे, काना होलीस कायनूं ?

♠ **काना चो हाते लावा धरा पड़तोर ।**

अँधे के हाथ बटेर लग जाना।

♣ बिना प्रयास के सफल होना, अयोग्य व्यक्ति को कोई अच्छी वस्तु मिल जाना।

उदा0– कुली भुती करतो लोक आय, काना चो हाते लावा धरा पड़ली कायनूं।

♠ **कान चो काचा होवतोर ।**

कान का कच्चा होना।

♣ त्वरित विश्वास करना।

उदा0– सावकार चो बल्लो गोठ के तुरते मानुन करतो बीती बले अडरा आय, जुगे कान चो काचा होवतोर नोहांय।

♠ **काना चो बाग दखतोर ।**

अंधे का बाघ देखना।

♣ मिथ्या बातों पर बल देना।

उदा0– नी दखलो बीती के बले दखले बलतोर, काना चो बाग दखलो असन तो आय।

♠ कान धरतोर ।

कान पकड़ना।

♣ गल्ती मानना या स्वीकार करना।

उदा0– भलई करतो पलटा लटा धराउन बदी करला, अदांय कान धरले।

♠ कान कतरतोर ।

कान कुतरना।

♣ बहुत चतुर होना।

उदा0– पाकलू चो बेटा पिला बेरा ले चे बड़े–बड़े चो कान के काटेसे।

♠ काने मंतर पाड़तोर ।

कान में मंत्र देना।

♣ प्रेरित करना, उकसाना।

उदा0 – काय मंतर पाड़लो जाले दुनों गुरू–चेला खुस्सनाय निकरला।

♠ काने खबर नी होवतोर ।

कानों कान खबर नहीं होना।

♣ किसी को पता नहीं चलना।

उदा0– गाड़लो हांडा के खुस्सनाय हिटाउन आना, काकय कानों कान खबर नी होओ।

♠ काने कीड़ा पड़तोर ।

कान में कीड़ा पड़ना।

♣ जानबूझ कर नहीं सुनना, अनसुना करना।

उदा0– सुनुन बले नी सुनलो असन होयेसे, काने कीड़ा पड़लीसे कायनूं।

♠ काटलो अँडखी ने नी मुततोर ।

कटी हुई अंगुली पर पेशाब न करना।

♣ वक्त पर काम न आना।

उदा0– गोटोक बूता के करून देस बलतो के टिर्र करेसे, ए फेर काटलो अँडखी ने मुतेदे ?

♠ काना के उजर दखातोर ।

अंधे को चिराग दिखाना।

♣ मूर्ख को उपदेश देना।

उदा0– अबूज लोक आय, हुनके कितरो समजाले बले काना लोक के दिया दखालो असन आय।

♠ कानी चो कवड़ी गनतोर ।

अंधी स्त्री का कौड़ी गिनना।

♣ अल्प ज्ञान के बावजूद, ज्ञानी बनना।

उदा0– कानी कवड़ी गनेसे, खिडींक आदक पढ़ुन रले काय करती जाले।

♠ काड़ी करतोर ।

अंगुली करना।

♣ बनते कार्य में विघ्न उत्पन्न करना।

उदा0– गोरसी लगे ओगाय बसुन खावतो बेरा, काड़ी करतोर अच्छा आय। मुंडे बरखाव गोटोक बड़गा।

♠ किटका टुटातोर ।

तिनका तोड़ना।

♣ शपथ लेना।

उदा0– आजि ले किटका टुटाले, सांज बेरा भाटी सार चो बाट के नी धरें।

♠ कीड़ा चाबतोर ।

कीड़ा काटना।

♣ बैचेनी होना, जी उकताना।

उदा0– गोटोक लगे बसुन रा बल्ले नी सुने, कीड़ा चाबेसे काय ?

♠ **कुकुर चाबतोर ।**

कुत्ते का काटना।

♣ पागल होना।

उदा0 – तुके कुकुर चाबलीसे काय ? मके लटा धरायेसे।'

♠ **केरा पाना असन हालतोर ।**

केले के पत्ते जैसा हिलना या थरथराना।

♣ डरकर काँपना।

उदा0– हिरी उपरे हिंडतो बेरा काय आय जाले चाबलो असन लागतो के, केरा पाना असन हालुन जाए।

♠ **कोरा ने बसालो ने आईंख के कोचकतोर।**

गोद में बिठाया तो आँख में अंगुली।

♣ भलाई के बदले बुराई करना।

उदा0– रतो काजे ठान दिले, एबे मोचो आईंख ने बाट कोचकेसे।

♠ **खटेया धरतोर ।**

खाट से लग जाना।

♣ अधिक दुर्बल होना।

उदा0– पटेल सियान बले निरने खटेया ने लटकलो, जुगे दिने नी जिए माहा लागेसे।

♠ **खाले दखातोर।**

नीचा दिखना।

♣ अहंकार करना।

उदा0– आजि बोहडुन एओ ता, खाले नी दखाले जाले बलसे ?

♠ **खावतो बेरा मसकू, बूता बेरा खसकू।**

खाते वक्त जमकर खाना, काम के वक्त खसकना ।

♣ कामचोर, खाने में आगे, काम में पीछे ।

उदा0– झपके करले अच्छा होती, नाहले बलदे खावतो बेरा मसकू आउर

बूता बेरा खसकू ।

♠ **खूँटा ने दामा धरातोर ।**

खूँटे से बाँधना।

♣ किसी के साथ विवाह करना। बंधन में बाँधना।

उदा0– गुलाय रात खेलतो बाटे जायेसे, एके बले दामा ने धरालो ने होती।

♠ **खोसली छंडातोर ।**

केंचुली उतारना।

♣ पुराना भेस छोड़कर नया भेस धारण करना।

उदा0– चुच्छाय खोसली छंडाले काय होयेदे काकी, गुन बले होतोर आय।

♠ **खोजरी धरतोर ।**

खुजली होना।

♣ शौक जताना।

उदा0– पूरे–पूरे हायेसे, खोजरी धरली से कायनूं।

♠ **खोजरी छांडतोर ।**

खुजली छुटना ।

♣ शौक पूरा होना।

उदा0– गुलाय राज बुललो अबर खोजरी छांडली।

♠ **खोजरी छंडातोर ।**

खुजली छुड़ाना ।

♣ शौक छुड़ाना।

उदा0– बाहरे बुलुन खावतो टकर पड़ली से, एओ ता हुनचो खोजरी छंडायेन्दे।

♠ **खोर–खोर बुलतोर ।**

गली–गली घूमना।

♣ व्यर्थ घूमना या जीविका के लिए भटकना।

उदा0– काहाँय कमानी ना धमानी, खोर–खोर नी बुलेदे जाले काय करेदे ?

♠ **गनुन डाहँका मंडातोर ।**

गिनकर कदम रखना

सावधानी बरतना अथवा बहुत सावधानी से आगे बढ़ना।

उदा0– अदांय चतुर होवलो, गनुन डाहँका मंडायेसे।

♠ **गठ पाड़तोर ।**

गाँठ बाँधना।

♣ याद रखना।

उदा0– हारक भुलकुन रले, अदांय गठ पाड़ले।

♠ **गंगा नहातोर ।**

गंगा नहाना। कठिन कार्य पूरा करना।

♣ कर्तब्य या दायित्व पूरा करके निश्चिंत होना।

उदा0– बेटा–बेटी चो बिहाव करून दिलीस, अबर अस्तिर ने गंगा नहाव बे।

♠ **गाड़ा चेगुन खोटला बोवतोर ।**

गाड़ी में बैठकर बोझा उठाना। गाड़ी में चड़कर वजन कंधे पर रखना।

♣ मति मारा जाना। अक्ल का मारा जाना।

उदा0– तुय बले ना जोन बूता के नी कर बलले हुनके सिरजुन करसीस, गाड़ा ने बसुन खोटला बोवतोर तुके टकर पड़लीसे।
खिडींक बले बुद निहांय, गाड़ी चेगुन खोटला बोहलोसे।

♠ **गाय मारतोर ।**

गाय मारना।

♣ हत्या करना, बड़ा अपराध करना।

बस्तर के जनजीवन में गाय मारना तथा मनुष्य की हत्या करना बड़ा अपराध माना जाता है। बस्तर के आदिवासी समाज में इस तरह का कृत्य करने वाले व्यक्ति को कठिन से कठिन दण्ड दिए जाने का

प्रावधान है। कुछ मामलों में न्यायालय के द्वारा दिए गए अपराध के बावजूद सामाजिक दण्ड भी दिया जाता है। संबंधित व्यक्ति को समाज से भी निष्कासित किया जाता है। वह अदालत की सजा भोगने के बाद भी समाज द्वारा दण्डित सजा भुगतने के बाद ही समाज में शामिल किया जाता है, इसके पूर्व समाज को भोज भी देना पड़ता है।

उदा0– बेड़ा के बिकुन घर बांदलो, काय गाय मारलो गुनुक

♠ **गार पाड़तोर ।**

अंडे सेना।

♣ घर में बेकार बैठना।

उदा0– जमाय घर चो मांई–पिला भुति गेला, तुय बसुन ए लगे काय गार पाड़सिस ?

♠ **गुर ने माछी झुमतोर ।**

गुड़ में मक्खी बैठना।

♣ जहाँ गुड़ होगी मक्खियाँ भी आएंगी।
यदि पास में धन होगा तो सभी पास आयेगें।

उदा0 – 'दुय दिन, लगे पयसा रली गुनुक हुनचो लगे माछी असन झुमला।'

♠ **गोठ लड़ातोर ।**

एक की दो कहना।

♣ थोड़ी बात के लिए बहुत अधिक भला–बुरा कहना।

उदा0– नानी–सुनी गोठ काजे बले टोंड लड़ातोर अच्छा गुन नोहांय।

♠ **गोहड़ी बेरा होतोर ।**

गायों का संध्या के समय आने का समय होना।

♣ गोधुलि बेला होना।
बस्तर के जनजीवन में समय के लिए उपयोग होने वाले मानक शब्दों में से एक ' गाय गोहड़ी बेरा' । यहाँ आज भी समय के लिए पेज बेरा, बिहान पाहार, सांज बेरा, अदगर राति, कुकड़ा बासे, पनिहारिन बेरा आदि जैसे पारम्परिक शब्दों का चलन है।

उदा0– गाय गोहड़ी बेरा होली, घर गोसेया के सोर निहांय।

♠ **गोड़ चो धुरला होतोर ।**

चरणों की धूल।

♣ किसी की तुलना में अत्यन्त नगण्य होना।

उदा0– बुलाखाया अबगो बाड़ली, आजि कालि माँय–बाप चो सेवा कोन करेसे गुनुक, गोड़ चो धुरला होवतोर जानले तो ?

♠ **गोड़ धोउन खावतोर ।**

पैर धोकर पीना ।

♣ अत्यधिक सम्मान करना ।

उदा0– गोड़ धोउन खावलो ने काय नसली, गुरूबाबा के सदा मान देतोर आय ।

♠ **गोटोक के खांदगोड़ी, दूसर के ओड़गोड़तोर ।**

भेदभाव करना।

♣ एक से प्यार करना और दूसरे से नफरत।

उदा0– बेटा–बेटी एक समान आत ना, गोटोक के खांदगोड़ी आउर दूसर के ओड़गोड़ले नी होय।

♠ **गोटोक–गोटोक दिन गनतोर ।**

एक–एक दिन गिनना।

♣ समय बीतता न जान पड़ना। पहाड़ की तरह अधिक विस्तार वाला जान पड़ना।

उदा0– 'घर गोसेया चो बाट दखते गोटोक–गोटोक दिन गनेसें।'

♠ **घर ले बाहिर पांय मंडातोर ।**

घर से बाहर पांव रखना।

♣ अपनी सीमा या मर्यादा का उल्लघंन करना।

उदा0– ओगाय घरे बसुन खाउन–पिउन रा, घर ले बाहिर पाँय मंडालीस जाले नंगत नी होय।

♠ **घर बुड़ातोर ।**

घर डूबोना।

♣ पारिवारिक संबंध बिखरना अथवा संपत्ति नष्ट या डूबना।

उदा0– गुलाय राज बुलुन–बुलुन खावते–पिवते सुख ने रला, मान्तर काय काल धरली कि जमांय घर बुड़ली।

♠ **घर होवतोर ।**

घर बसाना।

♣ विवाह करना, अथवा किसी के साथ घर बसाना।

उदा0– मन करलो लेका के बरख भर टाकली, मान्तर घर होवतोर जान नी पड़ली।

♠ **घर–दुआर दखतोर ।**

घर–आँगन देखना।

♣ गृहस्थी संभालना और उसकी रक्षा करना।

उदा0– तुचो मांय–बाप देवलोक होला, घर चो बड़े बल्ले तुय आस, अबर तुके घर–दुआर दखुक लागेदे।

♠ **घरे बसतोर ।**

घर में बैठना।

♣ कन्या का विवाह न होने की स्थिति में अथवा ससुराल से विपरीत परिस्थितियों के कारण त्याग कर पिता के घर रहना।

उदा0– देहें–पांय नंगत रहोत ले आपलो लगे संगालो, पाछे मांय–बाप घरे आनुन बसाउन दिलो।

♠ **घर के डसाउन, गाँव के उजर करतोर ।**

♣ घर जलाकर गाँव को उजाला करना।

उदा0– सकत रलो इतरो जाहला करलो बोपड़ा बेचारा, घर के डसाउन गाँव के उजर कसन करेदे।

♠ **घाट उतरतोर ।**

घाट उतरना।

♣ किसी की मृत्यु हो जाने पर नदी अथवा तालाब के घाट पर उतरकर स्नान करना।

उदा0– काली तीसर दिन होयदे बुबु, दिनक घाट उतरूक लागेदे, नाहले लोक काय बलदे ?

♠ घाट–घाट चो पानी पिवतोर ।

घाट–घाट का पानी पीना।

♣ व्यापक अनुभव, अनेक स्थलों का अनुभव प्राप्त करना।

उदा0– बीजापुरिया चो नाती लेका भारी चलाक उलटलो, गुलाय राज के बुलेसे। काचो नाती आय नूं, घाट–घाट चो पानी के खावलो से।

♠ चरचरा अमरातोर ।

खरी–खोटी सुनाना।

♣ सच्ची बात कहना, भले ही किसी को बुरा लगे।

उदा0– आजि सांज बेरा घरे एओ ता चरचरा अमरायेन्दे ।

♠ चाउर पुरतोर ।

चाँवल समाप्त हो जाना।

♣ मृत्यु के निकट आना।

उदा0– जीवना रहोत ले सकत भर कमालो आउर आपलो पिला–झीला के पोसलो, चाउर पुरतो के डसना ले लटकलो।

♠ चामड़ी छोलतोर ।

चमड़ी उधेड़ना।

♣ सबक सिखाना, बेंत, कोड़े आदि से इतना अधिक मारना कि शरीर की त्वचा उधड़कर खून रिसने लगे।

उदा0– घरे रा बलतो के खोर–खोर बुलेसे, आजि घेरे ओलो ता चामड़ा के छोलेन्दे।

♠ चारी करतोर ।

चुग़ल करना।

♣ पीठ पीछे निन्दा करना ।

उदा0– एचो, हुनचो लगे चारी करतोर निको गोठ नोहांय।

♠ चिंव नी करतोर ।

चूं न करना ।

♣ चुपचाप रहना।

सताए या विवश किए जाने पर कुछ भी आपत्ति या विरोध प्रकट न करना।

उदा0– हाते बड़गी धरून मास्टर के एतो के दखुन स्कूल चो पिला मन कोनी चिंव नी करला।

♠ चिपड़ाहा के आईंख एतोर ।

मैले आंखों वाले व्यक्ति को आंख आना ।

♣ अपयश का दोष भाग्य पर डालना ।

उदा0– कुली भुति करून कमाउन खावते रहे, उपर बीता बले चिपड़ाहा के आईंख एतोर के नी दखेसे तेबे ?

♠ चीखल ने लुटबुटातोर ।

कीचड़ में लुट–बुटाना, कीचड़मय होना ।

♣ आफत में पड़ना ।

उदा0– भार बरसा बेरा छानी घसरतोर जे, चीखल ने लुटबुटालो असन होली।

♠ चुआ ने बिलई पकातोर ।

खोज करना।

♣ तलाश करना। कुएँ में बिलई (लोहे से बना मोटे तारों का गुच्छा जिससे पानी के अंदर पड़ी हुई वस्तु की खोज की जाती है।) फेंकना।

उदा0– गुलाय बिलई पकाउन डगराउन थाकलू, रले तो मिरेदे।

♠ चुच्छाए हात होतोर ।

खाली हाथ होना।

♣ रूपया पैसा का न होना।

उदा0– चुच्छाय हात होवलो लागुन हाट नी गेले काकी।

♠ चुला के जर धरतोर ।

पकाने के लिए अनाज न होना।

♣ दरिद्रता की निशानी।

उदा0– 'काय साग आय दीदी। काईं साग नुहाँय री आजि चुला के जर धरली से।'

♠ चुंदी मुंडातोर ।

हजामत बनाना ।

♣ ठगना।

उदा0– संगे बसुन मातला आउर चुंदी के मुंडाउन जाते गेलो।

♠ चेटा दखातोर ।

अँगूठा दिखाना।

♣ याचक को कोई वस्तु न देना, निराश करना।

उदा0– रोजे दिना गुर आउर चिवड़ा मांगुन–मांगुन खाए, टकर पड़लीसे । आजि बले गुड़िया खाजा हाते दखुन मांगलो, चेटा के दखान दिले।

♠ चोर के चोराउन, सावकार के चेतातोर ।

चोर से चोरी करवाना और साहूकार को जगाना ।

♣ अपने लाभ के लिए दो पक्षों को लड़ाने वाला ।

उदा0– आनलो पयसा के दूसरे चो हाते धराउन दिलो, एबाटे चोर के चोराउन दिलो आउर हुन बाटे साहू के चेताउन बले दिलो ।

♠ छड़बड़तोर ।

क्रोधित होना ।

♣ गुस्से से आग बबूला होना।

उदा0– मंद काजे पयसा मांगतो के काय छड़बड़ेसे।

♠ **छाती ओसार करतोर।**

छाती चौड़ी करना।

♣ गर्व करना ।

उदा0– आजी मोचो बेटा मोचो नाव के संगालो, मोचो छाती ओसार होली।

♠ **छाती ने पखना मंडातोर ।**

छाती में पत्थर रखना।

♣ अपने हृदय को कड़ा करना ताकि किसी दुख का प्रभाव न पड़े।

♠ **छाती ने चेगतोर ।**

छाती में चढ़ना।

♣ सामने आकर कष्ट देना या बलात् वसूल करने के लिए आ पहुँचना।

जैसेः– 'मोचो मनुख के मोहनी लगाउन सउत बनली, एबे मोचो छाती ने चेगतो उवाट करेसे।'

♠ **छांय के दखुन डगातोर ।**

छांव को देखकर कूदना।

♣ दूरी बनाना, पृथक करना।

उदा0– अबगो छांय के दखुन डगाले नी होय, हुनचो चेर ने जाउन दखुक लागेदे।

♠ **छिना घर चाबतोर ।**

सुना घर काटने को दौड़ता है।

♣ अकेलापन अखरना।

उदा0– पिला–झीला नी रले छिना घर बले चाबुआय।

♠ **छू–गदबद होतोर ।**

उड़न छू होना।

♣ गायब हो जाना, चले जाना।

उदा0– डंडिक घर चो बूता करूक लागसे, बलतोके छू गदबद ।

♠ **जमपुर अमरातोर ।**

यमलोक पहुँचाना।

♣ मार डालना, प्राण ले लेना।

उदा0– 'ए बिलई गुलाय घर के तसेयानास करेसे, हारक भेटले जाले जमपुर अमरान देयेन्दे।'

♠ **जाल तुनतोर ।**

जाल बुनना।

♣ उधेड़बुन में लगे रहना, गहरी सोच में पड़ना।

उदा0– बसुन काय करते ता, तेतर गछ के दखुन–दखुन जाल तुनते रयें।

♠ **जात नेतोर, धरतोर ।**

जाति लेना।

♣ अपमानित करना।

उदा0– आमचो धन के खाउन बड़े बाड़लो, एबे आमचो जात के नेयेदे मने।

♠ **जीव मांडतोर ।**

जी लगना ।

♣ संतुष्ट होना ।

उदा0– दुय दिन दखा नी दिलो ने जीव नी मांडते रए, अच्छाय होली तुय इलीस जीव मांडेदे ।

♠ **जीव नी मांडतोर ।**

जी का न लगना, रहा ना जाना ।

♣ किसी काम, चीज, बात आदि के लिए अपने को ना रोक पाना।

उदा0– 'दखलो दांयले, नी खादलोर जीव नी मांडेदे।'

♠ **जीव उखरातोर ।**

स्मरण करना ।

♣ किसी के याद में खिन्नमन होना ।

उदा0– मयनामती के गेलो हपता दखुन रले, आजि हुनके दखतो काजे जीव

उखरेसे ।

♠ **जीव नी लागतोर ।**

मन न लगना।

♣ शारीरिक दृष्टि से अस्वस्थ होना।

उदा0— बूता भयना करतो काजे आजि जीव नी लागेसे।

♠ **जीव लागतोर ।**

जी लगना, ध्यान बराबर बना रहना।

♣ किसी कार्य में रूचिपूर्वक प्रवृत होना या लगे रहना।

उदा0— बूता ने जीव लागली कायनूं लेका फिरून नी इलो।

♠ **जीव देतोर ।**

जान देना।

♣ जान न्यौछावर करना, प्राण देना, बहुत अधिक परिश्रम करना।

उदा0— देस काजे आमचो गाँव चो लेका मन जीव देतो काजे तियार आसत।

♠ **जीव छंडातोर ।**

जान छुड़ाना।

♣ किसी प्रकार के उत्तरदायित्व अथवा विवाद से मुक्त होने का प्रयत्न करना।

उदा0— सावकार रोजे एउन दुआरे बसे, आजि पयसा देउन जीव के छंडाले।

♠ **जीव निकरतोर ।**

जान निकलना।

♣ मरना या मरण तुल्य कष्ट भोगना। किसी से अत्यधिक भयभीत होना।

उदा0:— लागा मांगुक सावकार अमरलो सुनुन, जव निकरलो असन लागली।

♠ **जीव थरथरतोर ।**

जान कांपना।

♣ बहुत अधिक डर लगना।

उदा0– सांप के दखुन डंडीक मोचो जीव थरथरली।

♠ **जीव के मारतोर ।**

जी मारना।

♣ कठोर संयम करना।

उदा0– साल भर चो कमानी के जीव मारून संगालेसें।

♠ **जीव पाड़तोर ।**

♣ जान डालना।

मृत शरीर में प्राणों का संचार करना, निराश व्यक्ति को आशान्वित करना।

उदा0– हारक मरलो पाछे, जीव पाड़लो ने उठुन बसेदे ता ?

♠ **जीव दुखतोर ।**

जी दुखना।

♣ मन में कष्ट या दुख होना।

उदा0:– गाय चो कंवरी पिला मरतो के जीव दुखली।

♠ **जोड़ा जोड़तोर ।**

सामग्री संचय करना।

♣ सबक सिखाना।

उदा0 – खुबे होली हुनचो ढंगनाच, बिहा काजे जोड़ा जोडुक लागेदे।

♠ **झाकतोर ।**

अशोभनीय, पागलपन।

♣ झाकना का अर्थ किसी शक्ति का शरीर में प्रवेश करना।

दैवीय शक्ति का आरूढ़ होना।

उदा0 – एके देव झाकेसे कायनूं। एके बले झाकेसे आदि।

कसन झांकलो माहा होयसे।

(झक्की मानसिकता का परिचायक)

♠ **झांकतोर ।**

झांकना।

♣ उत्सुक या किसी ओट से आशंकित होकर देखना ।

उदा0– गेलो कसन जाले लेकी, खिडिक लाफी ले झांकुन दख तो।

♠ **झारी पकातोर ।**

जाल फेंकना।

♣ पासा फेंकना।

उदा0– आजि राती बेरा खोटलू आजा लगे बसुन झारी पकाउन दखेन्दें, सांगलो ले सांगेदे।

♠ **टंगटंगा करतोर ।**

गंजा करना।

♣ सर्वस्व छीन या लूट लेना।

उदा0– घर के मेला करून पानी काजे चुंआ ने गेलो बेरा, काहाँ चो खंगार मन पयदला जाले, जमाय घर के टंगटंगा करून दिला।

♠ **टीप ले घसरून खोदरा ने पड़तोर ।**

चोटी से गिरकर के गढ्ढे में गिरना।

♣ नीचा दिखाना, अपमानित करना।

उदा0– दुय दिन संगे–संगे बुलालो एबे टीप ले घसराउन खोदरा ने पाड़लो।

♠ **टुईं ने पसना फूटतोर ।**

शरीर से पसीना आना।

♣ कठिन परिश्रम करना।

उदा0– इतरो बूता करू–करू ठाने टुईं ले पसना फूटली ।

♠ **टुईं ने दिया बारतोर ।**

गुप्तांगों में दिया जलाना। (प्रतीकात्मक)

♣ सबक सीखाना।

उदा0– एओ ता आजि घरे, हुनचो टुईं ने दिया बारेन्दे।

♠ **टुईं ने मीरी लगड़तोर ।**

शरीर में मिर्ची रगड़ना ।

♣ सबक सीखाना।

उदा0– एओ ता आजी, हुनचो टुईं ने मिरी नी लगड़ले जाले बलसे ।

♠ **टेण्डा–उचा करतोर ।**

उत्तोलन करना, उठाना–झुकाना।

♣ आंकलन करना।

उदा0– पानी भिजालो धान नुहाय, टेंडा–उचा करून दखेसे।

♠ **टेण्डतोर ।**

कथन करना, कहना।

♣ ताना मारना।

उदा0– ओगाय रलो लोक के सिरजी टेण्डलो।

♠ **टोडरा पिचकतोर ।**

गला दबाना ।

♣ अत्याचार करना।

उदा0– मंद खाउन पयसा के हजालो, एबे मोचो टोडरा के पिचकेसे।

♠ **टोडरा अलटतोर ।**

गला मरोड़ना। मार डालना, धोका देना।

उदा0– माय–बाप चो सोर नी रली, गांव–पारा के बले बदी करली, जनमते खन टोडरा के अलटुन दिले टंटा सरून जाती।

गुलाय गांव चो लोक के बोकड़ा मारून खोआयेदे बे, काचो टोडरा के अलटेदे जाले।

♠ **टोडरा ने बांदतोर ।**

गले बांधना।

♣ इच्छा के विरूद्ध सौंपना।

उदा0— लेकी चो मन दूसर लगे रली, सिरजी टोडरा ने बांदुन दिला।

♠ **टोण्ड ने लाडू गोबतोर ।**

मुँह में लड्डू रखना।

♣ चुप रहना, अनजान बनना।

उदा0 – घर चो सियान आय बलुन, समंजले ! मान्तर हुन बले टोण्डे लाडू गोबलो।

♠ **टोण्ड दखुन गोठेयातोर ।**

मुँह देखी बात करना।

♣ पक्षपात पूर्ण निर्णय देना।

उदा0— गाँव चो पंचईत ने, सरपंच के टोण्ड दखुन नी गोठेयातोर रली।

♠ **टोण्ड उलटातोर ।**

जवाब देना।

♣ बकना, बहस करना।

नासमझ होना।

उदा0— सोज बाट के धर बलतो के मके टोंड उलटालो।

♠ **टोण्ड करतोर ।**

मुंह करना ।

♣ जबान लड़ाना।

उदा0— नंगत बाट के धर बलतो के टोण्ड करेसे ।

♠ **टोण्डे पानी पजरतोर ।**

मुँह में पानी आना।

♣ खाने को जी करना।

उदा0— लेकी गोहड़ी मन चो तेतर खावतो के दखुन, थाने टोंडे पानी पजरली।

♠ **टोण्डे कीड़ा पड़तोर ।**

मुँह में कीड़ा पड़ना।

♣ अत्यधिक बातूनी या झगड़ालू होना ।

उदा0– टोण्डे कीड़ा पड़ली कायनू, भंड–भसड़ गोठ के निकरालोसे।

♠ ठिया–ठिया मुतातोर ।

खड़े–खड़े पेशाब करवाना।

♣ मज़ा चखाना, सबक सिखाना ।

उदा0– 'आजि हुनके ठिया–ठिया नी मुताले जाले मँय बले आपलो बाप चो बेटा नुहांय।

♠ ठेठ अमरातोर ।

खरी–खोटी सुनाना।

♣ भला–बुरा कहना।

उदा0– मँय काई के नी जाने बलतो के, घन–घन लगे एउन बसे, एक्केदांय ठेठ–ठेठ अमराले।

♠ डगातोर/उधलतोर ।

कूदना/उछलना।

♣ बड़ी–बड़ी बातें करना, योजनाएं बनाना।

उदा0– 'आजिकाली पयसा चो जोड़ ने उधलेसे।' मसागत करूक पड़ती जाले जानतो।

♠ डूमर कीड़ा होतोर ।

गूलर का कीड़ा।

♣ कूप मंडूक, अल्पज्ञ व्यक्ति।

उदा0– गाँव–पारा ने बुलते रले नी होय, गाँव ले बाहरे बले तो निकरूक लागेदे, डूमर कीड़ा होले नी होय।

♠ डोंगरी उलटातोर ।

पहाड़ उलटना।

♣ परिश्रम करना, बहुत बड़ा कार्य सम्पन्न करना।

उदा0– हुनके नानी असन बुता के सांगलो ने बले डोंगरी उलटालो असन लागेसे।

♠ **ढंगनाच करतोर ।**

नखरा करना।

♣ बहाना करना। कृत्रिम आचरण करना।

उदा0 – झपके जाउन, फिरून आव बलतो के ढंगनाच करेसे।
खाउआस जाले सीदा खा, ढंगनाच नी कर।

♠ **ढलपलतोर ।**

करवटें बदलना।

♣ लेटे हुए व्यक्ति का चिंता, रोग, कष्ट, अनिद्रा के कारण बार–बार पार्श्व बदलना।

उदा0– 'ए मनुख गुलाय रात ढलपलते रये, डंडिक नी सवलो।'

♠ **ढुलढुलेया बांगा होवतोर ।**

ढुलमुल व्यक्तित्व का होना ।

♣ अवसरवादिता होना, जिधर ढलान देखा उधर लुढ़कना।

उदा0– मोचो लगे मोचो असन आउर हुनचो लगे हुनचो असन, ढुलढुलेया बांगा होवलो।

♠ **ताना मारतोर ।**

ताने कसना।

♣ व्यंग्यपूर्ण बात कहना।

उदा0– दिन–दुनिया के समजुक नी होय, एकलो रतो रांडी बायले के बले ताना मारून जासत।

♠ **तोरा भर पानी चेगतोर ।**

चेहरा खिल उठना।

♣ चेहरे से प्रसन्नता जाहिर या हर्ष अभिव्यक्त करना।

उदा0– गेलो बरख कमानी नंगत नी होली होउन रए, एसु नंगत होवतो के थोतना ने तोरा भर पानी चेगली।

♠ थापड़ी पेटतोर ।

ताली बजाना।

♣ एक अर्थ में – पराजय, अपमान या दुर्दशा होने पर जग में हँसी होना, उपहास करने के लिए तालियां बजाना। अथवा

♣ दूसरे अर्थ में – किसी के प्रशंसा में, सम्मान में ताली बजाना।

♣ अंतिम संस्कार के तहत दाह संस्कार विधान में शव को चिता में लिटाने के पूर्व उपस्थित वरिष्ठ व्यक्ति के द्वारा ताली पीट–पीट कर मृतक व्यक्ति का नाम पुकारा जाता है। (एक प्रथा)

उदा0– स्कूल ने लेका पढ़ई ने पहिल एतो के जमाय लोक थापड़ी पेटला।

♠ थाकतोर ।

हार जाना ।

♣ परेशान हो जाना।

उदा0– मँय बाबा के पयसा मांगुन–मांगुन थाकुन गेले, नी दिलो।

♠ थाकतोर ।

थकना।

♣ परिश्रम के कारण शरीर में थकान उत्पन्न होना।

उदा0– बिहानत ले नांगर फांदुन रहें, थाकुन एबे एयेसें।

♠ थाहा–थाहा होतोर ।

त्राहि–त्राहि होना।

♣ अत्यधिक कष्ट उठाना।

उदा0 – मांय बीती भंडवा मांजुन पयसा कमाए, मांय बीती मरतो के थाहा–थाहा होउन गेला।

♠ थारी चो बांगा होतोर ।

थाली का बैंगन होना ।

♣ अस्थिर विचार वाला।

उदा0– खाओत ले मोचो संगे रये, एबे हुनचो लगे भिड़लो थारी चो बाँगा होवलो।

♠ थिपायक–थिपायक ने हांडी भरतोर ।

बूंद–बूंद में मटका भरना।

♣ थोड़ा–थोड़ा जमा करने से धन का संचय होता है।

उदा0– एकेदाँय रोकाई होओ बल्ले नी होय, सल्फी घेड़ा ले थिपायक – थिपायक थिपलो नें हांडी भरेसे।

♠ थुकतोर ।

थूकना।

♣ घोर उपेक्षा तथा घृणा व्यक्त करना।

उदा0– काय बूता करलीस बाबू, गुलाय गाँव चो लोक थुकसत।

♠ थुकन देतोर ।

थूक देना।

♣ प्रतिज्ञा करना, दुबारा वैसा घृणित कार्य नहीं करना।

उदा0– आजि ले असन अडरा बूता के थुकुन छांडुन दिले।

♠ थुकुन चाटतोर ।

थूक कर चाटना।

♣ दिए हुए वचन से मुकर जाना।
किसी को दी हुई वस्तु पुनः वापस लेना।

उदा0– आमचो लेका काजे माहला छिड़ालो थाने बले लेकी के दूसर घरे बिहा करलो, असन बले थुकुन चाटतोर आय, आले सांगा ?

♠ थोतना उतरातोर ।

मुँह उतारना।

♣ उदास होना, चेहरे से दुख प्रकट करना।

उदा0– आया एकलो मंडई गेली, लेकी के नाईं बल्ली, लेकी चो थोतना

उतरली।

♠ **थोतना दखतोर ।**

मुँह देखना।

♣ किसी वस्तु के लिए दूसरे पर आश्रित होना।

उदा0– घर गोसेया चो देव लोक होतो के, काचो थोतना के दखती, मुठी मांगुन जीवना चलायेसे।

♠ **थोतना नी दखतोर ।**

मुँह न देखना।

♣ किसी की ओर उपेक्षा के कारण दृष्टिपात न करना या प्रवृत न होना।

उदा0– मँय हुनी दिन ले किरिया खादले हुनचो थोतना नी दखें।

♠ **थोतना करेया पड़तोर ।**

मुँह काला पड़ना।

♣ चोरी पकड़ा जाना, छिपे हुए अपराध के प्रकट हो जाने की आशंका से चेहरे की लालिमा उड़ जाना।

उदा0– झोरा के टामंडतो के हुनचो थोतना करेया पड़ते गेली, पाछे चावड़ी ने नेउन ढापला।

♠ **थोतना लुकातोर ।**

मुँह छिपाना।

♣ सामना करने से कतराना।

उदा0– करजा खादलो से, दखलो ने थोतना के लुकायेसे।

♠ **थोतना दखुन जिवतोर ।**

मुँह देखकार जीना।

♣ परम प्रिय होने के कारण किसी के भरोसे पर जीना।

उदा0– 'मँय तो ए पिलामन चो थोतना दखुन जीयेसें।'

♠ **थोतना उजर होवतोर ।**

चेहरा उजला होना।

♣ व्यक्ति का सदाचारी सिद्ध होना, निष्कलंक होना।

उदा0– सावकार घरो खंगार भिड़ला, पारा चो पिला मन के लटा धरते रहोत, खंगार धरा पड़तो के पारा चो पिलामन चो थोतना उजर होली।

♠ थोतना करेया करतोर ।

मुँह काला करना।

♣ व्यभिचार करना।

उदा0– घर–दुआर चो सोर रले तो, गुलाय थोतना के करेया करते बुलेसे।

♠ थोतना फुलातोर ।

मुँह फूलाना।

♣ अत्यधिक क्रोध के कारण मुँह फूलाना।

उदा0– खावतो जमक कम पड़ली, गुनुक थोतना फुलालोसे।

♠ दसराहा बोकड़ा होतोर ।

दशहरा बकरा होना।

♣ बलि का बकरा होना।

(हिन्दी का मुहावरा – बलि का बकरा)

बस्तर के ऐतिहासिक दशहरा पर्व में बकरे की बलि देने की प्रथा है जो 75 दिनों के दौरान अलग–अलग रस्मों में अदा की जाती है। टेम्पल कमेटी बलि के लिए पूर्व से ही व्यवस्था बना कर रखते हैं, उन्हीं बकरों को दशहरा बोकड़ा कहा जाता है।

उदा0– गुलाय बुलुन भाति हुत्ताय चे अमरतोर, अदांय तुके चे दसराहा बोकड़ा बनादे कायनूं।

♠ दखा–दखी होवतोर ।

एक दूसरे को देखना।

♣ संबंध जोड़ना।

उदा0– गोटकी मांय चो पिला आंव आमि मान्तर दखा–दखी नांई, लगे रले तो दखा–दखी होती।

♠ **दखा–दखी नी होवतोर ।**

दुश्मनी होना।

♣ किसी विवाद में एक दूसरे से बातचीत या आना–जाना बंद हो गया हो। एक दूसरे के सामने नहीं आने–जाने पर यह मुहावरा कहा जाता है।

उदा0– गेलो बरख साग काजे झगड़ा चो लागुन, दखा–दखी निहांय।

♠ **दांत गिजड़तोर ।**

दांत निपोरना।

♣ दीनभाव से कृपा, अथवा अनुग्रह की प्रार्थना। ओछापन, निर्लज्जतापूर्वक हंसना।

उदा0– बूता ने नसाउन फेर दांत के गिजड़ेसे।

♠ **दांत कडरतोर ।**

दांत कटकटाना।

♣ गुस्सा करना।

उदा0– हाते सपड़ाले जमाय लेंगड़ी–मुंडी के चपलेदे कायनूं, असन दांत के कडरेसे।

♠ **दांत दखतोर ।**

दांत देखना।

♣ दांत देखकर पशुओं के आयु का अनुमान लगाना।

उदा0– 'चार दात ले आगर होली, डोकरी गाय आय ना।

♠ **दिया बारून डगरातोर ।**

चिराग लेकर ढूंढना।

♣ परिश्रम, छानबीन करना।

उदा0– बड़े भाईगमानी आस ना तुय, नाहले दिया धरून डगराले बले पंडरी बायले नी मिरे।

♠ **दुबी ने गाड़ा लटकतोर ।**

तिनके से गाड़ी का अटकना।

♣ छोटी बाधा आने पर कार्य का रूक जाना।

उदा0– जमाय बानी सरली, एबे फेर काय दुबी ने गाड़ा अरजली।

♠ दुय जीव होतोर ।

दो जान होना।

♣ गर्भवती होना।

उदा0– दुय जीव चो बायले आय, फेर बले धर सकल पानी बोउन आनेसे ।

♠ दुय अखरी बकतोर ।

गाली देना, सतत् बकना।

♣ गालियों का प्रयोग करना, उत्तेजित होना।

बस्तर के ग्राम्य जीवन में जब कोई व्यक्ति किसी बात पर नाराज हो जाता है तो उत्तेजित अवस्था में सतत् गालियाँ बकने लगता है। वह गाली देने की चरम सीमा पर पहुँच कर सभी सीमाएं लांघ जाता है, इस अवस्था को दुय अखरी बकना कहा जाता है।

उदा0 – मंय हुनके काईं नी बलले, हुन एउन मके दुय अखरी बकलो। ।

♠ देवलोक होतोर ।

गुजर जाना।

♣ प्रतिष्ठित व्यक्ति का देहावसान होना।

उदा0– जीव रहोत ले आमचों गाँव–पारा ने इहार–जहार होते रए, देवलोक होलो दिन ले छिना पड़ली।

♠ धरून आन बल्ले, मारून आनतोर ।

पकड़ कर लाने के स्थान पर मार कर लाना।

♣ आदेशों का पालन न करना।

उदा0– कितरय समंजाले बले संमजले तो अबूज के, धरून आन बलतो के मारून आनेसे ।

♠ धोतीमारा होतोर ।

धोती पहनने वाला बनना।,

♣ शहराती बनना।

जैसे :– धोतीमारा होले नी होय, लेंगटी लगान माटी खनतोर आय। अर्थात् शहराती बनने से नहीं होगा, लंगोटी लगाकर मिट्टी खोदना चाहिए। यह मुहावरा एक आलसी और कामचोर बालक को सीख देने के लिए ग्रामीणों का प्रिय मुहावरा है।

♠ धुरली छंडातोर ।

धूल छुड़ाना/उड़ाना।

♣ अस्त–व्यस्त करना, धूल–घूसरित करना/ नेस्तनाबूद करना।

उदा0– डंडिक थेबा धुरली नी छंडाले बल्ले मंय आपलो बाप चो बेटा नाईं।

♠ नकटी सुआंग होवतोर ।

नाक कटी स्त्री की तरह होना।

♣ अशोभनीय कार्य करना।

उदा0– दईब खावतो पिवतो काजे अच्छा दिलीसे आउर हुन नकटी सुआंग होते बुलेसे।

♠ नंदी के नी दखुन ,फटई फुसकातोर ।

नदी देखे बिना ही कपड़े उतारना।

♣ उचित अवसर देखे बिना कार्य प्रारंभ करना।

उदा0– भार चमास बेरा पूरे–पूरे होउन बूता के मुरालो, नंदी के नी दखुन फटई फुसकालो ने असने होउआय ।

♠ नाके–काने ओराई होतोर ।

नाक –कान में टंगना।

♣ शारीरिक अंगों में आवश्यकता से अधिक श्रृंगार करना।

उदा0– काहाँ चो उपका धन के पावली जाले, नाके–काने ओरई होलिसे।

♠ नान जिया होतोर ।

छोटी जान का होना।

♠ **पनहीं ने पेटतोर ।**

जूते मारना।

♣ हेय समझकर उपेक्षा करना, अपमानित या तिरस्कृत करना।

उदा0– अदांय घरे ओललो ने पनही चे पनही पेटेन्दे।

♠ **पर बुधिया होतोर ।**

दूसरों का कहा मानना।

♣ दूसरों का कहा सुनना, दूसरों पर आश्रित होना ।

उदा0– इतरो बड़े बुड़गा होवला, मान्तर आजि बले पर चो बुध के धरेसे ।

♠ **पकावाड़ा करतोर ।**

अपव्यय करना।

♣ व्यर्थ करना।

उदा0– पेट भरले बले आईंख नी भरे, गुलाय पकावाड़ा करला से ।

♠ **पंचईत करतोर ।**

पंचायत करना।

♣ मीन–मेख निकालना।

उदा0– नानी असन गोठ के लमाउन, पंचईत काय काजे करसत जाले।

♠ **पानी पड़तोर ।**

पानी पड़ना या चढ़ना, जवान होना।

♣ चेहरे में चमक आ जाना।

लड़कियों के प्रथम ऋतु दर्शन की स्थिति को पानी पड़तोर कहा जाता है।

उदा0– 'ए लेकी चो एसु चे पानी पड़लीसे।'

अर्थात् : यह लड़की इसी वर्ष जवान हुई है।

♠ **पानी बोहलो पाछे पार बांदतोर ।**

पानी बहने के बाद बंध रोकना।

♣ समय रहते रीतियों के अनुसार आचरण करना चाहिए। समय व्यतीत

♣ हतोत्साहित होना।

उदा0– नान जिया नी होआ, डोकरी चो धन–माल तुमके चे मिरेदे।

♠ नाके माछी बसुक नी देतोर ।

नाक पर मक्खी बैठने न देना।

♣ अपने पर आंच न आने देना।

उदा0– कितरय बले अड़नाप बेरा पूरे इलो ने बले नाके माछी बसुक नी दिलो ।

♠ निनास लटकतोर ।

दम रूकना।

♣ मृत्यु हो जाना।

उदा0– लखिमबार दिने बले मँय हाट ने दखले ता, कालि सुनले साहांस लटकली बलुन।

♠ नी कन्हारतोर ।

चुप रहना।

♣ ध्यान न देना, अनुसुना कर देना ।

उदा0– नी कन्हारले कसन होयदे बुबु, घर–बाड़ी के बले दखुक लागेदे कि नाई।

♠ नोन–मिरी लगड़तोर ।

नमक मिर्च लगाना ।

♣ विवाद करना।

उदा0– आजि हारक मातुन एओ ता, –मिरी नी लगड़ले जाले बलासे।

♠ पसना थिपतोर ।

पसीना टपकना।

♣ कठिन परिश्रम करना।

उदा0– 'गोदी खोड़ते–खोड़ते थाने पसना थिपली।'

होने के बाद कार्य का परिणाम नहीं मिलता ।

उदा0– बेरा रतो बेरा बिहाव करून दिलो ने अच्छा होती, एबे पानी बोहलो पाछे पार बांदलो ने काय काम ?

♠ **पाट–पाट बुलतोर ।**

पीछे–पीछे घूमना ।

♣ खुशामद करना ।

उदा0– लेकी मने इली जाले सतरा चो पाट–पाट बुलुक लागेदे ।

♠ **पाठ दखातोर ।**

पीठ दिखाना।

♣ भाग जाना।

उदा0– मारा–पेटा मुरातो के पाठ दखाउन गदबदलो।

♠ **पाठ पढ़ातोर ।**

उल्टी पट्टी पढ़ाना।

♣ गलत कहकर बहकाना।

उदा0– गोठ के दोदललो, काय पाठ पड़ालो जाले।

♠ **पांय पड़तोर ।**

पांव पड़ना।

♣ जबरदस्ती करना।

उदा0– मन पड़ले देओ नाहले नाईं, मँय काचोय पांय नी पड़ें।

♠ **पांय मंडातोर ।**

कदम रखना।

♣ पहुँचना या प्रवेश करना।

उदा0– देव–धामी चो इलो बेरा आमचो राजा बले देवकोट नें पांय मंडाला।

♠ **पांय ने भंवरी होतोर ।**

पांव में चकरी होना।

♣ अस्थिर, सदैव चलते रहना, चलायमान।

उदा0– आमचो घर गोसेया चो पांय ने भंवरी होलीसे बुबु, डंडीक घरे नी थेबोत। बुलते चे रसोत।

♠ **पानी थिपातोर ।**

पानी की बूंदें चुआना।

♣ यह मुहावरा उद्धार करने का विरूद्धार्थी एक व्यंग्यात्मक शब्द है। जब कोई अपना पुत्र होकर भी माता–पिता की अवहेलना करता है, तब ऐसे मौके पर कहते हैं।

जैसे :– 'जा ना आमी बले तुचो भोरस नी करूं, तुचो ले बड़े–बड़े तो काईं नी करला, तुय चे कोन जानें मरतो बेरा पानी थिपासेबे।' अर्थात् : जाओ जी हम भी तुम पर निर्भर नहीं हैं, तुमसे बड़े–बड़े तो कुछ नहीं कर पाए तुम्हीं क्या मरते वक्त पानी की बूंदे चुहाओगे या टपकाओगे ।

♠ **पान ढाकुन गु खुंदातोर ।**

पत्ता ढांककर गू खुंदाना।

♣ धोखा देना, छल करना।

उदा0– आमचो लोक होउन आमके पतर ढाकुन गू खुंदाला।

♠ **पानी चेगतोर ।**

जवान होना।

♣ चेहरे में चमक आना।

उदा0– दुय दिन सुकलो पतर असन दखा देये, अबर खिडींक थोतना ने पानी चेगली।

♠ **पताल चो मछरी, सरग चो आमा,**
केबे आनुन देसे, मोचो काना मामा ।

पाताल की मछली और स्वर्ग का आम, कब लाओगे, काने आंख वाले

मामा ?

♣ दुर्लभ फलाकांक्षा ।

उदा0– मंजपुर ने रलो जिनीस के आन बल्ले आनेंदे, पताल चो मछरी आउर सरग चो आमा काहां ले आनुन देयेदे ?

♠ **पियास लागले, चुआं खनतोर ।**

प्यास लगने पर कुँआ खोदना।

♣ पहले से कोई उपाय न कर रखना।

उदा0– एबे राती बेरा काहाँ ले कोन नोन देयेदे, हुनी काजे आघत ले जंवटाउन संगाउन रतोर आय, पियास लागले चुआं खनले तुरते काय मिरेदे।

♠ **पींडा दखातोर ।**

चूतड़ दिखाना।

♣ चिढ़ाना, ओछे ढंग से बहुत अधिक प्रसन्नता प्रदर्शित करना।

उदा0– खेलतो बेरा खेललो पाछे पिंडा दखाउन फस–फस।

♠ **पीढ़ा देतोर ।**

पीढ़ा देना। आसन देना।

♣ सम्मान देना, सम्मान करना।

उदा0– पीढ़ा देस बाबू, आले बसा काका, खुबे दिन ने दखा दिलास।

♠ **पूरे–पूरे होतोर ।**

आगे–आगे होना।

♣ योग्य दर्शाना। किसी कार्य को न जानकर आगे–आगे होना।

उदा0– नी जानलो बूता के करतो काजे पूरे–पूरे होवतोर नोहांय।

♠ **पेट मारतोर ।**

पेट का माराजाना।

♣ भूखे मारना।

उदा0– पेट मरेदे बलुन कुली–भुती करूंसे नाहले, आजी चो माहाँग जुग ने

काईं करूक नी होय।

♠ **पेटे ओलतोर ।**

पेट में घुसना।

♣ किसी का भेद लेने के लिए उससे घनिष्ठता स्थापित करना।

उदा0– गांडा घरो चो भेद के जानतो काजे पेट ने ओलुक लागेदे।

♠ **पेट ने जातोर ।**

पेट में जाना।

♣ उदरस्थ होना, पचा लेना।

उदा0– कोन जनम चो भुकाहा जनम इलो से आमचो घरे, काई के हाते धराउन दिले एचो पेट ने जायेसे।

♠ **फटई फुसकतोर ।**

कपड़ा ढीला होना ।

♣ हिम्मत खोना।

उदा0 – सलपी रूख ने चेगते–चेगते थाने फटई फुसकली।

♠ **फटई फुसकातोर ।**

कपड़े उतारना ।

♣ हिम्मत छोड़ना।

उदा0– पुलिस बीता के दखुन, खंगार चो फटई फुसकली।

♠ **फदीता करतोर ।**

किरकिरी करना।

♣ जलील करना।

उदा0– सतरा–सतरी घरे जाउन मांय के फदीता करतो बेटी चो गुन अच्छा नोहांय।

♠ **फांदा ने पड़तोर ।**

फंदे में पड़ जाना या,

♣ किसी के चँगुल में आ जाना।

उदा0– गाँव पारा चो उपडेंगी लोक संगे मतवारी धंदा चो फांदा ने पड़ले, घर जा पयसा जा।

♠ **फुटलो आईंख नी भावतोर ।**

फूटी आँख ना सुहाना ।

♣ तनिक भी अच्छा न लगना । पसंद न करना ।

उदा0– पन गाँव चो लेका के दखले, फुटलो आईंख नी भाए ।
मके कसन आय जाले हुन लेका फुटलो आईंख नी भाये।

♠ **फुंडा धरतोर ।**

सांस चढ़ना।

♣ दम भरना। दम फूलना।

उदा0– आजि चो बूता फुंडा धरतो माहा होली, डंडिक हिंडलो ने फुंडा धरली।

♠ **फुटलो हांडी के लाख दिलो असन काट करतोर।**

♣ समाधान करना।

उदा0 – रोजे झगड़ा लागतो पलटा, फुटलो हांडी के काट करून दियास बे ।

♠ **फूल फुटतोर ।**

♣ फूल का खिलना।

उदा0 – आमी सुनलूसें कि तुमचो घरे गोटोक फूल फुटलीसे मनें।

♠ **फूल खोंचतोर ।**

फूल खोंचना।

माहला अर्थात् मंगनी, वर के लिए कन्या माँगना।

उदा0– मोचो गोठ के मान नाहले फूल खोचतो लोक के हाक देउन बोहरानी करून देयेन्दे।

♠ **बयला असन बूता करतोर ।**

बैल की तरह काम करना।

♣ अधिक परिश्रम करना।

उदा0– कुकड़ा बासे बेड़ा ने नांगर धरून गेलोसे, दिन भर बयला असन बूता करून, सांझ बेरा एयेदे।

♠ बरी पाटकुति, नोन लगातोर ।

प्रत्येक बड़ी के पीछे नमक लगाना।

♣ अनावश्यक परिश्रम करना।

उदा0– सरसरा बूता के सारून दिले नी होती, बड़ी पाटकुति नोन के लगासीस।

♠ बंस बुड़तोर ।

♣ वंश नाश होना।

उदा0– कुकड़ा–चिंगड़ा जमाय मिसाउन ठवकाय रली, मान्तर उफड़ाहा रोग ने बंस बुड़ली।

♠ बंस बुड़ातोर ।

वंश डुबोना।

♣ वंश नाश करना।

उदा0– गुलाय घर–दुआर के तसेयानास करसत कुकड़ा मन, एसु एचो बंस बुड़ाउक लागेदे।

♠ बसलो ओंडार, के काड़ी करतोर ।

मधुमक्खी के छत्ते को छेड़ना।

♣ बैठे बिठाये मुसीबत मोल लेना।

उदा0– ओगाय बसलो मनुख के नी लाग बललेकृ नी सुनलो, मार खादलो हुनी काजे बलले बसलो ओंडार के काड़ी करतोर नुहाय बलुन।

♠ बाघ आउर बोकड़ी चो गोटकी घाटे पानी खावतोर ।

शेर और बकरी का एक ही घाट में पानी पीना।

♣ दोस्ती गाँठना।

उदा0– दुय दिन पूरे एक दूसर चो जीव के धरतो काजे मारा–पेटा होला,

एबे बाघ आउर बोकड़ी चो गोटकी घाटे पानी खावतोर के जमाय गाँव चो लोक दखला।

♠ **बायले मुंहा होतोर ।**

स्त्री मुख होना।

♣ जोरू का गुलाम होना। आवाज़, सूरत और स्वभाव से स्त्रियों की तरह होना। एक अर्थ में पुरूष होते हुए भी स्त्री की तरह आचरण करना।

उदा0– कोनी घरे इलो ने भीतरे लुकुन देउआय, ए बायले मुँहा असन काय चाल आय ?

♠ **बाट निकारातोर ।**

रास्ता निकालना।

♣ किसी उपाय या उक्ति से काम चलाना।

उदा0– 'दुनों चो नोकसान होली, कोन हरजाना देयेदे, कोनी बाट निकरावा।'

♠ **बाट धरतोर ।**

रास्ता पकड़ना।

♣ रास्ते की ओर बढ़ना।

उदा0– 'कुकड़ा बासे उठुन मँय बेड़ा चो बाट के धरुआंय।'

♠ **बाट भुलकतोर ।**

रास्ता भूल जाना।

♣ बहुत दिनों के बाद किसी से मिलने के लिए उसके यहाँ जाना।'

उदा0– 'इया मामा, इया आजि कोन बाटे बाट भुलकलास।'

♠ **बाटे हागुन पतरी ढाकतोर ।**

रास्ते में शौच कर पत्तल ढंकना।

♣ धोका देना।

उदा0– 'गेलो बरख गभार बेड़ा के कमासे बलुन सांगलो, बेरा अमरतो के बाटे हागुन पतरी ढाकलो।'

♠ **बाटे बसातोर ।**

धोका देना।

♣ मंझधार में छोड़ना।

उदा0– पखनागुड़ेया मंद खेआयेन्दे बलुन भाटीसार बाटे नेते रये, एयेंसें बलुन बाटे बसाउन दिलो।

♠ **बारा गाइन होवतोर ।**

बारह गाँव की होना।

♣ चरित्रहीनता।

उदा0– ए बायले बले बारा गाइन आय, एचो संगे इहार–जहार तो लाफी, डंडिक थेबुन गोठेयातोर नोहाँय।

♠ **बाड़ी कुदुन परातोर ।**

बाड़ कूदकर भागना।

♣ समय से पूर्व अवसर तलाशना।

उदा0– झपके बिहा करून दियास नाहले आजि काली चो रूसुम होली से बाड़ी कुदुन परातोर।

♠ **बांजा घरो बेटा होतोर ।**

कोख खुलना, किस्मत बदलना।

♣ ऐसी स्त्री को बच्चा होना जिसे पहले कभी बच्चा न हुआ हो अथवा काफी समय के बाद हुआ हो।

उदा0– मांगा खाया मुण्डा माहाल बनालो, बांजा घरो बेटा होलो असन।

♠ **बांजिन घरो बेटा होतोर ।**

बांझ औरत के यहाँ बेटा पैदा होना।

♣ असम्भव बात।

उदा0– दिन मंझन के तारा दखा दिली, बांजिन घरो बेटा होवलो असन।

♠ **बिराक करतोर ।**

प्रतिक्रिया स्वरूप क्रोध करना।

♣ नाराज होना।

उदा0– काली नाहले परान दिन जायेन्दे बलतो के बिराक करलो।

♠ **बुता मुरातोर ।**

श्रीगणेश करना।

♣ किसी कार्य का शुभारंभ करना।

उदा0– आले मामा, कटई बूता सरली, मांजन फांदतोर बूता केबे मुरातोर आय।

♠ **बुद बाम होतोर ।**

अक्ल का चरने जाना।

♣ अक्ल का काम न करना।

उदा0– गाय–बयला के नी ढील बलतोके, ढीलुन खेदुन दीलो, एचो बुद बले बाम होली।

♠ **बूता चो मांझ धरतोर ।**

कार्य में डूबा हुआ।

♣ निमग्न, डूबा हुआ, कार्य में मस्त होना।

उदा0– बूता चो मांझ ने गम जानुक नी होली, केबे सांझ होली जाले।

♠ **बूता अटकतोर ।**

कार्य में रूकावट उत्पन्न होना।

♣ किसी की मृत्यु हो जाने के कारण परिजनों के शुभकार्य अथवा सामाजिक कार्य में रूकावट आ जाती है।

उदा0– बेटा बीता नी एतो के बाप चो बूता अटकली।

♠ **बेरा फिटतोर ।**

अवसर चूक जाना।

♣ सुअवसर का उपयोग न कर पाना।

उदा0– एबे अमरसीस, बेरा फिटली खिडींक आघे एउन रतीस।

♠ **भाटा लागले, बूटा डगरातोर ।**

शौच लगने पर, पौधा ढूँढना।

♣ असमय कार्य करना।

उदा0– सबे दांय चो टकर पड़ली कायनूं, भाटा लागली गुनुक पानी डगरायेसे।

♠ भामरी होतोर ।

भ्रमित होना।

♣ कुछ समझ में न आना।

उदा0– अएतवार हाट चो झोप के दखुन मँय बले डंडिक भामरी होउन गेले।

♠ भुईं ने पांय नी मांडतोर ।

जमीं पर पांव न पड़ना।

♣ अहंकार करना।

उदा0– दुय दिन सहरे काय कमाउक गेलो कि भुईं ने पांय नी पड़ेसे।

♠ भूत के खेदतोर ।

भूत भगाना।

♣ सबक सिखाना।

उदा0– बोहडुन एओ ता नूं, आजि हुनचो भुत के खेदायेन्दे।

♠ मनुख होवतोर ।

मनुष्य होना।

♣ मानवोचित आचरण करना।

उदा0– मनुख मांदी ने रतो लोक के उपडेंगी होतोर नोहांय, गाँव पारा चो इजित नी जाओं बलुन, मनुख होउन रतोर आय।

♠ मरलो बाघ चो मेछा उखनतोर ।

मरे हुए शेर की मूछें उखाड़ना।

♣ डींग हाँकना।

उदा0– बड़गा धरून इलो बेरा लुकलो एबे मरलो बाग चो मेछा झिकेदे मने।

♠ मन मारतोर ।

मन मारना।

♣ इच्छाओं को दमन करना, मन में किसी बात की पहले जैसी इच्छा न रह जाना।

उदा0– गाहना–गोटा नी रलो ने बेटी के देते बले, नी रलो लागुन मन के मारून बिदा करले।

♠ मछरी चो पिला के पोंहरूक सिखातोर ।

मछली के बच्चे को तैरना सीखाना।

♣ जन्मजात गुण होना।

उदा0– पांच ठान पिला जन्माउन पोसले, एबे मके पोंहरूक सिखायेसे।

♠ माछी मारतोर ।

मक्खियाँ मारना ।

♣ निकम्मे रहकर समय बिताना।

उदा0– जमाय के बिकुन सारलो अदांय माछी नी मारले काय बुता करेदे।

♠ मान बाड़तोर ।

सम्मान बढ़ना।

♣ कद ऊँचा हो जाना। मान–सम्मान बढ़ जाना।
सफलता मिलना।

उदा0– नगत गुन रले मान बले बाड्डुआय।

♠ माटी संगे माटी होतोर ।

मिट्टी के साथ मिट्टी होना।

♣ हाड़तोड़ मेहनत।
कठिन परिश्रम से जीवन व्यतीत करना।

उदा0– घर बांदतो बेरा माटी संगे माटी होउक पड़ेसे।

♠ माली बांधतोर ।

कंठी बांधना।

♣ वैष्णव मान्यताएँ मानना अर्थात् मांस, मछली तथा मदिरा का त्याग

करना।

उदा0– 'बयदू आजिकाली भाटी बाटे नी दखा देये, माली बांदलो कायनूं।

♠ माटी मुंडेया होतोर ।

मिट्टी से सना होना।

♣ दोशी होना।

उदा0 – लुकुन–लुकुन आसे, असन बले माटी मुंडेया होतोर आय।

♠ माछी झुमतोर ।

अत्यधिक दयनीय स्थिति।

♣ अशक्त होना।

उदा0– जुआन रलो बेरा हुनचो आंट दखतो असन रली एबे तो माछी झुमेसे।

♠ मांगा खाया होतोर ।

मांग कर खाना।

♣ लालची प्रवृति का होना।

उदा0– 'ए मनुख बले जनम मांगा खाया उलटलो कायनूं, दखलो तीज के मांगुन खायेसे।

♠ माछी मारून हात गंधातोर ।

मक्खी मार कर हाथ गंधाना।

♣ छोटे से कार्य के लिए बदनाम होना।

उदा0 – खिडिंक आदक ने काय होयेदे ? माछी मारून हात गंधातो पलटा लाख–दुय लाख चो बूता के कर।

♠ मांय/देव के तेल चेघातोर ।

माँ/ देवता को तेल चढ़ाना,अर्पण करना।

♣ खबर लेना।

उदा0 – जमाय बुता के नसालो से, एओ ता नूं हुनचो मांय के तेल चेगायेन्दे।

♠ मुंडरी कसेला होतोर ।

बिन पेंदी का लोटा।

♣ ढुलमुल, अस्थिर विचारों वाला।

उदा0– आजि मोचो संगे, कालि हुनचो संगे, मुंडरी कसेला असन जीवना अच्छा नोहांय।

♠ मुंडे माटी देतोर ।

सिर पर मिट्टी देना।

♣ मृत्यु उपरांत, क्रियाकर्म करना।

उदा0– कालि चो मरनी रए, आजि माटी देउन सारलू।

♠ मुंड के फुलाउन, छुरा के डरतोर ।

सिर भीगोकर उस्तरे से डरना।

♣ एक बार हजामत के लिए बालों को पानी से भिगो लिया तो उस्तरे से डरने की आवश्यकता नहीं है।

उदा0– भुतियार चो कन्ताल होली ना, धान के काटतो काजे लोक नी मिरसोत, होली बे ना, मुंड के फुलाले छुरा के काय डरेन्दे ता ? घाट होली जाले दखवां, मुंड के फुलाउन छुरा के डरतोर नोहांय ।

♠ मुंदी नंगातोर ।

अँगूठी छिनना।

♣ यह मुहावरा आदिम समाज की एक सरस प्रथा का अर्थ स्पष्ट करता है। नृत्य करते वक्त जब कोई नायिका किसी अन्य ग्राम से आए युवक की ओर आकृष्ट हो जाती है, तब वह उसकी अंगूठी जबरन छीन लेती है, और कभी–कभी कालान्तर में दोनों दाम्पत्य सूत्र में भी बंध जाते हैं। अतः अंगूठी छिनने या मूंदी नगाने का अर्थ है किसी युवती का किसी युवक के प्रति आसक्त हो जाना या दूसरे शब्द में मिलने हेतु याचना करना।

उदा0– दखलास मामा, तुमचो बेटी के मन करतो पलटा, पन गाँव चो मंडई ने मूंदी नंगाउन आनलो से।

♠ मुंडे मुतातोर ।

सिर में पेशाब करवाना।

अत्यधिक मनमानी करने की छूट देना।

उदा0– मांय–बाप के एकलो छांडुन, बुलुन–बुलुन खायेसे जे, नानी बेरा ले मुंडे मुतातोर सिखाउन रला, तेबे तो करेसे।

♠ मुंड जोय देतोर ।

मुखाग्नि देना।

♣ दाह संस्कार करना।

उदा0– लेकी पाटकुति गोटोक लेका रए गुनुक बाप के मुँड जोय दिलो।

♠ मुँडे चेगातोर ।

सर चढ़ाना।

♣ अधिक लाड़–प्यार करना।

उदा0– पिला–झीला के जुगे मुंडे चेगालो, तेबे आय उपडेंगी होवलो।

♠ मुत ने दिया धरातोर ।

मूत्र से दिया जलाना।

♣ विशिष्ट व्यक्तित्व का होना।

उदा0– हुन फेर कोन राजा चो बेटा आय, हुनचो मुत ने दिया बरेदे।

♠ मुंडे हात देतोर ।

सिर में हाथ देना।

♣ चिंता करना।

उदा0– मुंडे हात दिलो ने नी होय, बेटी चो बिहा झटके करून दियास।

♠ मोहनी लगातोर ।

मोहनी लगाना।

♣ पूरी तरह से मुग्ध हो जाना।

उदा0– हुनी करेया लेकी संगे बिहा होयेन्दे बलेसे, काय मोहनी लगाली जाले।

♠ **राज करतोर ।**

राज करना।

♣ हुकुमत या शासन करना।

उदा0– परदेसी पलटन गेला नाहले आमके राज करूक मिरती।'

♠ **राम–राम करतोर ।**

राम–राम करना।

♣ पुराना कर्ज चुकता कर देना।

उदा0– बाचलो पयसा हाते धराउन 'सरपंच दादा के राम–राम बलुन दिले।'

♠ **लाज बिकुन खावतोर ।**

लाज/शर्म बेचकर खाना।

♣ बेशरम, निर्लज्ज होना।

उदा0– गुलाय खोर–खोर बुलेसे, लाज के बिकुन खादली कायनूं।

♠ **लागा खावतोर ।**

कर्ज लेना।

♣ किसी ऋण या उपकारों से दबा होना।

उदा0– 'तुचो बाप चो लागा नी खादलेसें, तुके मंडई दखातो काजे।'

♠ **लिलि–बांडा परातोर ।**

नौ–दो ग्यारह होना।

♣ सरपट भागना।

उदा0– पुलिस–पाइक के गाँव बाटे एतो के दखुन लयखन लिलि बांडा परालो।

♠ **लेंगड़ी मुंडी चपलतोर ।**

कच्चा चबाना।

♣ कठोर दण्ड देना, क्रोध में भरकर उसका अस्तित्व मिटा देना।

उदा0– पांच बरख पाछे दखा दिलो, आजि हुनचों लेंगड़ी–मुँडी जमा के चपलेदें।'

♠ **लेंगड़ी हलातोर ।**

पूंछ हिलाना।

♣ खुशामद करना।

उदा0– तीन हजार रूपया एकड़ आली–पाली गाँव चो मोल आय, देतोर होलो ने देस नाहले तुचो पूरे मँय लेंगड़ी नी हलाएं।

♠ **लेहरा पावतोर ।**

हवा लगना।

♣ असर पड़ना, समय के साथ चलना।

उदा0– आजिकालि चो लेका मन काहाँ नांगर धरसत गुनुक, कलि चो लेहरा पावली।

♠ **सार दखुन फार पजातोर ।**

जहाँ कुछ प्राप्ति हो, वहाँ लालची आदमी जम जाता है।

♣ अवसरवादी होना।

उदा0– समजले, एई दिन काजे टाकुन रलीस कायनूं, दूसर लोक असन तुय बले एबे सार दखुन फार पजासिस।

♠ **सींग अंकरातोर ।**

सींग उगाना।

♣ काबिल बनना। योग्य बनना।

उदा0– जुआन होते जाएसे, सींग अंकरली जानूं।

♠ **सुखुन काटा होतोर ।**

सूखकर काटा होना।

♣ बहुत दुर्बल होना।

उदा0– गुलाय डाक्टर आउर बईद के दखालो पाछे बले सुखुन चोपड़ी उलटली, काय देव धरली जाले।

♠ **सोवलो ठान ने कांडा–पाटी गनतोर ।**

उधेड़बुन में रहना।

♣ फिक्र में रहना, चिन्ता करना।

उदा0– बेटी चो बिहाव काजे, गुलाय रात सवलो ठान ने कांडा–पाटी गनते रये, काहाँ ले पयसा जंवटायेन्दे बलुन।

♠ हबकुन आनतोर ।

उलटकर जवाब देना।

♣ आरोपकर्ता को तत्काल क्रोध पूर्वक करारा जवाब देना।

उदा0– सोज गोठ के बलतो के हबकुन आनेसे मके।

♠ हात खजातोर ।

हाथ खुजलाना।

♣ आकस्मिक धन प्राप्ति का योग।

उदा0– बिहानत ले आजि हात खजायेसे, कोन लग चो हांडा मिरेदे जाले ?

♠ हात गोड़ फूलतोर ।

हाथ–पांव फूल जाना।

♣ डर से घबरा जाना।

उदा0– रान ने दतुन–पतर टुटाउक जाउन रलु, डुरका के दखते खन हात–पाँय फुलली।

♠ हात–पांय बसतोर ।

हाथ–पांव बैठ जाना।

♣ विवश होना।

उदा0– आघे चो असन हाट जाउक नी सकें, हात–पांय जमाय बसली।

♠ हात धरतोर।

हाथ थाम लेना।

♣ दाम्पत्य जीवन में बंध जाना ।

उदा0– गाँव–पारा आउर जमाय चो पूरे बला आज ले आमि दुनों एक दूसर चो हात के धरून्दे ।

♠ **हाट बसातोर ।**

बाजार बिठाना।

♣ पंचायत करना, विवाद करना।

उदा0– घर चो गोठ के घरे चे निमड़ाले होती, हाट काय काजे बसाला जाले।

♠ **हाट निकरातोर ।**

हाट निकालना।

♣ विवाद बढ़ाना।

उदा0– भीतरे जा बलतो के ए लगे फेर हाट निकरायेसे।

♠ **हात झिकतोर ।**

हाथ खींचना।

♣ साथ न देना।

उदा0– बदी होवतो पलटा हात झिकतोर अच्छा आय।

♠ **हागा उपरे ढेला पकातोर ।**

मल/कीचड़ के उपर पत्थर फेंकना।

♣ नीच के साथ ऐसा व्यवहार करना, जिसका प्रतिफल अपने लिए ही अहितकारी हो।

उदा0– नीच लोक चो संग करले, हागा ने ढेला पकालो असन आय।

♠ **हागा–मुता करतोर ।**

मल–मूत्र करना।

♣ अशक्त / बलहीन होना।

दूसरे अर्थ में कोई बीमार व्यक्ति इतना अशक्त हो जाता है कि वह बिस्तर में ही मल–मूत्र त्याग करता है अथवा इस अवस्था को मृत्यु के करीब इंगित करने के लिए किया जाता है।

उदा0– आमचो सतरा सवलो लगे हागा–मूता करसोत।

♠ **हीर निकरतोर ।**

फाँस निकलना।

♣ मन में होने वाली खटक दूर होना।

उदा0– खबर सुनतो के मोचो जीव ले हीर निकरली।

मुहावरों का महत्व

(व्याकरण की दृष्टि से)

व्याकरण की दृष्टि से शब्दों की तीन शक्तियाँ होती हैं –

अभिधा, लक्षणा, व्यंजना ।

जब किसी शब्द या शब्द–समूह का सामान्य अर्थ में प्रयोग होता है, तब वहाँ उसकी **अभिधा शक्ति** होती है। अभिधा द्वारा अभिव्यक्ति अर्थ को अभिधेयार्थ या मुख्यार्थ कहते हैं, जैसे हल्बी में 'मुँडे चेगतोर' जिसका हिन्दी में अर्थ 'सिर पर चढ़ना' होता है । 'सिर पर चढ़ना' का अर्थ किसी चीज को किसी स्थान से उठा कर सिर पर रखना होगा। परन्तु जब मुख्य अर्थ का बोध न हो और रूढ़ि या प्रसिद्धि के कारण अथवा किसी विशेष प्रयोजन को सूचित करने के लिए, मुख्य अर्थ से संबद्ध किसी अन्य अर्थ का ज्ञान हो तब जिस शक्ति के द्वारा ऐसा होता है उसे **लक्षणा** कहते हैं।

लक्षणा से 'सिर पर चढ़ने' का अर्थ आदर देना होगा। अन्य उदाहरणार्थ, आईंग ने मुततोर, आईंख मारतोर, दिया बारतोर, लहू चुहकतोर, बांवसी फूंकतोर, गोरोस–घीव खावतोर, आईंग खेलतोर, आदि में लक्षणा शक्ति का प्रयोग हुआ है। इसलिए ये मुहावरे हैं। परन्तु इस सन्दर्भ से यह द्रष्टव्य है कि लक्षणा के समस्त उदाहरण मुहावरे के अन्तर्गत नहीं आ सकते। लक्षणा के केवल वही उदाहरण मुहावरों के अन्तर्गत आ सकते हैं जो चिर अभ्यास के कारण रूढ़ या प्रसिद्ध हो गए हैं।

जब अभिधा और लक्षणा अपना काम करके विरत हो जाती हैं तब जिस शक्ति से शब्द–समूहों या वाक्यों के किसी अर्थ की सूचना मिलती है उसे **'व्यंजना'** कहते हैं। मुहावरों में जो व्यंग्यार्थ रहता है, वह किसी एक शब्द के अर्थ के कारण नहीं बल्कि सब शब्दों के श्रृंखलित अर्थों के कारण होता है, अथवा यह कहें कि पूरे मुहावरे के अर्थ में रहता है। इस प्रकार 'सिर पर

चढ़ना' मुहावरे का व्यंग्यार्थ न तो 'सिर' पर निर्भर करता है न 'चढ़ाने' पर वरन पूरे मुहावरे का अर्थ होता है 'उच्छृंखल, अनुशासनहीन अथवा ढीठ बनाना।' यह व्यंग्यार्थ अभिधेयार्थ तथा लक्षणा अभिव्यक्ति अर्थ से भिन्न होता है।

अलंकारों का प्रयोग

मुहावरों में अलंकारों का प्रयोग होता है, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि प्रत्येक मुहावरा अलंकार होता है अथवा प्रत्येक अलंकारयुक्त वाक्यांश मुहावरा होता है। नीचे कुछ मुहावरे दिए गए हैं जिनमें अलंकारों का प्रयोग हुआ है –

(क) सादृश्य मूलक मुहावरे –
रगरगा होवतोर, (लाल होना)
सोन असन दखा देतोर (उपमा– सोने के सदृश्य दिखाई देना)
इंगरा असन बरतोर (रूपक – आग की तरह जलना)
सोना सोना चे आय (अनन्वय – सोना, सोना ही होता है) आदि।

(ख) विरोधामूलक मुहावरे –
जत–खत करतोर, (अस्त– व्यस्त करना)
रन–भन करतोर, (अव्यवस्थित करना, गंदगी फैलाना)
खाले–उपरे दखतोर। (उपर–नीचे देखना)

(ग) सन्निधि अथवा स्मृतिमूलक मुहावरे –
चूड़ी चोपतोर (चूड़ी तोड़ना– एक परम्परा),
चूड़ी पिंधातोर (चूड़ी पहनाना– एक परम्परा),
बाती लिबतोर (बाती का बूझना),
दुकान ढापतोर, (दुकान बढ़ाना या बंद करना)
नाती–पोती पावतोर (पोता–पोती से सम्पन्न होना) आदि।

(घ) शब्दालंकारमूलक मुहावरे –
हाड़ा–गोड़ा बसतोर (हड्डियों का बैठ जाना अर्थात् काया कमजोर होना)

काचा–पाका होतोर (कच्चा–पक्का होना)
काचा–किरला खावतोर (कच्चा खाना)
घर–दुआर बिकतोर (घर–द्वार बेचना अर्थात् सम्पत्ति बेचना) आदि।

—0—

कथानकों, किंवदन्तियों, धर्म–कथाओं पर आधारित मुहावरे

प्रथाओं पर आधारित मुहावरे –
बांधन काटतोर, (बंधन काटना)
चूड़ी पिंदातोर, (चूड़ी पहनाना)
हाट बसातोर, (बाजार बिठाना)
हाट निकरातोर, (बाजार निकालना)
पोलई मांगतोर, (अन्न मांगना)
तेल चेगातोर, (तेल चढ़ाना)
चिवड़ा–दोना करतोर (चिवड़ा दोना करना अर्थात् एक प्रथा जिसके तहत वर–वधू पक्ष की विवाह के लिए आपसी सहमति बनाना) आदि।

कहानियों पर आधारित मुहावरे –
मंजूर मुठा होवतोर (मयूर पंख का गुच्छा होना।)
काना–खोड़िया होवतोर (लंगड़ा–लूला होना)
जलकामनी असन दखा देतोर (जलकामिनी की तरह दिखाई देना)
रूपा–सोना होवतोर (यहाँ रूपा और सोना का अभिप्राय, सोने–चाँदी से है।)
किरकी कुड़िया दखतोर (टूटी हुई झोपड़ी देखना, लोक मान्यता के अनुसार टूटी झोपड़ी देखना अपशगुन माना जाता है।) आदि।

व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का जातिवाचक संज्ञाओं की भाँति प्रयोग–
कभी–कभी व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का प्रयोग जातिवाचक संज्ञाओं की भांति मुहावरे बनाए जाते हैं, जैसे –
कुंमकरन असन सोवतोर (कुभंकरण की तरह सोना।)
रावन असन हिंडतोर (रावण की तरह चलना)
राजा हरिसचंद होवतोर (सत्यवादी राजा हरिष्चन्द्र होना) आदि।

अस्पष्ट ध्वनियों पर आधारित मुहावरे –

जब मनुष्य प्रबल भावावेश में होते हैं तब उनके मुंह से कुछ अस्पष्ट ध्वनियाँ निकल जाती हैं, जो बाद में किसी एक अर्थ में रूढ़ हो जाती हैं और मुहावरे कहलाने लगती हैं। ऐसे कुछ भावावेश और उनके कारण निकली हुई ध्वनियों के आधार पर बने हुए मुहावरों के उदाहरण निम्नांकित हैं –

(क) खुशी या हर्ष के स्वर आह–हा, वाह–वाह, आदि।

(ख) दुःख में – आह हा ता, सी–सी, चुक–चुक, हाय–हाय, आदि।

(ग) क्रोध में– उंह–हूं , आदि।

(घ) घृणा में – छि–छि, थू–थू ।

मनुष्येतर चैतन्य सृष्टि की ध्वनियों पर आधारित मुहावरे–

(1) पशु–वर्ण की ध्वनियों पर आधारित –

टर–टर करतोर, भू –भू करतोर,
बयला असन भुकरतोर, में–में करतोर,
चिंव–चिंव करतोर,
हुआ–हुआ करतोर आदि।

(2) पक्षी और कीट–पतंगों की ध्वनियों पर आधारित –

कांव–कांव करतोर,
कुकड़ा असन बासतोर,
कुकड़ी असन करकरतोर
कुकड़ा बासे उठतोर ।

(3) अन्य ध्वनियों के अनुकरण पर आधारित –

खुस–खुसा जातोर,
फस–फस होवतोर,
टिरिक–टिरिक जातोर,
मिट–मिट दखतोर,
कुटकुटा दुखतोर,

लिड़िंग–लाड़ंग होवतोर,
लटे–पटे झिकतोर,
भांय–भांय लागतोर आदि।

(4) अन्य जीव–जन्तुओं पर आधारित मुहावरे –
कुकुर असन बुलतोर (कुत्ते की तरह घूमना),
छेरी असन चपलतोर (बकरी की तरह चबाना),
माछी असन झूमतोर (मक्खी की तरह भिनभिनाना),
ओंडार असन बसतोर (मधुमक्खी की तरह बैठना),
मंजूर असन नाचतोर (मयूर की तरह नाचना),
मछरी असन सुखतोर (मछली की तरह सूखना),
मेंडका असन डगातोर (मेंढक की तरह कूदना),
चाटी असन झूमतोर (चींटी की तरह इकठ्ठा होना) आदि।

(5) तरल पदार्थों की गति से उत्पन्न ध्वनि पर आधारित –
धारे–धार जातोर, (धार की शक्ल में बहना)
खल–खला बोहतोर, (खुल कर बहने का एक भाव)

(6) वायु की गति से उत्पन्न ध्वनि पर आधारित –
लेहरा मारतोर,
सांय–सांय करतोर,
भांय–भांय लागतोर आदि।

(7) शारीरिक चेष्टाएं मनोभाव प्रकट करती हैं और उनके आधार पर कुछ मुहावरे बनते हैं, जैसे–
उधल–छटक होतोर (अत्यधिक आक्रोशित होना),
आपटी होवतोर (गिरना),
छाती पेटतोर (छाती पीटना),
लात मारतोर (लात या पैर मारना),
दाँत–पाटी बसतोर (दंत वलय का बैठना),
नाचा–डगा करतोर (नाच–कूद करना),

मेंछा अलटतोर (मूछें ऐंठना),
लेंगड़ी हलातोर (पूंछ हिलाना),
टोंड बनातोर (मुंह बनाना),
आईंख दखातोर (आँख दिखाना),
आपटी–कचाड़ी होवतोर (गिरना–पड़ना),
गोड़ आपटतोर (पैर पटकना)
पेट ने रतोर (पेट में होना अथवा रहना)
पेट थेबतोर (गर्भ धारण करना)
पेट जानतोर (गर्भ का जानना)
पेटेहारिन होतोर (गर्भवती होना)
पेट उतरातोर (गर्भ गिराना)
पीलाहारी होतोर (बच्चे वाली होना) आदि।

मुहावरे

मनोवैज्ञानिक कारणों से

(क) अचानक किसी संकट में आने से संबंधित मुहावरे–
लहू चो टार बोहतोर (खून की धार बहना),
बारों महेना भुके सोवतोर (बारहों मास भूखे सोना),
पाग नसतोर (तासिर बिगड़ना),
आव नसतोर (आँच, ताप बिगड़ना),
काहाँय चो नी होवतोर (कहीं का न होना),
करम फूटतोर (भाग फूटना),
देंहे नसतोर (शरीर बिगड़ना),
भाग ने नी रतोर (किस्मत में न होना) आदि।

(ख) अतिश्योक्ति की प्रवृत्ति से उद्‌भुत मुहावरे–
सरग ले तारा टुटातोर (आसमान से तारा तोड़ना),
सरग पताल गोटोक करतोर (आकाश–पाताल एक करना)
भुईं के दुय गोंदा करतोर (पृथ्वी को दो टुकड़ा करना)

नंदी के उल्टातोर (नदी के बहाव को उल्टा करना)
लहू चो टार बोहातोर, (खून की धार बहाना) आदि।

(ग) भाषा को अलंकृत और प्रभावोत्पादक बनाने के प्रयास से उद्‌भुत मुहावरे –

जोनी उजर होवतोर (चाँदनी रात होना)
डूमर फूल होवतोर (गूलर का फूल होना)
फूल असन फूलतोर (फूलों की तरह खिलना) आदि।

किसी शब्द की पुनरावृत्ति पर आधारित मुहावरे –

लुकुन–लुकुन खावतोर (छिप–छिप के खाना),
छिउन–छिउन दखतोर (छू–छू के देखना),
धारे–धार बोहतोर (धार की शक्ल में बहना), आदि।

दो क्रियाओं का योग करके बनाए हुए मुहावरे –

उठा–बसा होवतोर (उठ–बैठ होना)
खाउन–पिउन मरतोर (खा–पी के मरना)
धरा–धरी होवतोर (झूमा–झटकी होना)
पढ़ा–लिखा नी होवतोर (पढ़ा–लिखा न होना) आदि।

दो संज्ञाओं को मिलाकर बनाए हुए मुहावरे –

दिया–बाती करतोर (दिया–बाती करना)
टंगेया–फरसा धरतोर (कुल्हाड़ी फरसा पकड़ना)
छेरी–बोकड़ी चरातोर (बकरा–बकरी चराना)
दांदर–सोड़ेया फाफड़तोर
(दांदर–सोड़ेया अर्थात् मछली पकड़ने का एक पारम्परिक यंत्र खाली करना)
कुकड़ा–कुकड़ी टोकातोर (मुर्गा या चूजा के सामने चाँवल का दाना डालने के बाद उसे चुगाना। यह शब्द देवी–देवताओं के प्रसंग में उच्चारित होता है।)
माँय–बहिन नेतोर (माँ–बहन ले जाना, इज्जत लेना) आदि।

अंग संबंधी मुहावरे

तुमके छिउन किरिया खाएंसे / तुमचो किरिया खाएंसे

कसम खाना, अर्थात् मैं आपके अंग को छूकर कसम खाता हूँ कि मैंने अमुक वस्तु नहीं देखी ।

तुमचो किरिया मंय हाजलो पयसा के नी दखले।

मुच–मुच–मुच हांसतोर ।

मुसकाना, अर्थात् तुम्हारी मुस्कुराहट भेद भरी है, कोई न कोई बात अवश्य है।

काय होली गुनुक मुच–मुच–मुच हांसी फुटेसे ।

देहें कुट–कुटा दुखतोर ।

अंग–अंग टूटना

इस दर्द ने तो सारा बदन तोड़ कर रख दिया है।

काली चो बूता लागुन देहें कुट–कुटा दुखेसे ।

देहें–पांय ढिलंग होतोर ।

अंग–अंग ढीला होना, बहुत थक जाना

काली मंय तुमचो संगे जाते मान्तर मोचो जमाय देहें–पांय ढिलंग होलीसे।

बुद बाम होतोर ।

अक्ल का चकराना, कुछ समझ में न आना

हाट जातो काजे घर ले निसकलो आउर नंदी रेटे जाउन बसलो, एचो बुद बाम होली कायनूं ।

आँईख दखातोर ।

आँख दिखाना, गुस्से में देखना।

काली चो इलो लोक मके आईंख दखाएसे, एचो आँईंख के फुटाउक लागेदे ।

आईंख लटकतोर ।

नींद आना,

गुलाय रात ढलपलते रए, एबे असन आँईंख लटकली।

आईंख लुकातोर ।

नंदी के उल्टातोर (नदी के बहाव को उल्टा करना)
लहू चो टार बोहातोर, (खून की धार बहाना) आदि।

(ग) भाषा को अलंकृत और प्रभावोत्पादक बनाने के प्रयास से उद्‌भुत मुहावरे –

जोनी उजर होवतोर (चाँदनी रात होना)
डूमर फूल होवतोर (गूलर का फूल होना)
फूल असन फूलतोर (फूलों की तरह खिलना) आदि।

किसी शब्द की पुनरावृत्ति पर आधारित मुहावरे –

लुकुन–लुकुन खावतोर (छिप–छिप के खाना),
छिउन–छिउन दखतोर (छू–छू के देखना),
धारे–धार बोहतोर (धार की शक्ल में बहना), आदि।

दो क्रियाओं का योग करके बनाए हुए मुहावरे –

उठा–बसा होवतोर (उठ–बैठ होना)
खाउन–पिउन मरतोर (खा–पी के मरना)
धरा–धरी होवतोर (झूमा–झटकी होना)
पढ़ा–लिखा नी होवतोर (पढ़ा–लिखा न होना) आदि।

दो संज्ञाओं को मिलाकर बनाए हुए मुहावरे –

दिया–बाती करतोर (दिया–बाती करना)
टंगेया–फरसा धरतोर (कुल्हाड़ी फरसा पकड़ना)
छेरी–बोकड़ी चरातोर (बकरा–बकरी चराना)
दांदर–सोड़ेया फाफड़तोर
(दांदर–सोड़ेया अर्थात् मछली पकड़ने का एक पारम्परिक यंत्र खाली करना)
कुकड़ा–कुकड़ी टोकातोर (मुर्गा या चूजा के सामने चाँवल का दाना डालने के बाद उसे चुगाना। यह शब्द देवी–देवताओं के प्रसंग में उच्चारित होता है।)
माँय–बहिन नेतोर (माँ–बहन ले जाना, इज्जत लेना) आदि।

अंग संबंधी मुहावरे

तुमके छिउन किरिया खाएंसे / तुमचो किरिया खाएंसे

कसम खाना, अर्थात् मैं आपके अंग को छूकर कसम खाता हूँ कि मैंने अमुक वस्तु नहीं देखी ।

तुमचो किरिया मंय हाजलो पयसा के नी दखले।

मुच–मुच–मुच हांसतोर ।

मुसकाना, अर्थात् तुम्हारी मुस्कुराहट भेद भरी है, कोई न कोई बात अवश्य है।

काय होली गुनुक मुच–मुच–मुच हांसी फुटेसे ।

देहें कुट–कुटा दुखतोर ।

अंग–अंग टूटना

इस दर्द ने तो सारा बदन तोड़ कर रख दिया है।

काली चो बूता लागुन देहें कुट–कुटा दुखेसे ।

देहें–पांय ढिलंग होतोर ।

अंग–अंग ढीला होना, बहुत थक जाना

काली मंय तुमचो संगे जाते मान्तर मोचो जमाय देहें–पांय ढिलंग होलीसे।

बुद बाम होतोर ।

अक्ल का चकराना, कुछ समझ में न आना

हाट जातो काजे घर ले निसकलो आउर नंदी रेटे जाउन बसलो, एचो बुद बाम होली कायनूं ।

आँईख दखातोर ।

आँख दिखाना, गुस्से में देखना।

काली चो इलो लोक मके आईंख दखाएसे, एचो आँईंख के फुटाउक लागेदे ।

आईंख लटकतोर ।

नींद आना,

गुलाय रात ढलपलते रए, एबे असन आँईंख लटकली।

आईंख लुकातोर ।

आँख छुपाना
आजिकाली मके दखुन आईंख लुकायेसे।

करजा उपरे पखना मंडातोर ।

कलेजे के उपर पत्थर रखना, दुख में धीरज धरना
मरतो बीता मरलो मान्तर हुनचो बायले करजा उपरे पखना मंडाउन गागुन ओगाय होली।

जीव थामतोर ।

जी कड़ा करना
डोकरा बेरा जुआन बेटा चो मरतो के जीव के थामुन बसला।

करजा सितरतोर ।

कलेजा ठंडा पड़ना, संतोष हो जाना।
मोचो बेटा के बादुंन चावड़ी नीला गुनुक तुचो करजा सितरली।

नाक ने माछी बसुक नी देतोर ।

नाक में मक्खी बैठने नहीं देना, अपने उपर आँच न आने देना।
इतरो रिसाहा आय कि नाक ने माछी बसुक नी देये।

टोडें पानी पजरतोर ।

मुंह में पानी आना, दिल ललचाना।
गुर चो तपलो बोबो के दखुन थाने टोडें पानी पजरली।

थोतना लुकातोर ।

मुंह छुपाना, लज्जित होना।
इजित के बिकुन खादलीस, थोतना लुकाले काय होएदे।

थोतना करेया करतोर ।

मुंह काला करना, कलंक लगाना।
बेटा, तुचो लागुन तुचो मांय–बाप चो थोतना करेया होली।

थोतना उतरातोर ।

मुंह उतारना, उदास होना।
जे होली, होली थोतना उतराउन बसलो ने काय होएदे।

थोतना दखतोर ।

मुंह देखना, दूसरे पर आश्रित होना।
अदांय आमचो बेड़ा ने बले अबगो गहूं उपजेदे, काचोय थोतना दखुक नी लागे।

टोडरा पिचकतोर ।

गला दबाना, अत्याचार करना।

गाँव चो सावकार लागा देउन गरीब–धुरीब लोग मन चो टोडरा के पिचकेसे, उपरे दईब दखेसे।

टोडरा चो माली होतोर ।

गले का हार होना, बहुत प्यारा होना।

तुय तो हुनचो टोडरा चो माली आस, हुन फेर तुचो गोठ के काटेदे।

मुंडे देव धरतोर/देव धरतोर ।

धुन में रहना,

तुचो मुंडे जिदलदांय दख, देव चेगुन रहेसे ।

मुंड खाले करतोर ।

लजा जाना

मके दखुन मुंड के खाले करून दूसर बाट दखेसे।

चुच्छाय हात होतोर ।

खाली हाथ होना, रूपए–पैसे नहीं होना।

सरकार बाटले पांच आउर हजार रूपया चो नोट बंद करतो के चुच्छाय हात होले।

हात झिकतोर ।

हाथ खींचना, साथ न देना।

मनुख चो अडरा बेरा, नंगत मनुख बले हात झिकुन देउआय।

कान भरतोर ।

कान भरना, चुगली करना।

गुरूजी चो कान भरलो लागुन, इसकुल चो लेका–लेकी मन मार खादला।

हाता–हात धरतोर ।

हाथों हाथ लेना।

झपके जाउन हाता–हात धरून आव।

हात धरातोर ।

हाथ थमना ।

एसु मांध महेना मंडई सरले लेका–लेकी चो हात धराउन देतोर आय।

अंडखी फुटातोर ।

आँख छुपाना
आजिकाली मके दखुन आईंख लुकायेसे।

करजा उपरे पखना मंडातोर ।

कलेजे के उपर पत्थर रखना, दुख में धीरज धरना
मरतो बीता मरलो मान्तर हुनचो बायले करजा उपरे पखना मंडाउन गागुन ओगाय होली।

जीव थामतोर ।

जी कड़ा करना
डोकरा बेरा जुआन बेटा चो मरतो के जीव के थामुन बसला।

करजा सितरतोर ।

कलेजा ठंडा पड़ना, संतोष हो जाना।
मोचो बेटा के बादुंन चावड़ी नीला गुनुक तुचो करजा सितरली।

नाक ने माछी बसुक नी देतोर ।

नाक में मक्खी बैठने नहीं देना, अपने उपर आँच न आने देना।
इतरो रिसाहा आय कि नाक ने माछी बसुक नी देये।

टोडें पानी पजरतोर ।

मुंह में पानी आना, दिल ललचाना।
गुर चो तपलो बोबो के दखुन थाने टोडें पानी पजरली।

थोतना लुकातोर ।

मुंह छुपाना, लज्जित होना।
इजित के बिकुन खादलीस, थोतना लुकाले काय होएदे।

थोतना करेया करतोर ।

मुंह काला करना, कलंक लगाना।
बेटा, तुचो लागुन तुचो मांय–बाप चो थोतना करेया होली।

थोतना उतरातोर ।

मुंह उतारना, उदास होना।
जे होली, होली थोतना उतराउन बसलो ने काय होएदे।

थोतना दखतोर ।

मुंह देखना, दूसरे पर आश्रित होना।
अदांय आमचो बेड़ा ने बले अबगो गहूं उपजेदे, काचोय थोतना दखुक नी लागे।

टोडरा पिचकतोर ।

गला दबाना, अत्याचार करना।

गाँव चो सावकार लागा देउन गरीब–धुरीब लोग मन चो टोडरा के पिचकेसे, उपरे दईब दखेसे।

टोडरा चो माली होतोर ।

गले का हार होना, बहुत प्यारा होना।

तुय तो हुनचो टोडरा चो माली आस, हुन फेर तुचो गोठ के काटेदे।

मुंडे देव धरतोर/देव धरतोर ।

धुन में रहना,

तुचो मुंडे जिदलदांय दख, देव चेगुन रहेसे ।

मुंड खाले करतोर ।

लजा जाना

मके दखुन मुंड के खाले करून दूसर बाट दखेसे।

चुच्छाय हात होतोर ।

खाली हाथ होना, रूपए–पैसे नहीं होना।

सरकार बाटले पांच आउर हजार रूपया चो नोट बंद करतो के चुच्छाय हात होले।

हात झिकतोर ।

हाथ खींचना, साथ न देना।

मनुख चो अडरा बेरा, नंगत मनुख बले हात झिकुन देउआय।

कान भरतोर ।

कान भरना, चुगली करना।

गुरूजी चो कान भरलो लागुन, इसकुल चो लेका–लेकी मन मार खादला।

हाता–हात धरतोर ।

हाथों हाथ लेना।

झपके जाउन हाता–हात धरून आव।

हात धरातोर ।

हाथ थमना ।

एसु मांध महेना मंडई सरले लेका–लेकी चो हात धराउन देतोर आय।

अंडखी फुटातोर ।

अंगुली फोड़ना, श्राप देना।
माता खाती जे गुलाय बेड़ा चो धान–पान के चिरकुट करून दिला।
पांय ने भंवरी होतोर ।
पांव में चकरी होना, चक्कर काटना, अस्थिर रहना।
डंडिक नी बसे, पांय ने भंवरी होली से कायनूं।

ध्वनि मूलक तथा द्विरूक्ति मूलक शब्दों से ध्वनित मुहावरे

- टिरिक–टिरिक जातोर । (चलने का भाव)
- चिर–चपट करतोर । (सफाचट करना)
- टिबिक–टिबिक हिंडतोर। (चलने का भाव)
- केच–केचा दखा देतोर । (गंदगी का भाव)
- खेस–खेसो लागतोर । (नीरस)
- फेत–फेता । (अस्त–व्यस्त)
- थतगत होतोर । (अशक्त/बलहीन होना)
- गुंदगुंदा होतोर । (मोटा–ताजा)
- लटलटा माततोर । (भरपूर नशे करना)
- खड़खड़ा सुखतोर । (बिल्कुल सूखा)
- सेट्सेटा लागतोर । (बिना स्वाद, स्वादहीन)
- कुटकुटा दुखतोर । (अंग–अंग, चूर–चूर)
- रोबरोब्बा होतोर । (हाथ–पैर का छिल जाना)
- छुकछुका होतोर । (एकदम साफ)
- भनभना पड़तोर । (गंदगी युक्त पड़ा रहना)
- लटलटा भिजतोर । (लथपथ भीगना)
- फरफरा उजर होतोर । (भोर का उजाला होना)
- गेतगेता दखा देतोर। (एकदम गंदा)
- टंगटंगा घाम सेकतोर । (तेज धूप पड़ना)
- तुपतुप्पा भरतोर। (उपर तक भरने का भाव)
- लिटलिटा फरतोर । (घना,पेड़ों पर अधिक फल लगने का भाव)
- बुटबुटा होतोर । (कीचड़ से सना हुआ)

- किटकिट्टा दखा देतोर । (गंदगी)
- लकलका बरतोर । (अधिक गरम)
- खुसखुसा रेंगतोर । (चुपचाप, चोरी छिपे)
- मिसू–मिसू दखतोर । (खिसयाना, रोने के पूर्व की स्थिति)
- डुंगडांग डुंगडांग बाजतोर । (वाद्य की ध्वनि)
- चांग–चांग पेटतोर । (मांदर की ध्वनि)
- खुसुर–खुसुर गोठेयातोर । (फुसफुसाहट)
- सांय–सांय मारतोर । (हवा चलने का भाव)
- फुसुर–फुसुर होतोर । (फुसफुसाहट)
- भांय–भांय लागतोर । (सिर का दुखना)
- उकुर–बुकुर लागतोर । (व्याकुलता)
- टंडक–लटक नाचतोर । (नृत्य के दौरान चलने का भाव)
- पुटुर–पुटुर ठाबतोर । (दबे होंठ से, गति से बोलना)
- पोटारा–पोटारी होतोर । (परस्पर आलिंगनबद्ध होना)
- ओरंगा–ओरंगी होतोर । (परस्पर आलिंगनबद्ध होना)
- फकफक्का दखा देतोर । (उजाला, श्वेत, ज्योति)
- बटाल–बटाल दखतोर । (क्रोध में लाल–लाल ऑखें दिखाना)
- बिजरा–बिजरी होतोर । (मुंह बनाकर चिढ़ाना)
- भक–भका हांसतोर । (अनावश्यक हंसना)
- भिड़ा–भिड़ी होतोर । (अभिपीड़न, सहवास)
- मिट–मिट दखतोर । (मुंह ताकना)
- मुटुर–मुटुर दखतोर । (टुकुर–टुकुर देखना)
- लिबलिब्बा दखतोर । (बुझी हुई आंखों वाला)
- ढेबक–रेचक हिंडतोर । (लंगड़ा के चलने का भाव)
- चिरिक–चारक रेंगतोर । (केकड़े के चलने का भाव)
- लड़ंग–फसंग होतोर । (ढीला–ढाला)
- सिंगरी–मिंगरी पिंदतोर । (सजी–धजी युवती)
- लिड़िंग–लाड़ंग होतोर । (ढीला–ढाला)
- तम्म–तम्म भरतोर । (उपर तक भरा हुआ)
- भिंग–भिंगा अंधार होतोर। (अंधेरा)
- गाग–गागरी होतोर । (रूआँसा होना)

- लटे–पटे हिंडतोर । (बड़े मुश्किल से)
- पिंदा–ओढ़ा करतोर । (पहनावा)
- अनि–अटक होतोर । (विपत्ति)
- कोकटा–बाकटा होतोर । (टेढ़ा–मेंढ़ा)
- आड़ा–तेड़ा हिंडतोर । (आड़ा–तिरछा)
- पागंन–नाशन करतोर । (जादू–टोना)
- डोंडकी–बोंडकी फरतोर । (विकृत, असामान्य)
- लोलो–बालो पावतोर । (बाल–गोपाल)
- बिर–बिरा लागतोर । (चिढ़चिढ़ापन)
- बनान–मिरान आनतोर । (किसी तरह पाना)
- उपाय–दाव करतोर । (उपचार करना)
- निसा–पानी छाँडतोर । (नशा छोड़ना)
- लिड़ींग–तिड़ींग होतोर । (ढीलापन)
- चिमक–चामक करतोर । (चिकोटी काटना)
- लहर–लहर हिंडतोर । (चलने का भाव)
- मोंडरा–मोंडरी बांदतोर । (पोटली)
- ढुड्डुंग–ढाड़ंग घसरतोर । (गिरने अथवा बनने का भाव)
- फुसुर ढुंग–फुसफास होतोर । (खालीपन, कुछ हासिल न होने का भाव)
- हांडी–कुंडरी उधलातोर । (मिट्टी के बर्तन फेंकना, एक प्रथा)
- उरान–बचान मिरातोर । (बचा–खुचा)
- खाबड़ा–खाबड़ी पकातोर । (लकड़ी फेंकना)
- तंग–तियार होतोर । (तैयार होना)
- चिकन–चाकन होतोर । (श्रृंगार करना)
- धरा–धरी होतोर । (गुत्थम गुत्थी होना)
- ठेंगा–बड़गा धरतोर । (लाठी–बल्लम पकड़ना)
- काना–खोड़ेया दखतोर । (अंधे–लंगड़े को देखना)
- झगड़ा–झगड़ी लागतोर । (विवाद करना)
- चिमका–लाफड़ा होतोर । (चिकोटना)
- रोपटा–रोपटी कांदतोर । (बच्चो का विलाप)
- बेमार–सेमार उजरातोर । (स्वस्थ करना)

- डाहा–बिकाल लागतोर । (व्याकुल लगना)
- टुकुस–टाकस हिंडतोर । (पशुओं के चलने का भाव)

ध्वन्यात्मक द्विरूक्तिमूलक शब्द

◆ **पशु–पक्षियों की बोलियाँ –**

0 घुघु–घुघु बलतोर ।
0 कुहु–कुहु कुहकतोर ।
0 बों–बों गागतोर ।
0 पेक–पेक करतोर ।
0 में, में, नरातोर ।
0 कॉव–कॉव बलतोर ।
0 भू– भू, भुकतोर ।
0 बॉं, बॉं चिचियातोर ।
0 चिंव–चिंव करतोर ।
0 हुआ, हुआ बलतोर ।
0 टर–टर गागतोर ।
0 कोंको–रे–कोंय, बासतोर ।
0 कर–कर करकरातोर ।

◆ **अन्य ध्वनियाँ –**

0 बादरी चो घड़घड़ातोर ।
0 घड़ी चो टिक–टिक् बाजतोर ।
0 लेहरा चो सर–सर मारतो ।
0 पनही चो चर–चर बाजतो ।
0 बिजरी चो बिगाल करतोर ।
0 दांत चो कट–कट बाजतोर ।
0 मांदरी चो चांग–चांग बाजतोर ।

◆ **क्रिया–विशेषण शब्द की द्विरूक्ति –**

0 झपके–झपके एतोर ।
0 धीरे–धीरे सलकतोर ।
0 लगे–लगे मंडातोर ।

0 उपरे–उपरे दखतोर ।

0 खाले–खाले खसरतोर । इत्यादि ।

◆ **विभक्तियुक्त शब्द की द्विरूक्ति –**

0 गॉव–के–गॉव उसकतोर ।

0 गोहड़ा–के–गोहड़ा ओलतोर ।

0 घर–के–घर डसातोर ।

0 धाड़ी–के–धाड़ी मारतोर ।

0 पयसा–चे–पयसा गनतोर

0 मनुख–चे–मनुख दखादेतोर, इत्यादि ।

यहाँ शब्दभेदों की द्विरूक्ति विभिन्न अर्थों का द्योतक है –

0 पारस्परिक संबंध बताने में – भाई–भाई चो मया होवतोर ।

0 अतिशयता प्रकट करने के अर्थ में – करेया–करेया चुंदी होतोर ।

0 समग्रता प्रकट करने के अर्थ में – खोर–खोर बुलतोर ।

0 भेद बताने के अर्थ में – रंग–रंग चो फूलतोर, नवा–नवा बायले आनतोर ।

0 एक जाति होने के अर्थ में – नानी–नानी लेकामन चो खेलतोर । बड़े–बड़े लोक चो भेस बांदतोर।

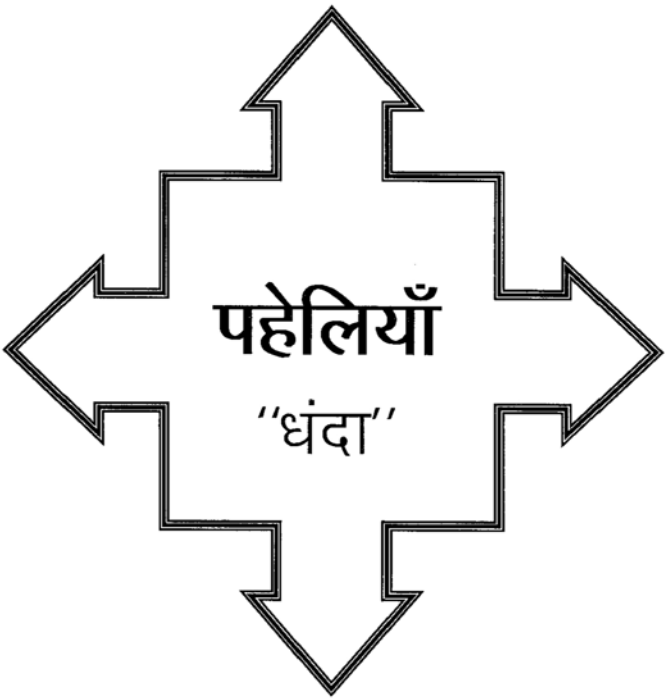
पहेलियाँ
''धंदा''

पहेलियाँ

''धंदा''

{लोक जीवन में हाजिर जवाबी को मापने का पैमाना}

भारतीय वाङ्.गम्य में लोक का प्रयोग प्राचीनकाल से ही हो रहा है। लोक का आशय उस विशेष जन–समूह से है जो, साज–सज्जा, सभ्यता, शिक्षा व परिष्कार आदि से कोसों दूर आदिम मनोवृतियों के अवशेषों से युक्त हैं। इसमें प्रकृति के नैसर्गिक सौंदर्य की दिब्य आभा है। इसी लोक या जन–समूह का साहित्य, लोक –साहित्य कहलाता है। लोक जीवन में लोक साहित्य का समृद्ध भंडार अनेक स्वरूपों यथा – लोकगीत, लोक–कथा, लोकगाथा, लोकोक्ति व पहेलियों के रूप में संरक्षित हैं। आज अभिजात्य व शिष्ट समाज के पास मनोरंजन के मंहगे किन्तु सर्वसुलभ साधन उपलब्ध है। तब भी लोक जीवन, केवल मनोरंजन ही नहीं अपितु जन रंजन के लिए भी अपने लोक साहित्य की निर्मल जलधारा में अवगाहन के लिए आश्रित हैं। लोक जीवन में जन–रंजन का एक सशक्त माध्यम है 'पहेली'। मानव हृदय भावनाओं का असीम सागर है। भावनाओं के अनंत श्रोत में से कुछ भावनाएँ सार्वजनिक होती हैं और कुछ भावनाएँ गुप्त, जिन्हें वह सबके सम्मुख अभिव्यक्त नहीं कर पाता। बस यहीं उसकी प्रकृति में गोपनीयता जन्म लेती है। लेकिन इस गोपनीयता में कोई व्यक्तिगत हित–संवर्धन नहीं, बल्कि समदृष्टिगत हित–चिंतन की भावना प्रबल होती है। इन परिस्थितियों में व्यक्ति अपनी जिज्ञासा की शांति और अपने साथ–साथ अन्य लोगों के बुद्धिमापन के लिए जिन गुप्त माध्यमों का आश्रय लेकर अपनी भावनाओं को सार्वजनिक करता है, वही वाणी व्यापार में 'धँदा' कहलाता है।

मनुष्य की अंतर्मुक्त गोपनीयता की प्रवृति के संबंध में डा0 फ्रेजर ने

लिखा है कि पहेलियों की रचना उस समय हुई होगी, जब कुछ कारणों से वक्ता को स्पष्ट शब्दों में किसी बात को कहने से किसी प्रकार की अड़चन हुई होगी। कहने का तात्पर्य यह 'दुर्बोध कथन पद्धति' ही पहेली है और यह भी निश्चित है कि पहेली बूझने की परंपरा मानव जीवन व उसके विकास के साथ प्रारंभ हुई हो जो आगे चलकर अवकाश के क्षणों में बुद्धिमापन और मनोरंजन का साधन बन गई। आज भी लोक जीवन में विभिन्न मांगलिक आयोजन यथा – विवाह तथा फुरसत के क्षणों में पहेली बूझने की परंपरा है।

गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने संसार की उपमा रहस्यात्मक ढँग से एक पीपल वृक्ष से की है। वहाँ भी एक पहेली के तत्व विद्यमान हैं। महाभारत में यक्ष के द्वारा पाँच पांडवों से किए जाने वाले प्रश्न भी पहेली के समान थे, जिसका उत्तर केवल युद्धिष्ठिर ही दे सके थे। संस्कृत साहित्य में पहेली को 'प्रहेलिका' कहा जाता है। हिन्दी साहित्य में अमीर खुसरो की पहेलियाँ और मुकरियाँ प्रसिद्ध हैं। लोक साहित्य के क्षेत्र में बस्तर अँचल की विशेष पहचान है, जिसमें लोकगीत, लोकनृत्य, लोकगाथा, लोककथा, लोकोक्ति और पहेलियों की असंख्य लहरें तरंगित हो जनरंजन करती हैं। श्रम में डूबे पल–छिन हो, संध्या का अवकाश हो, मांगलिक आयोजन हो या दादा–नानी की गोद हो। गाँव में मनोरंजन, हास–परिहास, विलास और बुद्धिमापन का यही सर्वसुलभ सर्वोत्तम साधन है।

'मनुष्य का हृदय भावनाओं का असीम सागर है। इसे वह लोकोक्ति और पहेलियों के माध्यम से व्यक्त करता है, जो मनोरंजन का एक सशक्त माध्यम होता है। साहित्य के इस समृद्ध भन्डार में जिज्ञासा और बृद्धिमान के अनेक रूप समाहित रहते हैं। बस्तर अंचल के गाँवों में प्रचलित इस लोक विधा को ''धँदा'' कहा जाता है।'

बस्तर के लोक साहित्य में गीतों, कहावतों, लोक नृत्यों, लोक– विश्वास, एवं लोक–रीति के साथ ही पहेलियों का अपना महत्व है, बानगी है। बस्तर में पहेलियों को बूझने के अर्थ में लिया जाता है। सामान्यतः इसका प्रयोग लोक–रंजन के साथ ही बुद्धि परीक्षण के लिए किया जाता है। पहेलियाँ लोक जीवन में हाजिर जवाबी को मापने का पैमाना है।

पहेलियों में मनोरंजन तथा कौतूहल की मात्रा अधिक रहती है। अर्थ गौरव के भाव की अपेक्षा चमत्कार अधिक रहता है। भाव तथा उपयोगिता की दृष्टि से कहावतों और पहेलियों का अलग–अलग स्थान है। कहावतों में

ज्ञान और भाव घनीभूत होकर आते हैं। पहेलियों में गोपनीयता अथवा गोपन की प्रवृति अधिक होती है ताकि बुद्धि कौशल के द्वारा ही उनके मर्म को जाना जा सके। पहेलियों में जितना गोपन भाव सघन हो, उतनी ही वे श्रेष्ठ मानी जाती है। जितना अधिक लोगों को चमत्कृत कर सके, उतना ही अच्छा है।

☐ **अड़गड़ा उपरे बड़गा,**
बड़गा उपरे डोरी,
गाय–बयला के छाँडुन भाती,
कोठा के नीला चोरी ।

◆ लकड़ियों के उपर लकड़ी, उसके उपर डोरियों से बँधन, इतने पहरेदारी के बावजूद भी पशुओं को छोड़कर चोर पशुशाला ले उड़ा। विशाल पेड़ों या दीवारों पर मधुमक्खी का छत्ता टंगा होता है तब छत्ते से शहद निकालने के प्रयास में व्यक्ति कोठा अर्थात् छत्ता और गाय–बयला का आशय मक्खी। उस कोठा में निवास करने वाले मक्खी को छोड़कर निवास या कोठा ही चोरी चला जाता है।
(ओंडार गुड़ा, मधुमक्खी का छत्ता)

☐ **अजब राज चो गजब रानी,**
डोरी लमाउन पीए पानी ।

◆ अजीब राज्य की गजब रानी, रस्सी लंबी करके पीती है पानी।
(ढिबरी या चिमनी)

☐ **अखिर भीतरे, पखिर पानी,**
सूरूज भीतरे रानी,
ए धंदा के नी जानले,
नी खाए पेज पानी ।

◆ इधर पानी, उधर पानी,
सूरज के अन्दर रानी।
इस पहेली को हल न करनें वाला, भोजन नहीं करता।
(दातुन)

□ **आय मिलकी, जाय मिलकी,**
मिलकी चो खोज नाई ।

◆ पानी के उपर आता–जाता है किन्तु उसके निशान नहीं पड़ते।
(डोंगी, नाव)

□ **आठ–आठ आना कुतरी,**
चार–चार आना गाय,
बारा बरनी बराहा,
दुई पुरानी काय ?

◆ आठ–आठ आना कुतिया के,
चार–चार आना गाय के,
बारा बरनी सूकर के,
दो पुरानी क्या ?
आठ स्तन (टीट्स) कुतिया के, गाय के चार, वहीं, सूकर के बारह और दो पुरानी किसके अर्थात् बकरी के।
(उत्तर – बकरी)

□ **ओसार तरई ने मांडक पानी,**
हुता पोंहरे, लाल भवानी ।

◆ चौड़ी तालाब में घुटने भर पानी,
उसमें तैरे लाल भवानी।
(कढ़ाई में तलते पकौड़े)

□ **उपरे हाड़ा, भीतरे मास ।**

◆ उपर हड्डी, अंदर मांस ।
(नढेर या नारियल)

□ **उतुक तुता–उतुक तुता,**
भुईं ले फुटे, पंडरी भुईं–तुता ।

◆ अंकुरित होने के लिए प्रयासरत, जमीन के अंदर से भुंईतुता अर्थात् सफेद रंग का सूकर। यहाँ भुईंतुता का आशय बाँस के अंकुरण है जो जमीन

से कोमल मिट्टी को हटा कर अंकुरित होता है। बाँस के इस कोमल अंकुरित कोपलों को बास्ता के नाम से जाना जाता है, जिसे शाक के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। बस्तर के जनजीवन में बास्ता काफी प्रचलित सब्जी है।

(बाँस की कोपलें/बास्ता/करील का अंकुरण)

□ **उपरे आईग, खाले अंधान ।**

◆ उपर आग, नीचे पानी।

(ढिबरी)

□ **उजर–उजर जागुआय,**
अंधार–अंधार हाजुआय ।

◆ उजाला होने पर जाग जाता है,
अंधेरा होने पर गुम हो जाता है।

(आपलो छाँय, अपनी परछाई)

□ **उजर बेड़ा ने करेया नांगर ।**

◆ उजले खेत में काला हल।

(कागज, कलम)

□ **उपरे गुड़ा, खाले गार,**
हुनके बीने, ठीबु कलार ।

◆ उपर घोसला हो और नीचे अण्डा हो, गिरने पर ठीबू कलार उसे इकठ्ठा कर लेता है।

(महुआ का फूल)

□ **एथा गेली, हुता गेली, टोण्ड के मारेसे घाना,**
बारा आगर एक कोड़ी, रूख चो गोटकी पाना ।

◆ यहाँ गया, वहाँ गया रस से भर गया, बत्तीस वृक्षों का एक ही पत्ता। 'बारा आगर एक कोड़ी का आशय बत्तीस से है और उन सबके बीच एक पत्ता का आशय जीभ से है।'

(दंत वलय, बत्तीसी)

☐ **एथा गुड़गुड़, बस्तर डुला ।**

◆ यहाँ गुड़गुड़ की आवाज और पूरे बस्तर में कम्पन।
(तुपक या तोप)

☐ **एथाय रा रे तुरतुरी,**
मंय जायंसे, रतनपुरी ।

◆ यहाँ रहो तुरतुरी, मैं जा रही हूँ रतनपुरी।
(गोड़ चो खोज या पदचिन्ह)

☐ **ए गोटोक गोड़ेया,**
काय आय चार गोड़ेया,
दुय गोड़ेया काहाँ गेलो,
दस गोड़ेया के मारूक गेलो ।

◆ अरे ! एक पैर वाला, बोलो चार पैर वाले,
दो पैरों वाला कहाँ गया, दस पैर वाले को मारने गया।
(बाघ, किसान और केकड़ा)

☐ **करेया बायले चो दुय ठान पिला,**
दुनों गोटकी रंग,
गोटोक सोए, दूसर हिंडे,
दूनों एके संग ।

◆ काली औरत के दो बच्चे, दोनों एक ही रंग,
एक सोए दूसरा चले, दोनों एक ही संग।
(चक्की)

☐ **करेया डेरी, पंडरी दुलुम,**
बुदरू–सुदरू चो घर,
पानी संगे भुई ने पड़े,
बिन छाली चो फर ।

◆ काले–सफेद रंगों से बना बुदरू–सुदरू का घर,
वर्षा के साथ धरती पर गिरता है बिना छिलके का फल।

(ओला, करा)

□ **करेया फूल, मुंड उपरे,**
घाम बरसा ने बिगसे,
हाते धरून डोकरा जाय,
छांय दखुन मरे ।

♦ काला फूल, सिर के उपर धूप और वर्षा में खिलता है,
बूढ़ा व्यक्ति हाथ में लेकर जाय, छांव देखकर मर जाय।
(छाता)

□ **करेया आय, कावरा नुंहाय,**
लाम आय, सांप नुंहाय,
बांधतो काजे, डोरी नी लागे ।

♦ काला है कौआ नही, लंबा है सांप नहीं,
बांधने के लिए डोरी की आवश्यकता नहीं।
(बेनी या चोटी)

□ **करेया ढूस, मांघ पूस,**
ए धंदा के नी जानले,
तुचो भाटो के पूछ ।

♦ काला ढूस, मांघ–पूस,
इस पहेली को न बूझने पर अपने जीजा से पूछ।
(घुमसा कीड़ा)

□ **कंवरी काकड़ी, भीतरे पोल,**
जसन–जसन बरसा, हुसन–हुसन मोल ।

♦ कोमल ककड़ी, उसके अंदर खाली जगह,
जैसे–जैसे वर्षा, वैसे–वैसे उसकी कीमत।
(डोंगी या नाव)

□ **काचा दारू चो सुखलो छिलपा ।**

◆ कच्चे लकड़ी का सूखा छिलका ।
(नख / नाखून)

☐ **किरकी कुड़िया ने बाघ चो गरजना ।**
◆ छोटी टूटी झोपड़ी में शेर का गरजना।
(जता / चक्की)

☐ **कुड्डम–छुट पतालपुर**
झीकुन आन सरगपुर
बादुन दिलेसें, तुचो लेंगड़ी
धरून रहेन्दे, बुता सरोत ले ।
◆ पाताल से आकाश तक खींच कर लाओ,
बांध कर रखा है पूंछ, पकड़ा हुआ हूँ, कार्य समाप्त होते तक।
(रस्सी बाल्टी)

☐ **कोन गाँव ले इलो जोगी,**
टुंई ले झिकलो चोंगी ।
◆ किस गाँव से आया योगी,
पिछवाड़े से चोंगी पिया।
(जुगनू)

☐ **कोण्डी भितरे लुलु पिला ।**
◆ कोण्डी, के अन्दर छोटा सा हिलने वाला बच्चा।
(कोण्डी का अर्थ मिट्टी का छोटा सा बर्तन होता है, जो खिलौने के रूप में प्रयुक्त होता है)
(जीभ)

☐ **खडर–खडर खोडरी,**
छय आँईख, तीन बोमली ।
◆ खडर–खडर की आवाज, इस पहेली को बूझो
छः आँख और तीन नाभि।

(हल जोत रहा किसान – दो बैल और किसान तीनों जीव के छः आँख और तीन नाभि)

□ **खावतो बेरा खादलू,**
खोआतो बेरा खोआलू
सुआद नाई, रंग नाई,
चुच्छाए पेट सोवलू ।

◆ खाते समय खा लिया, खिलाते समय खिलाया,
स्वाद नहीं, रंग नहीं, खाली पेट सोया।
(किरिया, कसम, सौगंध)

□ **खाले अंधान, उपरे आईग ।**

◆नीचे चावल पकाने के लिए पानी रखा है और उपर आग है। ऐसी कौन सी वस्तु है ?
(दीया, ढीबरी)

□ **खाले पखना, उपरे पखना,**
मंजीगता मंगरी ।

◆उपर पत्थर, नीचे पत्थर बीच में मछली।
(दाँत और जीभ)

□ **खावले होती, मन पिरोती ।**

◆ ऐसी कौन सी चीज है जिसके खाने के लिए मन व्याकुल हो जाता है।
(धुंगिया या तम्बाकू)

□ **खाले मेढ़ा, उपरे कोठार ।**

◆ नीचे खुंट, उपर आँगन ।
(छाती, फुटु, कुकुरमुत्ता)

□ **खांदे जाय, खांदे जाय,**

दुड़दुड़ा मार खाए ।

◆ कंधों में आए, कंधों में जाए, भरपूर मार खाय ।
(ढोल, एक वाद्य)

□ **गुलाय रात चरे,**
उजर होले लुके ।

◆ रात भर अंधेरे में चरता है, उजाला होने पर छिप जाता है।
(तारा)

□ **गोटोक बाटे खाते जाए,**
दूसर बाटे हागते जाए ।

◆ एक ओर से खाता जाय,
दूसरी ओर से निकालता जाए।
(जाता, चक्की)

□ **गोटोक सांप राने जायसे,**
सांप चो उपरे माने जायसे ।

◆ एक सांप जंगल की ओर जा रहा है,
सांप के उपर से, आदमी जा रहा है।
(कानी बाट, पगडंडी)

□ **गोटोक गोड़, आठ ठान डेना,**
पटकी थामे, चार महेना ।

◆ एक पैर, आठ पंख,
पंख थामें, चार महिना।
(छाता)

□ **गोटोक रूख चो, सुखलो हांडी,**
पेट भीतरे पानी,
आधो खावले, आधो पकाले,
जीव के लागली पानी ।

◆ एक पेड़ का सूखा हंडी, पेट के अंदर पानी
आधा खाया, आधा फेंका, अच्छा लगा पानी।
(नारियल)

□ **गोरोस असन बटकी,**
करेया–करेया पखना,
लगे–लगे आसे,
मंय बलेसें, दखना ।
◆ दूध सी कटोरी, काले–काले पत्थर
पास–पास हैं, मैं कह रहा हूँ, देखना।
(आँख)

□ **गोटोक कारीगिर असन,**
बिन पानी चो बनाए घर ।
◆ एक कारीगर ऐसा,
बिना पानी के बनाए घर।
(डेंगुर, दीमक का बमीठा)

□ **गोटोक बेड़ा ने असन ढेला,**
हुनचो उजर नें जमाय खेला ।
◆ एक खेत में मिट्टी का ऐसा ढेला,
उसके उजाले में सभी ने खेला।
(सूरज)

□ **गाटोक बाखरा ने बारा आगर एक कोड़ी मेढ़ा ।**
◆ एक कमरे में बत्तीस खूंटे।
(दंत वयल / बत्तीसी)

□ **गोटोक रूख ने,**
तीन बरन चो साग ।
◆ एक पेड़ में तीन तरह की तरकारी।

(मुंनगा – फूल, भाजी और मुंनगा)

□ **गोटोक रूख चो गोटकी पाना,**
देवगुड़ी लगे आसे, हुनके जाना ।

◆ एक पेड़ का एक ही पत्ता,
मंदिर के समीप उसे पहचानें।
(मंदिर का पताका)

□ **गोटकी रंग चो दुय भाई,**
गोटोक हाजले नी भिड़े घाई ।

◆ एक ही रंग के दो भाई, एक गुम हो तो दूसरे की उपयोगिता नहीं ।
(पनही / जूता)

□ **घर, कुड़िया, मुण्डा माहाल,**
गोटोक बाट नाई ।

◆ घर--मकान या कि महल किन्तु द्वार एक भी नहीं।
(कोसा, रेशम का कुकून)

□ **घसतो बेरा गोटोक,**
रोखतो बेरा, दुय ठान ।

◆ घिसते समय एक,
साफ करत समय दो।
(दातुन, दतौन)

□ **घाम दखुन एयसे,**
छांय दखुन लुकेसे,
लेहरा पावले मरेसे ।

◆ धूप देखकर आता है,
छांव देख छिप जाता है,
हवा लगे मर जाता है।
(पसीना)

□ **घुड़–घाड़, घुड़–घाड़ बरसा पानी,**
घर ले निकर टेरची कानी ।

◆ बारिश के मौसम में गरज–चमक के साथ वर्षा हो रही है, घर से बाहर निकल 'टेरची–कानी'। यहाँ टेरची का आशय भैंगी आँखों से है ।
(केकड़ा)

□ **चार पांय ओसार छाती,**
टोंड के छांडुन, पींडा के खाती ।

◆ चार पैर, चौड़ी छाती,
मुंह से न खाकर चुतड़ को खाती ।
(पीढ़ा, माची, मचिया)

□ **चुनी–चुनी पतर,**
लाख–सय बाटी ।

◆ छोटी–छोटी पत्तियाँ, सैकड़ों–लाखों कंचे ।
(गोल आकृति वाले कंचे की तरह फल)
(आंवला का पत्ता और फल)

□ **छिवले काकर, दखले रानी,**
रात ने मोती, मंझने पानी ।

◆ स्पर्श करने से ठंडा, देखने में रानी जैसी ,सुखद
रात में मोती सा चमके, दिन में पानी।
(ओस की बूदें)

□ **छुनुर–छुनुर पंयड़ी बाजे, ए धंदा के जाना,**
फर उपरे फूल फूले, हुनचो उपरे पाना ।

◆ छन–छन की आवाज, घुंघरू बज रहा है, इस पहेली को बूझो, जिसमें फल के उपर फूल हों और उसके उपर पत्ता।
(गांठ गोभी)

□ **जनमतो बेरा हाड़ा, डोकरा बेरा मास ।**

◆ जन्म के समय हड्डी, बुढ़ापे में मांसल ।
मुर्गी जब अंडे देती है तब उसका कवच कड़ा अर्थात् हड्डी की तरह और जब अंडे से चूजा बाहर आता है तो वह मांसल अर्थात् बुढ़ापे में मांसल ।
(अंडा और चूजा)

☐ **जाते रहें तुचो काजे, बाटे छेकलो मके,**
जाउक दिले मके, घरे आनेन्दे तुके ।
◆ जा रहा था तुझे लाने, रास्ता रोक लिया,
जाने दो मुझे, तुझे घर लेकर आउंगा ।
(वर्षा, पनिहारिन, पानी)

☐ **जासीस जाले जा, मके छांडुन जा ।**
◆ जा रहे हो तो जाओ, मुझे छोड़ कर जाओ ।
(गोड़ चिना/पदचिन्ह)

☐ **झितरी मुंडी झमकनाय,**
माटी खाले दमकनाय ।
◆ छितरे बालों वाला, मिट्टी के नीचे दमखम के साथ बैठा है।
(मूली)

☐ **झिलमिल तरई, रतनपुर बाड़ी**
ए धंदा के नी जानले, बायले चो कबाड़ी ।
◆ झिलमिलाता हुआ तालाब और रतनपुर बाड़ी,
इस पहेली को न बूझने वाला पत्नी का नौकर।
(आईना)

☐ **झीकले जागे, रोपले मरे ।**
◆ खींचने पर जागता है,
जमीन पर लगाएं तो मर जाता है।
(बीड़ी)

☐ **झुमुक–झुमा फुल धरे, लाम–लाम फर ।**

◆ गुच्छों में फूलने वाली, लंबे–लंबे फल ।
(मुंनगा)

☐ **नंदी कठा–कठा बोकड़ा चरे, पानी आंटले मरे ।**

◆ नदी किनारे बकरा चरे, पानी समाप्त होने पर मर जाए ।
(चिमनी / ढिबरी / दिया)

☐ **टेड़गी–बाकटी बांवसी,**
बजातो लोक नांई,
बेटी जाए सुसरा घरे,
थेबातो लोक नाईं ।

◆ टेढ़ी–मेढ़ी बांसुरी, वादक नहीं,
बेटी चली ससुराल को,
रोकने वाला काई नहीं।
(नदी)

☐ **टोंड ले खाय, मुंडी किंदराए,**
भंवरक बुलुन भाति, पींडा ले निकराए ।

◆ मुंह से खाकर, सर घुमाता है,
गोल घुमकर पिछवाड़े से निकालता है।
(घाना, कोल्हू)

☐ **डेंगा जोगी, लम जटा,**
नी जाने हुन लटा–फटा ।

◆ लंबा जोगी, लंबा जटा,
वह किसी आरोप–प्रत्यारोप को नहीं जानता।
(बड़, बरगद)

☐ **डेंगा डोकरा, आईख लाल,**
मेंडका चाबले, फुले गाल ।

◆ऊंचा और बूढ़ा व्यक्ति, जिसकी आँखें लाल हो गई हों। मुंह में ऐसी वस्तु दबाता है जिसके कारण उसके गाल फूल जाते हैं। बस्तर अंचल में 'मोहरेया' शब्द शहनाई वादक के लिए प्रयुक्त किया जाता है। जब मोहरेया शहनाई वादन के लिए शहनाई का उपरी हिस्सा अर्थात् मेंढ़क को मुंह में दबाता है और वादन के लिए मुंह बंद करके जोर लगाता है तब गाल फूल जाता हैं। इसे ही पहेली में व्यक्त किया गया है।

(मोहरेया, अर्थात् शहनाई वादक)

☐ **डेंगा डोकरा चो पेट नें दाँत ।**

◆ लम्बे बूढ़े के पेट में दाँत।
(जोंदरा, मक्का, भुट्टा)

☐ **डेंगुर कठा–कठा गुंडरू हागे ।**

◆ बमीठे के किनारे–किनारे गुंडरू नामक कीड़ा गंदगी फैलाता है।
(जाता, चक्की)

☐ **डींग–डांग डोंगरी, दुनों पाट लेंगड़ी ।**

◆ ऊँची–ऊँची पहाड़ी, उसके दोनों ओर पूंछ।
(हाथी)

☐ **डोंगरी उपरे चारा चरे, पखना ने खाए पानी ।**

◆ पहाड़ों पर चरने वाली, पत्थरों से पीए पानी ।

बाल बनाने के लिए नाई सिर पर उस्तरा चलाता है किन्तु उसे तेज करने के लिए पत्थर पर पानी डाल–डाल कर धार करता है।
(छुरा/उस्तरा)

☐ **तुय रांदलीस ना मँय रांदले**
चुड्डुन कसन गेली,
तुय खादलीस ना मँय खादले
सरून कसन गेली ।

◆ना तुमने पकाया ना ही मैने पकाया

कैसे पक गया, ना तुमने खाया ना ही मैंने ही खाया
समाप्त कैसे हो गया।
(करा या ओला)

□ **तुलातो बेरा, तुलाव,**
ओंडातो बेरा, फुसकाव ।
♦ काटते समय कटता है,
उठाते समय आसानी से उठाया नहीं जाता।
(सर के बाल काटते समय कट जाता है किन्तु,उठाते समय बिखरता जाता है।)
(बाल काटता नाई)

□ **तीन गोड़ भुंई ने,**
गोटोक गोड़ सरगे,
बिन बादरी चो बरसा होय
पखना उपरे ।
♦ तीन पैर धरती में
एक पैर आकाश में,
बिन बादर के वर्षा होय
पत्थर के उपर ।
(कुत्ते का टॉग उठाकर मूत्र त्यागना)

□ **तीन भाई संगे–संग,**
तीनों चो गोटकी रंग ।
♦ तीन भाई साथ–साथ,
तीनों रंग एक सा।
(सेम का पत्ता, फूल और सेम)

□ **थारी–बटकी रोजे बनाउंसे,**
चोबरून–चोबरून रोजे पकाउंसे ।
♦ थाली–कटोरी रोज निर्माण करते हैं,

डूबा–डूबा के रोज फेंकते हैं।
(दोना–पतरी, दोना–पत्तल)

☐ **दखेसे मान्तर धरे नाईं,**
धरेसे मान्तर खाए नाईं ।

♦ देख रहा है किन्तु पकड़ नहीं पाता,
और जो पकड़ रहा है वह खा नहीं पाता।
(आँख और हाथ)

☐ **दुय बहिन चो गोटकी देहें ।**

♦ दो बहनों की एक ही काया।
(जीभ –छोटी व बड़ी)

☐ **धंगड़ा लेका, धरी मतवार, लेंगड़ा लमाउन खाए ।**
मंझन बेरा गम नी जानूं, सांज बेरा होले भाए ।

♦ जवान लड़का, अधिक शराबी, लम्बी पूँछ से पीता है।
पूरा दिन न जाने कहां रहता है, शाम ही उसको भाए।
(चिमनी या ढिबरी)

☐ **धंदा आय, धांदुन रा,**
बड़े चिपटा आय, बांदुन रा ।

♦ इस पहेली को बूझते रहो,
कौन सी वस्तु बड़ी पुड़िया जैसी है बाँध कर रखो।
(चापड़ा, लाल चिंटी)

☐ **धंदा तो धंदा आय,**
बिन बूंद चो कांदा आय ।

♦ पहेली तो पहेली है, ऐसा कौन सा कंद है जिसका मूल नहीं होता। बस्तर अंचल के जंगलों में साल वृक्ष के नीचे पनपने वाला मशरूम वर्ग का एक शाक जिसे बोड़ा कहा जाता है । गर्मी की समाप्ति और वर्षा की शुरूआत में साल वृक्षों के नीचे जमीन के नीचे से निकाला जाता है जिसका

स्वाद लजीज होता है और इस लजीज स्वाद के कारण प्रारंभिक दौर में इसकी कीमत एक किलो लगभग दो हजार रूपये तक होता है । इतनी मंहगी होने के बाद भी इसे लेने के लिए होड़ लगी होती है।

(बोड़ा)

□ **नाके बसे, कान के धरे ।**

◆ नाक में बैठ कर कान पकड़ता है।
(चश्मा)

□ **नानी असन चड़ई, घुघु असन पेट,**
काहाँ जासीस रे चड़ई, राजा घरो भेंट ।

◆ छोटी सी पक्षी, घुघु पक्षी जैसा फुला हुआ पेट,
कहाँ जा रही हो, राजा से भेंट करने।
(लिफाफा)

□ **नानी असन लेकी, लुगा पिंदे एक कोड़ी ।**

◆ छोटा सी छोकरी,
साड़ी पहने बीस।
(गोंदरी या प्याज)

□ **नानी असन मुठली,**
देव घरे फूटली ।

◆ छोटी हथौड़ी, देवालय में फूटी।
(नढेर या नारियल)

□ **नानी असन बटकी,**
छिउन दिले फोटकी ।

◆ छोटी सी कटोरी, छूने से फफोला।
(अंगार या आग)

□ **नानी असन टोंड, भाराएक दतुन करे ।**

◆ छोटे आकार का मुँह, किन्तु दातुन एक से अधिक करे।
(चूल्हा)

☐ **नानी असन लेकी, लाल बाई नाव,**
दखलो ने काय सुंदर, एक पयसा दाम ।

◆ छोटी सी लड़की लाल बाई नाम, सुंदर है जिसका एक पैसा दाम ।
(मिरी / लाल मिर्ची)

☐ **पखना उपरे पखना,**
पखना उपरे पयसा
बिन पानी चो घर बनाए,
हुन कारीगिर कयसा ?

◆ पत्थर के उपर पत्थर, पत्थर के उपर पैसा।
बिना पानी के घर का निर्माण करे,
वह कारीगर कैसा ?
(माकड़ा या मकौड़ा)

☐ **पतर–डीरा लमते जाय,**
बुड़गा बेंदरा बसते जाय ।

◆ पत्ते और बेल की लंबाई बढ़ता जाय, और बूढ़ा बंदर बैठता जाय । कद्दू का बेल जब बढ़ता जाता है और उसका फल लटकता या जमीन पर बढ़ता जाता है तो उसकी तुलना इस पहेली में बूढ़े बंदर से की गई है।
(कुम्हड़ा / कद्दू का बेल)

☐ **पहाती–पहाती चेत चेगाउ,**
राती–राती मास खोआउ ।

◆ सुबह –सुबह याद दिलाए,
रात–रात में मांस खिलाए।
(कुकड़ा / मुर्गा)

☐ **पंडरी डोकरी, पाठ ने ओना ।**

◆ गोरी बूढ़ी, पीठ में स्तन।
(सुपा या सूप)

☐ **पंडरी कसेला ने,**
दुय रंग चो पानी ।

◆ श्वेत लोटा में दो रंगों का पानी।
(गार/अंडा)

☐ **पंडरा बोकड़ा, लेपसा कान।**
कान के धरून आन ।

◆ श्वेत रंग का बकरा, लंबी–चौड़ी कान ।
कान पकड़ कर ला ।
(मुरा या मूली)

☐ **पानी भितेरे, बाकटी कडरी ।**

◆ पानी के अंदर, टेढ़ी छुरी।
(चिंगड़ी या झींगा)

☐ **पानी भीतरे, गोबर चोता ।**

◆ पानी के अंदर, पशु के गोबर के समान।
(कचीम या कछुआ)

☐ **पाँच भाई चो, गोटकी दुआर ।**

◆ पाँच भाईयों के बीच एक आंगन,
तात्पर्य पाँच अंगुलियों के बीच में हथेली।
(पाँच अंगुलियाँ और हथेली)

☐ **पिला बेरा काचा–पतरेया, बुढ़ातो बेरा लाल,**
खिंडीक असन चाख रे बाबू, नाहले फूलेदे गाल ।

◆ बचपन में हरी, बुढ़ापे में लाल, थोड़ा सा चखना अन्यथा गाल फूल

जायेंगे ।
(मिरी / मिर्ची)

□ **पींदुन हिंड, काटा नी गड़े ।**

◆ पहन कर चल, कांटा नहीं चूभेगा।
(पनही, जूता)

□ **पीतल चो कसांडी, लोहो चो ढाकना,**
हुनचो भीतरे आसे, तीन ठान पखना ।

◆ पीतल की बटलोई, लोहे का ढक्कन,
उसके अन्दर है तीन पत्थर।
(केन्दू या तेंदू)

□ **पेटे अंडखी, मुंडे पखना**
देउआस जाले, नेयन्दे चीना ।

◆ पेट में अंगुली, सिर में पत्थर,
अगर दोगे तो स्मृति चिन्ह के रूप में ले जाउंगा।
(मुंदी या अंगुठी)

□ **पोड़सा पेटेया हाटे जाय,**
बिन दोस चो मार खाए ।

◆ फूले हुए पेट वाला बाजार जाए, बिना दोष का मार खाए ।
नए घड़े को बाजार से खरीदते समय ठोक–बजा कर देखा जाता है, इसी आशय को प्रकट किया गया है ।
(हांडी / मटकी)

□ **पोड़ालो कुकड़ी, रूख–रूख डगाए ।**

◆ भुनी हुई मुर्गी पेड़–पेड़ कूदे ।

जब लोहार कुल्हाड़ी का निर्माण करता है तो उसे गरम करके,पीट कर आग में तपा कर अथवा भून कर करता है, तब जाकर वह लकड़ी काटने के लायक बनता है। इसी निर्माण की क्रिया को पहेली के रूप में प्रदर्शित की

गई है ।
(टंगेया या कुल्हाड़ी)

□ **फरे ना फुले, तुप–तुपा भरे ।**
◆ फूले ना फले, भरपूर भरे ।
(राखड़ी / राख)

□ **बसले टेड़गा, उठले टेड़गा**
नी सांगले, दुय बड़गा ।
◆ बैठने से तिरछा, उठने से तिरछा, उत्तर न दोगे तो दो डंडा।
(झिंझरा)

□ **बाप जमींदार, बेटा मतवार ।**
◆ बाप जमींदार, बेटा शराबी।
(महुआ, टोरा)

□ **बाकटा डोकरा चो पेटे दांत ।**
◆ टेढ़े बूढ़े के पेट में दांत ।
(ईरा / हंसिया)

□ **बाडी बराहा चो, टुंई ने दामा ।**
◆ बिना पूंछ के सूकर के पिछवाड़े में डोर ।
(सूई–सूत या सूई–धागा)

□ **बिन धोउन जमाय खावसत,**
जमाय बलसत धोउन खा,
नी जानुन जमाय खादला,
फेर बलले धो आउर खा ।
◆ बिना धोए सभी खा रहे हैं,
सभी कह रहे हैं धोकर खा,
नहीं जानकर सभी ने खाया

मैं फिर कह रहा हूँ धो और खा ।
(धोखा)

□ **बीस बहिन चो, गोटकी झूड़ा ।**
♦ बीस बहनों का एक ही जूड़ा।
(लहसुन)

□ **बुड़गी डोकरी बिहाने उठे,**
घर–खोर गुलाय नाचे ।
♦ डोकरी सुबह उठती और घर–आंगन में नाचती।
(बाड़न / झाड़ू)

□ **बेटा माटी भितरे, मांय छाता धरून ठिया ।**
♦ बेटा मिट्टी के अंदर, मां छाता लेकर खड़ी ।
(कोचई / घुईंया)

□ **बेटी सुंदरी, माय चाबरी ।**
♦ बेटी सुन्दर, माँ काटने वाली।
(बेर)

□ **भीतरे मास, बाहरे हाड़ा ।**
♦ ऐसी कौन सी वस्तु है जिसके शरीर में उपर की ओर हड्डी है और अंदर की ओर मांस हो ।
(नारियल)

□ **मनुख संगे रतो बीती,**
कुकुर के दखुन लुके,
गुलाय राज बुलुन–बुलुन,
बिल भीतरे मसके ।
♦ मनुष्य के साथ रहने वाला,
कुत्ता देख छिप जाता है,

सारे जहाँ घुमने वाला,
बिल के भीतर खाता है।
(बिल्ली या बिलई)

□ **मरतो बीता चो चार ठान गोड़,**
बोहतो बीता चो गोटोक नाई,
दखतो बीता चो मुँडी नाई ।

◆ मरने वाले का चार पैर, ढोकर ले जाने वाले का एक भी नही, इसे जो देख रहा है, उसका सर नहीं।
(मेंढ़क, साँप और केकड़ा)

□ **माटी चो घोड़ा लोहो चो पान,**
चेगुन बसे, राजा चो देवान ।

◆ माटी का घोड़ा, लोहे की कान
उस पर चढ़कर बैठे, राजा का दीवान।
(चूल्हा, तवा, रोटी)

□ **माटी भीतर चो बेंदरा,**
हाड़ा ना पंजरा ।

◆ मिट्टी के अंदर का बंदर, जिसका हड्डी और न पसली ।
(गोंयचड़ा/ केंचुआ)

□ **माईं–पिला चो गोटकी बूंद ।**

◆ माँ–बेटे का एक ही बूंद अर्थात् जड़ अथवा उत्पत्ति।
(लहसून का जड़)

□ **मांय चाबरी, बेटी सुंदरी ।**

◆ माँ चाबरी अर्थात् काटने वाली और उसकी बेटी सुंदर । हाथों से जब भी बेर अथवा बेरी तोड़ने पर कांटे पहले ही चुभने लगता है। इसलिये पहेली में कहा गया है कि माँ काटने वाली और बेटी जो कि आकर्षक और सुंदर है।

(बेर का पेड़ अथवा बेरी का पौधा, झरबेरी)

□ **मुंडा माहाल चो, सात ठान बाट,**
नी जानले, खोनलो चुआं के पाट ।

◆ बड़ी हवेली के सात दरवाजे, इसका अर्थ न जानने वाला खोदे गए कुआं कोपाटे । (मुंडा माहाल का आशय बड़ी हवेली या महल जिसका अर्थ मनुष्य के सिर से है, जहाँ इसके सात छिद्र माने गए हैं, दो नाक के, दो कान के, दो आँख के और एक मुंह के, अर्थात् सात दरवाजे ।)

(सिर के सात छिद्र)

□ **राजा घरो सिकरा,**
दुनों बाटे निकरा ।

◆ राजा के घर का सांकल, दानों तरफ से खुलता है।
(नाक चों सिंगान, रेमट या सेमट)

□ **राजा घरो बटकी,**
छिउन दिले फोटकी ।

◆ राजा के घर का कटोरी, छू लेने से हाथ में फफोले पड़ जाते हैं।
(आग)

□ **राजा घरो, काबरी घोड़ी,**
पान खाए पचास कोड़ी ।

◆ राजा के घर की कबरी घोड़ी,
पत्ते खाय, हजारों।
(छतोड़ी– बांस और पत्तों से बना वर्षा से बचने का एक उपाय)

□ **राजा घरो भईंस, सींगे गारोस देये ।**

◆ राजा की भैंसी, सींग के द्वारा दूध देती है।
(सल्पी का पेड़)

□ **रूख आसे, चेर नाई,**

खेंदा आसे, पान नाईं ।

♦ पेड़ है किन्तु मूल अर्थात् जड़ नहीं, शाखाएं हैं किन्तु पत्ते नहीं।
(दीमक का बमीठा, डेंगुर)

□ **रूख आसे थुबुक–थाबक, पान हुनचो धारी,**
फुल फुटे काय सुंदर, देहें हुनचो कारी ।

♦ छोटे कद के पेड़ में धारीदार पत्ते और सुंदर फूल किन्तु उसके शरीर में काली।
(फरसा फुल / पलाश के फूल)

□ **लब–लबका लबका, लबका उपरे ढिपका**
ढिपका उपरे मिलकी, मिलकी उपरे डोंगरी
डोंगरी उपरे झारकी, झारकी भीतरे चाबरी,
सुनतो लोक मन सांगारी !

♦ (लब–लबका अर्थात् जीभ, जीभ के उपर ढिपका अर्थात् नाक, नाक के उपर मिलकी यानि आँख, मिलकी के उपर डोंगरी अर्थात् माथा, डोंगरी उपरे झारकी अर्थात् बालों का जंगल और जंगल के अंदर चाबरी का अर्थ है जूँ)

□ **लगे–लगे दुनों भाई,**
दखा–दखी नाईं ।

♦ पास–पास दो भाई, किन्तु एक दूसरे को देख नहीं पाते।
(आईंख, आँखें)

□ **लदर–बदर चिखल बाट,**
दन्तावाड़ा चो एई पाट ।

♦ कीचड़ों से सना हुआ रास्ता, दन्तेवाड़ा के इस पार अर्थात् दांतों के बाड़ के बीच तरबतर मुंह के लार से तम्बाकू।
(मुंह में लार से तरबतर तम्बाकू)

□ **लाम आसे लेंगड़ी बेंदरा नोहांय,**
चार गोड़ आसे, ढोर नोहांय,

छेंडी आसे, कुकड़ा नोहांय ।

◆ लंबी पूंछ वानर नहीं,
चार पैर पशु नहीं,
कलगी है किन्तु मुर्गा नहीं।
(टेंडका या गिरगिट)

□ **लाम लेंगड़ी, पाठ ने धारी,**
एकलो खाए, दुय थारी ।

◆ लम्बी पूंछ, पीठ में धारी
एक अकेला खाये, दो थाली।
(चिडरा मूसा या गिलहरी)

□ **लाम–लाम काकड़ी, भीतरे आसे पोल,**
जसन–जसन बरसा, हुसन–हुसन मोल ।

◆ लंबी ककड़ी किन्तु भीतरी भाग खोखलापन, ज्यों–ज्यों बरसा काल आवे, वैसे–वैसे उसका मोल बढ़ जाता है।
(डोंगी / नाव)

□ **लाम आसे, सांप नाई,**
फूल चेगे मान्तर महादेव नाई ।

◆ लम्बी है सांप नहीं, फूल चढ़ाया जाता है लेकिन महादेव नहीं।
(बेनी या चोटी)

□ **लाली गाय, दारू खाय,**
पानी छिवले, मरून जाय ।

◆ लाल रंग की गाय, लकड़ी खाय,
पानी छूने से मर जाय।
(आग)

□ **लाली बयला चो लाम सिंग,**
जों माहादेव टिंग–टिंग ।

♦ लाल बैल का लंबा सींग, जल्दी–जल्दी चले ।
(बिच्छु)

□ **लाफी जा, नाहले लगे रा, टोडरा चो ढोल बाजते रा ।**

♦ दूर जाओ या पास रहो, गले का ढोल बजते रहो।
(ठुड़का, लकड़ी की घंटी जो गाय–बैलों के गले में बांधी जाती है, लकड़ी से बनी एक पारम्परिक लोक वादय)
(ठुड़का/लकड़ी की घंटी नुमा एक वादय)

□ **लेंगड़ी धरले घुर्र करे ।**

♦ पूंछ पकड़ने पर गुर्राता है।
(जाता या चक्की)

□ **सरग लिटी पोरटी,**
घरे आसे दुआरे नाई ।

♦ आकाश में उड़ने वाली नन्हीं पक्षी, घर है किन्तु आंगन नही।
(कोसा कीड़ा, रेशम का कीड़ा)

□ **सरग नाता भाई लागे, मांय चो भाई मामा,**
गोटोक फुल असन फूटे, डारा ना पाना ।

♦ आकाश रिस्ते में भाई और मां का भाई मामा, एक फूल ऐसा विकसित हो जिसका बेल न पत्ता ।
(छाती/मशरूम)

□ **सरगपुर चो सरई राजा,**
हालुन–किंदरून घसरे ।

♦ स्वर्ग के सरई राजा जब धरती में आते हैं तो हिलते–घूमते आते हैं ।
बस्तर को साल वनों का द्वीप कहा जाता है, साल के वृक्षों में जब फूल आता है और परिपक्व हो जाता है तब वह पंखुड़ियों के कारण फिरकियां लेते हुए घूमता हुआ गिरता है ।
(सरगी फुल/साल का फूल)

☐ **सरग उपरे दुय ठान तावा,**
गोटोक सीतर, गोटोक आवा ।

◆ स्वर्ग में दो ऐसा तवा है जो एक ठंडा है तो दूसरा गर्म है।
(सूरज–चांद)

☐ **सपाय चो बड़गी ने तीन ठान गठ ।**

◆ सभी की लाठी में तीन गांठ ।
(अंडखी / अंगुली)

☐ **सात चड़ई चो सात रंग ,**
रूख ने बसले गोटकी रंग ।

◆ सात चिड़ियों के सात रंग,
वृक्ष में बैठने के बाद एक ही रंग।
(पान)

☐ **सिरिक सिपा, कूड़े लिपा ।**

◆ सरसराते हुए, दीवाल पर पोंछ दिया।
(नाक पोंछना)

☐ **सुन–सुन रे कुलु–बुटु,**
कचाड़ले नी फुटु ।

◆ सुन–सुन रे कुलु–बुटु, पटकने से भी न टूटने वाला। ऐसे फल की ओर इंगित किया गया है जिसे जमीन में पटका जाय तो भी नहीं फूटेगा।
(कोसा, कुकून)

☐ **सुखलो रूख ठाय करे,**
बुड़गा भालु हाय करे ।

◆ सूखी लकड़ी 'ठाय' करे, अर्थात् बंदूक, और जिसे गोली लगी हो वह 'हाय' शब्द के साथ उसकी मृत्यु हो जाय।
(बंदूक)

□ **हाय–हुस केबे, आधे गेले तेबे,**
अच्छा लागे केबे, जमाय ढुकले तेबे ।

◆ आह ! ओह ! कब, आधा गया तब,
अच्छा लगा कब, पूरा गया तब।

(इस पहेली में चूड़ी पहनने वाली महिला की स्थिति का वर्णन किया गया है, चूड़ी पहनाने वाली महिला जब चूड़ी पहनाती है, उस वक्त जो दर्द का अनुभव पहनने वाली महसूस करती है, उसका उल्लेख इस पहेली पर किया गया है, जब चूड़ी पहनाने वाली महिला, पहनने वाली का हाथ पकड़ती है और चूड़ी का भाव तय करती है चूड़ी पहनाते समय दर्द होता है और कलाई में जाने के बाद, जो मीठा–मीठा दर्द का एहसास होता है, उस आनंद की अनुभूति का वर्णन किया गया है, अर्थात् उत्तर है चूड़ी पहनाने और पहनने का भाव।)

□ **हुन जमक के कोन नी जानें,**
लेहरा थेबले, लेहरा आनें ।

◆ उस वस्तु को कौन नहीं जानता,
हवा थम जाए तो हवा लेकर आए ।
(धुकना या पंखा)

कथा–पहेली

(कहनी धंदा)

पहेलियों के संदर्भ में पूर्व कथन है कि भाव तथा उपयोगिता की दृष्टि से कहावतों और पहेलियों का अलग–अलग स्थान है। कहावतों में ज्ञान और भाव घनीभूत होकर आते हैं। पहेलियों में गोपनीयता अथवा गोपन की प्रवृति अधिक होती है ताकि बुद्धि कौशल के द्वारा ही उनके मर्म को जाना जा सके। पहेलियों में जितना गोपन भाव सघन हो, उतनी ही वे श्रेष्ठ मानी जाती है। जितना अधिक लोगों को चमत्कृत कर सके, उतना ही अच्छा है। पहेली व्यक्ति की चतुरता को चुनौती देने वाले प्रश्न होते हैं जिस तरह गणित के महत्व को नकारा नहीं जा सकता उसी तरह पहेलियों को भी नजर अंदाज नहीं किया जा सकता।

जिंदगी एक पहेली है, और सदैव एक पहेली रहेगी। उपर के अध्याय में बस्तर अंचल के वाचिक परम्पराओं में से कुछ छोटी–बड़ी पहेलियों को बूझा। अभी तक हमने देखा कि पहेलियाँ बड़ी होती है और उसका उत्तर कुछ शब्द या शब्दों में दिया गया, अर्थात् उत्तर कम शब्दों में। ग्रामीण अंचलों में कुछ ऐसी पहेलियाँ हैं जिनका उत्तर आज भी आसान नहीं हैं। उनका उत्तर जानने के लिए कथाओं का सहारा लेना होता है। ऐसी रहस्यमयी पहेलियाँ होती है जिनको सुलझाने के लिए माथापच्ची करनी होती है। पहेली छोटी होती है, किन्तु उसका उत्तर कथात्मक होता है। कुछ मनोरंजक, तथ्यात्मक तो कुछ ज्ञानवर्धक भी। उनकी वर्णित वस्तु को छिपा कर रखा गया होता है जो तत्काल स्पष्ट नहीं होता, इन्हें कथाओं के बिना बूझा नहीं जा सकता। ऐसी पहेलियों को कथा पहेली कहा जाता है। शब्दों या वाक्यों में पूछे गए पहेलियों का उत्तर कहानी के माध्यम से बूझा जाता है। ऐसे बूझे गए कथात्मक उत्तर में, कथाएं आपका ज्ञान भी बढ़ाती है और जिज्ञासाओं का समाधान भी करती है। कुछ पहेलियाँ ऐसी होती हैं जो मनुष्य के दिमाग को

उलझा देती हैं और मनुष्य गंभीर चुनौती मान कर एड़ी–चोटी का जोर लगा बैठता है। ग्रामीण परिवेश में पहेलियाँ कई प्रकार की होती है जैसे गीतात्मक अथवा कवितामय पहेली, कथात्मक पहेली, गणित पहेली, चित्र पहेली, ध्वनि पहेली, अनुभूति पहेली अर्थात् किसी वस्तु को छूकर पहचान करना आदि।

मनुष्य का स्वभाव होता है कि समस्या को कठिन बनाकर देखने की । किसी भी पहेली अथवा समस्या का समाधान पूरी तरह से नजरिये पर निर्भर करता है। कुछ पहेलियाँ हमारे जन–जीवन में रोज घटित होती रहती है किन्तु उसका त्वरित उत्तर देना कठिन होता है। चंचल स्वभाव के बच्चे अक्सर कुछ न कुछ प्रश्न अपने से बड़ों से सदैव करते रहते हैं, उनका स्वभाव ही होता है, जानना। उनके प्रश्न पहेली की तरह होते हैं, जिनका त्वरित उत्तर हमारे पास नहीं होता। जिज्ञासु बच्चों से आसानी से बचा भी नहीं जा सकता, उत्तर देना ही होता है। जीवन गुत्थियों को सुलझाने का ही नाम है और ये गुत्थियाँ हमारे मस्तिष्क को खुराक देता है और कठिनाई के क्षणों में कोशिश करते रहने की अदभुत क्षमता भी प्रदान करता है। आईये ऐसे ही कुछ छोटे–छोटे पहेलियों के कथात्मक उत्तर की बानगी देखें जो लोक–जीवन की कथात्मक–पहेली है।

––0––

पहेली

सरग इतरो उपरे काय काजे गेली ?

(आकाश इतना उपर क्यों गया)

बलुआत कि आधे सरग आउर आमचो धरतनी बल्ले भुंई दुनों लगे–लगे रहोत। धरतनी ले सरग इतरो लगे रली कि कोनी मनुख ठिया होउन सरग के छिउक सकते रए, मान्तर असन काय होली कि लगे रतो बीती सरग इतरो उपरे कसन गेली ? एके जानुक तो लागेदे ?

◆ ए धंदा के जानतो–समंजतो काजे गोटोक कहनी आसे – गोटोक गाँव ने गोटोक डोकरी आपलो कुड़िया ने रते रहे। डोकरी बल्ले डेंगी, पंडरी डोकरी मसागत करून आपलो जीवना करून खाए। हुताय रांदा–बाड़ा करून आपलो जीवना चलाते रहे। काहाँय कोनी हाग दिलो ने जाए नाहले आपलो कुली–भुति करून पेज–पसेया ने पेट के पोसे।

गोटोक दिने काहाँय ले मिरलो धान के दुआरे ठिया–ठिया मूसर ने

छड्डुक धरली। डोकरी चो मूसर बले खुबे लाम रहे। धान के छड़तो बेरा हुन मूसर उपरे जाउन टेकी होय। हुनचो धान छड़तो बूता छेकी होय गुनुक हुन डंडिक आड़ा–तेड़ा बले मारून दखली। मान्तर मूसर छड़तो बूता–आड़ा–तेड़ा ने नी होली। डोकरी बिरबिरा होउन बिचार करून दखली कसन ने बूता के निमड़ायेन्दे बलुन हारक फेर छड्डुक धरली। मूसर जाउन सरग ने फेर टेकी होय। डंडिक चो बूता गुलाय दिन बंयडली, मान्तर धान छड़तो बूता बाड़ली। डोकरी रिस होली आउर हुनी मूसर के उल्टा बनाउन सरग उपरे रिसे–रिस बरखाली। सरग बले डोकरी चो मार के दखुन भकेयान गेली आउर काय दखेसे कि धरतनी ले लाफी खुबे उपरे एउन पड़ली। डोकरी चो मार ने इतरो बल रली कि धरतनी ले खुबे लाफी उठुन गेली। हुन दिन ले सरग के हाते छिउक नी होय, काय काजे कि सरग उपरे गेली आउर हुन दिन ले डोकरी चो मूसर बले धान छड़तो बेरा नी टेकली। हुन दिन ले धान छड़तो बूता बले सरसरा होली ।

पहेली

गाँव चो संद ने कोलिया काय काजे भुकुआय ?

(गाँव के सरहद पर सियार क्यों चिल्लाता है ?)

गाँव चो संद ने होओ कि बाड़ी रेटे, राती बेरा कोलेया मन – हुआ..हुआ. .बलते भुकुआत। कोलेया मन चो थोतना कुकुर असन दखा देउआय। कोलेया रान भीतरे रहुआत आउर हुताय नानी–सुनी जियाद के मारून खाउन आपलो पेट पोसुआत। असन दखा गेली से कि कोलेया मन गाँव चो रेटे कुढ़ा–कुढ़ा एउन राती चिचाउआत। कोलेया मन चो भुकतो के सुनुन गाँव–पारा चो कुकुर मन बले लाफी ले भुकुन कोलेया मन के खेदतो उवाट करूआत। कुकुर मन चो भुकतो आरो के सुनुन कोलेया मन बले राने बोहड्डुआत। असन आजि बले होउआय। मान्तर कोलेया काय काजे हुआ...हुआ बलुन भुकुआत, ए गोटोक धंदा आय ।

◆ खुबे दिन चो गोठ आय, कोनी जुग ने कोलेया मन गाँव–पारा ने मनुख मन संगे रहोत। असने, कोलेया मन के गाँव–पारा चो लोक मन बले मया करोत। खावतो–पिवतो कन्ताल बले नी रली। रान भीतरे घाम, चमास, सीत बेरा चो असन डंड बले नी रहे। घरे रतो काजे काय सुंदर ठान बले मिरे।

आउर दूसर बाटे कुकुर मन के असन सुख–रान भीतरे काहाँ? खावतो–पिवतो चिपा, घाम–चमास आउर सीत बेरा उल्टा डंड। रान भीतरे खिडिंक आदक जियाद रली हुन बले सरली। गोटोक दिने असने कोलेया मन के मिरतो सुख के कुकुर मांदी सुनला। कुकुरमन मने मन बिचार करला कि असने सुख आमके मिरती जाले कितरो नंगत होती। मान्तर असन कसन ने होउक सके? असन तेबे होउक सके, जिदलदांय कुकुर मन रान के छाँडुन, गाँव–पारा ने डेरा पड़ोत। मान्तर ए गोठ कोलेया मन के मने इले तो ? आउर ए गोठ कोलेया मन लगे अमरायेदे कोन ?

होली! जमाय रान चो कुकुर मन बसका बसला। काना–खोड़ेया,

सियान, ठोटा–माटा जमाय कुकुर मन अमरला। बसका मुर होवतो पूरे गोटोक के मुखिया बनाला। गोटोक सियान कुकुर चो बल्लो गोठ जमाय के मने इली। गोठ ये होली, कुकुर मांदी बाटले गोटोक सियान कुकुर, सहर, गाँव–पारा, चो कोलेया मन लगे जाओ आउर हुता आमचो गोठ के अमराओ। हुता जाउन हात–पाँय जोडुन बिनती करोत कि आमचो कुकुर मांदी चो जुआन कुकुर मन चो बिहाव करतोर उमर होलीसे, असन बिहाव करतो बरन चो कुकुर मन अबगो पांच कोड़ी ले आगर आसोत। इतरो कुकुर मन चो मांडो, बिहाव–बर चो नेग, नाचा–डगा, भोज–भात आमी रान भीतरे करूक नी संकू आउर एचो काजे बड़े ठान लागेदे।

असने गोटोक बुड़गा कुकुर के सियान बनाउन गाँव ने पठाला, बुड़गा कुकुर बल्ले खुबे चलाक रये। हुता जाउन कोलेया मन के सरपटा पाँय पडुन कुकुर मांदी चो गोठ के सांगलो आउर बल्लो कि बिहा–बर काजे जितरो बेरा लागेदे हुतरो दिन आपन मन रान ने राहा से, आउर जसन बिहा सरली बल्ले आमी रान ने फिरून जाउन्दे आउर आपन मन फेर गाँव ने बोहडुन इयासे । कोलेया मन बले गोठ के सुनुन बिचार करून बल्ला कि गोठ तो नंगत आय। दुय चार दिन रान–बन ने बुलुन इलो ने आमके बले अच्छाय लागेदे ।

कुकुर मांदी जमाय गाँव–पारा ने डेरा धरला आउर कोलेया मन रान ने डेरा पड़ला। कोलेया मांदी काय मंजा रान ने बुलुन–बुलुन दूसर जियाद के डगराउन–डगराउन मारून खाओत, आउर दूसर बाटे कुकुर मन बले आपलो बाटे मंजा मारोत। असने दिन निकरते गेली। बिहाव होली ना बर होली। कुकुर मांदी चो बिहाव–बर तो निस रली । हुन मन के तो गाँव–पारा आउर सहर ने मनुख मन संगे डेरा पड़तोर रली। कुकुर मन के कोलेया मन चो असन खावतो–पिवतो, सुख–सुबिस्ता जमाय मिरली। सुख आउर मंजा के छाडुन कुकुर मन के बोहड़तो मन नी होली।

एबाटे कोलेया मन बिचार करूक धरला कि कुकुर मांदी चो बिहाव–बर सरली होती, हुन मन बोहडुन कसन नी इला? दिन बाड़ते जायेसे, गोठ–बात होली, ना कोनी खबर इली। राती बेरा गाँव–पारा चो संद ने कोलेया मन जुहुन पुछुक धरला – हुआ...हुआ.. हुआ बलुन । हुआ.हुआ बल्लो ने, बिहाव–बर होली कि नी होली से बलुन !

एबाटे कुकुर मन जुहुन भुकुक धरला..भों..भों.भों..भो । बलतोर होली होयेदे..होयेदे ।

कुकुर मन चो भों..भों भुकतो के सुनुन कोलेया मन रान ने बोहड़ला । असने महेना दुयक गेलो पाछे फेर कोलेया मन गाँव–पारा चो संद ने जाउन पुछुक धरला हुआ..हुआ.हुआ, कुकुरमन आघे चो असन भुकुक धरला– होयेदे. .होयेदे बलुन। असने हुन दिन ले आजि बले कोलेया मन, गाँव–पारा रेटे एउन पुछसत कि, होली कि नाईं आउर कुकुरमन बाटले सांगतोर आजि बले चलेसे कि होयेदे..होयेदे बलुन । हुनी काजे आजि बले कोलेया मन हुआ..हुआ करूआत ।

––0––

पहेली

कुकुर बिलई चो बयरी कसन ने होली ?

(कुत्ते, बिल्ली का बैर कैसे हुआ ?)

आमचो गाँव–पारा चो गोठ आय कि बिलई के दखले कुकुर खेदुन नेउआय, आउर बिलई कुकुर के दखले छू गदबद। बिलई आजि बले ठान–मवका दखुन छानी उपरे नाहले रूख उपरे चेगुन आपलो जीव बचायेसे। नाहले कुकुर अमरालो ने बिलई चो बाचतोर महासंदे आय। आमी कोन जुग ले कुकुर–बिलई चो बयरी के दखते एउंसे । धंदा आय कि कुकुर–बिलई चो बयरी कसन ने होली ?

♦ आघे जुग ने कुकुर–बिलई चो हुतरो बयरी नी रली। दुनों संगवारी रला। संगे–संगे गोटकी लगे रहोत, खेलोत–खाओत। कुकुर खिंडिंक भकवा बरन चो आउर बिलई जुगे करून चतुर–चलाक रये। जितरो बिलई चलाक रये, हुतरो कुकुर बिलई के मान देये। हुनी काजे दुनो मया करून संगे रहोत। असने दुनों चो जीवना हरीक–उदीम ने चले।

गोटोक दिने कुकुर बिलई के बल्लो – "मांय लोक मंय सुनलेसें तुमी खीर बल्लो ने गोरोस–भात अच्छाय रांदुक जानास ?"

बिलई बल्ली – "तुमी सत्ते सुनलासाहास ! मंय गोरोस–भात चो संगे–संगे आउर बले कएक जमक रांदुक जानें, मान्तर गोरोस भात चो सुआद अलगे आय । कएक झान मोचो रांदलो गोरोस भात के खाउन अंडखी चाटते रहुआत।"

"असन आय ? जाले मांय लोक, मंय काय नसालेसें ? मके बले दिनक खोआउन दियास कितरो सुआद आय जाले, मंय बले दखेन्दे।"

बिलई बल्ली –"मंय तो कोनी दिने बले खोआउन देयेन्दे मान्तर जाग–जमक लागेदे।"

"काय जमक लागेदे, मांय लोक मंय आनुन देयेन्दे, काय–काय जमक लागेदे सांगा ?"

बिलई बल्ली– "असन आय जाले, जाहां धरून इया। दुय पयली भंईस गोरोस लागेदे, अंजरायक सपुर बादसा–भोग चाउर, भेलाएक गुर आउर उपर ले चार–चिरबिजी, काजू–किसमिस बलतो जमक हुन बले लागेदे ।"

कुकुर केबय खीर खाउन रलो ने तो? कुकुर के खातोर रली खीर। बिलई चो बल्लो असन जमाय जमक घेनुन रूंढाउन आनुन दिलो। बिलई हरीक मन ने गोरोस के चुला ने उखरतो काजे चेगाउन दिली, अंजरायक चाउर के काय निमान सफा करून, धोउन गोरोस ने पकाउन दिली। पाछे फेर भेलायेक गुर, चार–चिरबिजी, काजू–किसमिस के पकाउन उखराउक धरली। कुकुर चुला लगे चे बसुन जमाय के दखते रये। गोरोस–भात खिंडिक चुड्डुक धरतो के जमाय बाटे हुनचो बासना उड्डुक धरली। बासना के डंडिक थामुक नी सकलो कुकुर, आउर टोण्डे पानी पजरूक धरली। हुन घन–घन आपलो ओंठी के जीभ ले चाटे। केबे खाउक मिरो..केबे खाउक मिरो बलुन ।

कुकुर बल्लो–"आले मांय लोक चुड़ली जाले खिंडिंक माहा बटकी ने निकराउन दियास, गुर चो सुआद लागली कि नाईं चाखुन दखेंन्दे। चाउर चुड़ली कि नाईं, कसन रांदा होलीसे जाले? "

बिलई बलेसे – "हात रे बयहा..इतरो तपलो गोरोस–भात के कसन चाखसे, तुचो टोण्ड–जीभ जमाय पोडुन जायेदे ।"

"आले मांय लोक ! तुमी गोटोक बूता करा ! खीर के थारी ने निकराउन दियास। मंय तरई ले आंग धोउन तड़ाक नाय ले एयेन्दे, मोचो एओत ले

सितरून रहेदे। अच्छा होयेदे कसन ?'' बलते तुरते परालो।

''जाहा.जाहा. तुमचो एओत ले सितरून रहेदे ।''

कुकुर आपन बाटे गेलो। बिलई खीर के थारी ने सितराउन दिली। खीर चो मंग...मंग...मंग बासना लेहरा ने पोंहरूक धरली। बासना नाक के अमरतोके बिलई चो मन ने पाप उपजली। हुन बिचारूक धरली कि कुकुर चो एउ–एउ मंय खीर के चमकाउन देयेन्दे। कुकुर एउन पूछले, काईं बले नीस करून सांगुन देयेन्दे। मान्तर.. असन करलो ने कुकुर चो संग छल करलो असन आय...! असन करतोर अच्छा नोहांय। मान्तर चाखतो काजे काय होली गुनुक? असन मने–मने बिचारून बिलई खिडिंक असन निकराउन चाखुन दखली। टोण्डे खीर काय पड़ली, हुनचो सुआद आउर मंजा मिरली। फेर काहाँ चो कुकुर.. कुकुर झपके नी अमरो बलुन धड़ाधड़ गोरोस–भात के चमकाउन दिली। खाउन टोण्ड के पोछुन रहेन्दे बलते रये आउर कुकुर चो एतोर होली। कुकुर पूछेसे – ''आले मांय लोक गोरोस–भात सितरली जाले झपके दियास, आंग धोउन अमरले ।''

बिलई कांद–कांद असन थोतना के उतराउन बलेसे – ''काय के सांगेन्दे भाई! तुमी हेंव गेलास, एबाटे गोरोस–भात सितरून रये। मंय तुमचो बाट दखते रहें। काहाँ ले आय जाले तसेयानासी गोहड़ायक मुसा मन भिड़ला जाले, तुमके दखतो काजे खोर ने निकरून रहें। मोचो एउ–एउ तो जमाय के सारून दिला, मोचो भितरे एतो के दखुन लिलिबांडा पराला।

बिलई चो गोठ के सुनुन, कुकुर के बिसवास नी होली। हुन बल्लो – मुसा के दखुन तुमी काय करते रलास ? गोटोक–गोटोक के खेदुन नेतास आउर गेबड़ी के पिचकतास जाले.. गोटोक चारेक माहा मारून रतास जाले? तेबे तो मंय पतेयाते ? मके तो लागेसे. ये गोरोस भात के कोनी आउर खादलो बे .!

इतरो बलतोर होली आउर कुकुर चो नंजर बिलई चो टोण्डे पड़ली। कुकुर काय दखेसे कि गोरोस संगे चो भात सकड़ी बिलई चो मेंछा ने लटकली से। कुकुर के समंजतो के बेर नी लागली। खीर के कोन खादलो बलते !

''खीर के कोन खादलो, मंय समंजले..'' रीस काजे काजे कुकुर चो आईंख–कान जमाय पाकलो मांडोबांगा असन रिगरिगा होली। '' तुके तो बिलई. मंय जिवता नी छांडे, आजि तुचो भाजा मंय बनायेन्दे '' – बलुन बिलई कुकुर के हबकुन निली।

बिलई काय करती, आपलो जीव बचातो काजे लगे चो रूख उपरे चेगुन

दिली। बिलई चो जीव तो बाचली, मान्तर कुकुर आउर बिलई चो बयरी हुन दिन ले धरून आजि बले आसे ।

——0——

पहेली

लाजकुरिन के छिवले, लोहुन जातोर

(लाजवंती छूने से क्यों मुरझा जाती है ?)

बलुआत कि बायले चो सबले बड़े गाहना हुनचो लाज आय बलुन। लाज, कोनी बले बायले चो सबले बड़े गुन आय। असने आमचो गाँव–पारा, बाड़ी ने नाहले नंदी–तरई जातो बाटे गोटोक काटा बीती बुटा अंकुरून रहुआय, जेके खिडिंक पाँय पड़ली नाहले छिउन दिले हुनबले लाज पड़ुआय। छिंवले लोहुन जाउआय। हुनके लाजकुरिन बलुआत। धंदा ए आय कि बुटा के छिंवले हुन काय काजे लोहुन जाउआय ?

◆ एचो काज गोटोक कहनी सुनुक मिरूआय कि कोनी देस ने गोटोक राजा रलो। हुनचो घरे कोनी बेटा नी जनमला, अबगो गोटोक बेटी रली। राजा चो बेटी बले दीरीघ सुन्दर रये। राजा हुनके खुबे मया करे। पिला बेरा ले राजा आपलो बेटी चो दखा–राखा, हुनचो पढ़ई–लिखई, पारद खेलतो, लड़ई विद्या असन कयेक बानी चो विद्या सिखातो उवाट करलो आउर सिखालो बले। राजकुमारी चो नाव रये– लाजकुरिन।

गोटोक दिने लाजकुरिन आपलो संगवारी संगे रान ने पारद खेलतो काजे निकरली। लाफी गेलो पाछे, गोटोक जियाद दखा दिली। लाजकुरिन हुन जियाद के पाट–पाट रान भितरे लाफी खेदुन निली। हुनचो संगवारी अमराउक नी सकुन, पाटकुति थेबली। पाट–पाट खेदुन निलो पाछे बले लाजकुरिन, जियाद के अमराउक नी सकली, मान्तर काय दखेसे कि रान भीतरे काहाँय ले गोटोक मनुख घोड़ा ने बसुन पुरे ले एयेसे। हुनचो पिंदा–ओड़ा चो अनसर ने कोनी राजकुमार ले आगर दखा देये। दखलो ने बले काय निमान सुंदर। राजकुमार लाजकुरिन के दखुन मोहनी लगालो असन होवलो। हुनके दखुन भकेयाउन गेलो। लाजकुरिन बले लगे जाउन लाज काजे गोटोक पद पुछुक नी सकली । दुनों एक दूसर के दखा–दखी होला मान्तर गोठ–बात काईं नी होली। डंडिक रहुन, दुनों आपन–आपन बाटे जाते गेला।

दखलो दांय ले राजकुमार चो जीव कलबडाहा होउन जाए। जीव तो लाजकुरिन बाटे लागुन रये। हुन लाजकुरिन के मया करूक धरलो, हुनचो संगे बिहा करतो मने होली, बलुंबे हुनके मनेयाउक धरलो। बोहड़तो मन नी रली मान्तर दईब चो खेल के कोन सके। मुरमुरा होउन बोहड़ुक धरलो। बोहड़तो बेरा हुनचो भेट गोटोक बयरागी संगे होली। बयरागी राजकुमार के दखुन पुछलो– राजकुमार तुचो थोतना उतरलो असन दखा देयेसे, काय काजे मुरमुरा होलिसिस ?

राजकुमार राने पारद गेलो बेरा चो जमाय कहनी के सांगलो आउर बल्लो कि – हुनचो ले आगर ए संवसार ने कोनी सुंदर लेकी निहाँय, हुनचो संगे बिहाव करतो मन होली. मंय हुनचो संगे गोठेयाएन्दे बलते रहें, मान्तर हुन मोचो संगे गोटोक पद नी गोठियाली...।

"बयरागी, राजकुमार के पुछलो –"तुचो बिहाव होलीसे कि नाईं ?"

"बिहाव तो होलीसे बयरागी बाबा।"– राजकुमार बल्लो ।

"असन आय जाले तुके लाजकुरिन संगे बिहाव नी करलो ने अच्छा आय। नाहले तुचो जीवना ने अच्छा नी होय। काईं ना काईं अडरा हायेदे।" बयरागी चो सांगलो गोठ राजकुमार के अच्छा नी लागली आउर मुरमुरा होउन आपलो राज ने बोहड़लो। बोहड़लो बेरा ले राजकुमार चो मन हुनी बाटे चोबीस घंटा लागुन रये।

असने कितरो दिन पाछे आय जाले राजकुमार चो बाप बीता मरी होवलो। राजकुमार के राजा बनाला। राजकुमार, राजा बनतो के फेर लाजकुरिन चो बाप लगे लाजकुरिन संगे, बिहा करतो काजे खबर पठालो। मान्तर लाजकुरिन, राजा चो बिहा आघे होलीसे बलुन जानली। हुन बिहा नी होंय बलुन दिली। राजा आपलो सेना के पठाउन लाजकुरिन के बरपेला धरून आनतो काजे हुकुम दिलो। राजा चो सेना लाजकुरिन के बांदुन राजमहल ने आनला।

लाजकुरिन बल्ली – "जेचो आघे बिहा होलीसे, आउर आघत ले गोटोक बायले आसे, हुनचो संगे मंय कसन बिहा होयेन्दे? मंय तुमचो संगे बिहा नी होंय।" राजा आउर लाजकुरिन संगे जिदलदाँय गोठ–बात, झिकाटाना होते रये, हुदलयदाँय राजा चो बिहाता बायले हुता अमरली। हुन लाजकुरिन संगे झगड़ा लागुक मुराली। हुन नी जानते रये कि हुनके बरपेला धरून आनलासे बलुन। हुन खुबे खीजली बल्ली– "तुय मोचो सउत बनतो

काजे खोजसीस ?''

लाजकुरिन अचिरित होउन बल्ली – ''मंय..? मंय ?''

राजा चो रानी अंडखी ने ढेगलुन बल्ली – ''हव.. तुय ..तुय.। अंडखी ने छिवते खन लाजकुरिन लाज पाउन गेली आउर हुनचो जीव के खुबे थाहा–थाहा लागली । इतरो फंद गोठेयाउन केबय हुनचो इजित उपरे कोनी अंडखी नी उठाउन रला। खुबे खिसी लागतो के लाजकुरिन चो ठिया लगे रलो ठान ने भुंई फाटुन गेली आउर लाजकुरिन धरतनी भीतरे जाउन पड़ली । राजा के बले खुबे खीसी लागली । हुन दिन ले राजा बले राज–पाट के छाडुंन दिलो। जोन लगे लाजकुरिन धरतनी ने जाउन पड़ली हुन लगे लाजकुरिन चो सुरता ने राजा गोटोक मठ बनाउन दिलो। राजा हुन मठ लगे बसुन लाजकुरिन के सुरता करून–करून मठ संगे गोठेयाय। गोटोक दिने राजा काय दखेसे कि मठ लगे गोटोक लाहा असन गोटोक बुटा अंकरली से आउर हुन बुटा लेहरा पाउन झुमेसे। राजा हुनके दखुन खुबे हरीक मन ने हुनचो लगे गेलो। हुनके दखुन लाजकुरिन चो सुरता इली। राजा हुनके अंडखी ने छिउन दखलो.. छिंवते खन लाजकुरिन बुटा चो पाना, खेंदी लोहुन गेली । राजा दखुन भकेयाउन गेलो । राजा के अच्छा नी लागली। हारक फेर राजा के गेलो दिन सुरता पड़ली.. हुन दिन ले राजा बुटा चो नाव लाजकुरिन संगालो आउर केबय हुनके नी छिंवलो। हुन जाने कि छिंवले लाजकुरिन लोंहुन जाउआय। हुनचो लाजकुरिन हुनचो केबय नी होली मान्तर हुन दिन ले राजा मठ चो कठा अंकरलो हुन लाजकुरिन बुटा के खुबे मया करूक धरलो। हुनके असन लागे कि हुनचो लाजकुरिन हुनचो लगे आसे।

——0——

पहेली

गादुर उल्टा काय काजे लटकुआय ?

(चमगादड़ उल्टा क्यों लटकता है ?)

गादुर गोटोक असन चड़ई आय कि हुनके उजर अच्छा नी लागे। बड़े रूख मन चो खेंदा मन ने दिन मंझन बेरा उल्टा लटकुन रहुआत आउर राति बेरा उड़ुन पाक–फर खाउन जीउआत। गादुर चो सरग ने उड़तो लागुन हुनके

चड़ई बलुआंव, मान्तर हुन छेरी–बोकड़ी असन आपलो पिला मन के गोरोस बले खोआउ सके। हुनी काजे एके पसु–जनावर बले बलुक सकुं। दिन–मंझन बेरा उल्टा लटकुन सोवतो बीती बले गोटोक धंदा आय, इया जानूं कि रूख उपरे उल्टा काय काजे लटकुन रहुआय ?

◆ हारक काय होली जाले पशु–जनावर मांदी आउर चड़ई–चिरगुन मन चो भारी लड़ई–झगड़ा होली। गोटोक बाटे जमाय पसु–जनावर आउर दूसर बाटे जमाय चड़ई–चिरगुन। भारी लड़ई होली। लड़ई कएक दिन चलली। ए लड़ई ने कएक पसु–जनावर मन मरला, दूसर बाटे चड़ई मन बले मरला। दुनों बाटे खुबे मारा–मारी होला। लड़ई चो मुर बेरा गादुर मन चड़ई मांदी ने भिड़ला आउर होतोर बले रली काय काजे बल्ले गादुर चड़ई असन उड़ुक सकोत। गोटोक दिने चड़ई मांदी हारूक धरला। हुन मन के लागली कि अदांय जुगे दिन लड़ई नी चलुक सके।

गादुर मन के लागली कि चड़ई मन पुरे जाउन, हारदे बलुन। गादुर मन पसु मांदी बाटे भिड़ला। पसु मांदी ने जाउन बल्ला– "आमि नी जानुन चड़ई मांदी ने रहुन तुमचो संगे लड़ई करलुं। आमि तो तुमचो पसु मांदी चो लोक आंव। आमि बले तुमचय असन आपलो पिला मन के ओना चो लागुन गारोस खोआउक सकूं। पसु मांदी असन आमचो टोण्डे दांत बले आसे। आमचो बिचार आय कि अदांय आमि तुमचो बाट ले लड़ुन्दे। भोरसा करून पसु मांदी ने मिसाला। लड़ई फेर होली, अदांय गादुर मन पसु मांदी बाट ले लड़ला। लड़ई चलते गेली। जिदलदांय पसु मांदी हारूक धरला, आउर चड़ई मांदी जितुक धरला। गादुर मन लड़ई के छांडुन हारक फेर चड़ई मांदी बाटे जाउन भिड़ला।

चड़ई मांदी ने जाउन बल्ला– आले महाप्ररभु आमचो ले गल्ती होली – आमि काईं नी जानुन पसु मांदी बाट ले तुमचो संगे लड़लु। आमके सिकाउन हुन मन आमके बरपेला लड़ाला। जिदलदाँय आमके जान पड़ली कि आमचो लड़तो बीती चड़ई मांदी काजे अच्छा नोहांय बलुन, आमि पसु मांदी के छांडुन एउंसे। आमके माफी दियास, आमि पिला लोक मन आंव। तुमि माफी नी दिले आउर कोन देयेदे। गादुर मन चो कांदा–बोबा के सुनुन फेर गादुर मन के चड़ई मांदी ने मिसाउन लड़ई बाटे पठाला। लड़ई चो फेर मुर होली, कित दिन आय जाले चलते गेली। दुय मांदी चो लड़ई होओ कि काचोय लड़ई होओ, गोटोक मांदी चो जिततोर आउर गोटोक मांदी चो हारतोर लागलीसे।

रूद्र नारायण पाणिग्राही

जन्म तिथि : 15 जुलाई 1963, बस्तर (छ.ग.)

प्रकाशन : विभिन्न राष्ट्रीय पत्र पत्रिकाओं में आलेख, कविता, कहानी, व्यंग्य, लघुकथा आदि प्रकाशित, 'गोंचा पर्व की रथ यात्रा' (बस्तर के ऐतिहासिक गोंचा पर्व की रथयात्रा पर आधारित पुस्तक), ''एक महाराजा मेरी नजर में...'' (यश पब्लिकेशंस, नई दिल्ली से प्रकाशित), 'चिड़खा' (बस्तर की जनभाषा हल्बी, भतरी, गोंडी, दोरली कविता संग्रह, का प्रकाशन), 'ढेलामारू' (हल्बी की हास्य-व्यंग्य रचनाएं), 'गदेया' बस्तर के लोकोक्ति, मुहावरे, कहावतें (बस्तर अंचल के वाचिक परम्पराओं का संकलन), हल्बी तथा भतरी में बाल साहित्य का अनुवाद, (हिन्दी से हल्बी, भतरी में, बाल साहित्य का एक दर्जन से अधिक अनुवाद, नेशनल बुक ट्रस्ट नई दिल्ली से प्रकाशित), हल्बी बाल साहित्य का प्रकाशन, संजय प्रकाशन भोपाल द्वारा।

प्रकाशनाधीन : 'हल्बी की आँचलिक लोक कथाएँ', (बस्तर के आंचलिक लोक कथाओं का संग्रह), 'हल्बी ग्रामर व शब्दकोष', ''सातधार'', (बस्तर के पारम्परिक लोक-गीतों का संग्रह), ''बस्तर के लोक देवी-देवता'', ''बस्तर दशहरा'', (विश्व प्रसिद्ध दशहरा महापर्व की सम्पूर्ण विधि-विधान की जानकारी), ''बस्तर की लोक मान्यताएं'', (बस्तर की लोक मान्यताएं व लोक विश्वास) ''बस्तर की पारम्परिक लोक कथाएं''।

रंगमंच : 30 वर्षों से हिन्दी तथा हल्बी, भतरी नाटकों का लेखन, निर्देशन, व अभिनय। नुक्कड़ नाटकों का लेखन, निर्देशन, अभिनय।

आकाशवाणी : 1978 से आज पर्यन्त हल्बी नाटकों का लेखन व प्रसारण, हल्बी नाटकों में भागीदारी।, आलेख, वार्ता, रूपक, हल्बी लोक कथा, कहानी, व्यंग्य, कविता का लेखन व प्रसारण।

दूरदर्शन : 'भूमकाल' फीचर फिल्म भोपाल दूरदर्शन से प्रसारित (अभिनय) तथा रायपुर और जगदलपुर दूरदर्शन से प्रसारित लगभग 15 टेलीफिल्मों में अभिनय।

सम्मान : अखिल भारतीय नाट्य प्रतियोगिताओं में श्रेष्ठ अभिनय के लिये 6 बार पुरस्कृत। 'यात्री' सांस्कृतिक संस्था द्वारा रंगकर्म के क्षेत्र में विशेष योगदान हेतु। 'अभियान' सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था द्वारा रंगमंच के क्षेत्र में विशेष योगदान हेतु। लोक चित्र कला के लिए अखिल भारतीय प्रतियोगिता (कटक ओड़िसा) में प्रथम पुरस्कार। ''कला श्री अलंकरण 2015'' भारतीय दलित साहित्य अकादमी छ.ग. द्वारा कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रयास के लिए मानद् उपाधि। ''सूत्र लोक बोली सम्मान 2016'' ठाकुर पूरन सिंह स्मृति लोक बोली सम्मान 2016 'सूत्र' जगदलपुर छ.ग. द्वारा सम्मानित। ''राष्ट्रीय समाज रत्न पुरस्कार 2016'' जिव्हाला बहुउद्देशिय संस्था, नाशिक मुम्बई महाराष्ट्र द्वारा सम्मानित। (27 फरवरी 2017) ''डॉ. अब्दुल कलाम शिक्षा रत्न अवार्ड'' 2017 भारतीय दलित साहित्य अकादमी छ.ग. के द्वारा सम्मानित।

सम्प्रति : पशुधन विकास विभाग में सहायक पशु चिकित्सा क्षेत्र अधिकारी के पद पर कार्यरत।

सम्पर्क : भैरमदेव वार्ड 04, डोंगाघाट रोड, जगदलपुर, जिला बस्तर छ.ग. 494001
मोबाइल - 94252 61457, 097523 88123
Email : rudranarayanpanigrahi@gmail.com